सचित्र

जैन पाठावली

(हिन्दी लिपि)

पुस्तक - १ : श्रेणी १ थी ४ : धार्मिक अभ्यासक्रम

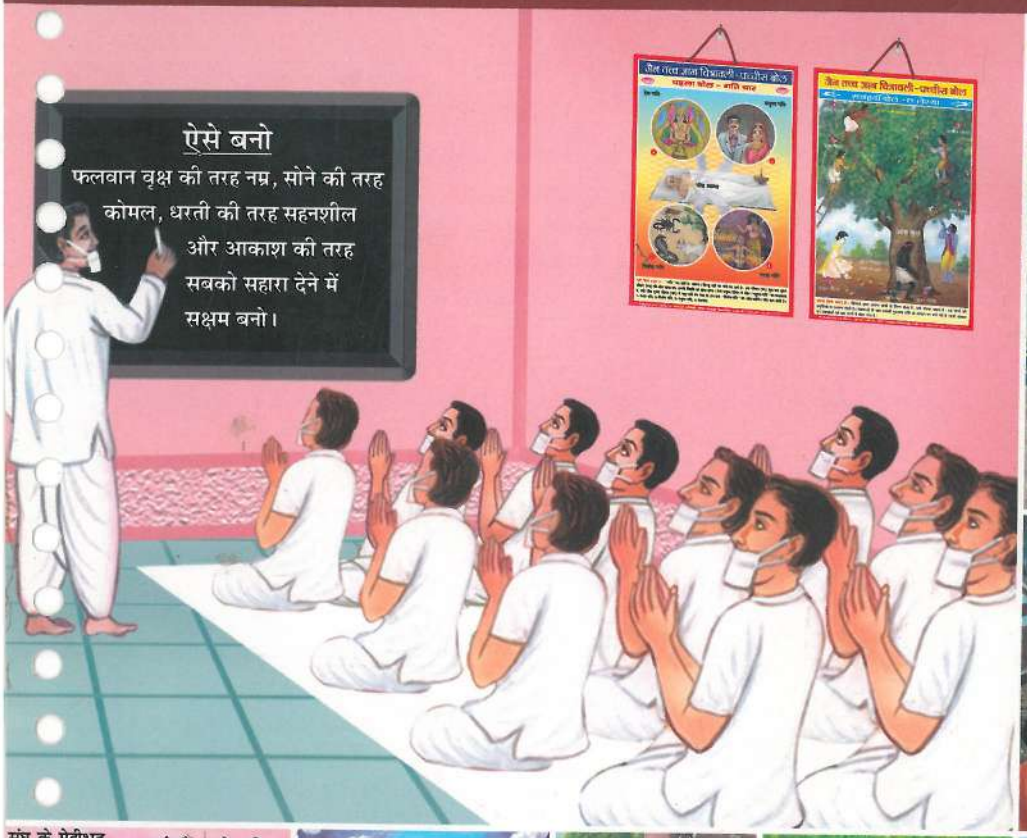

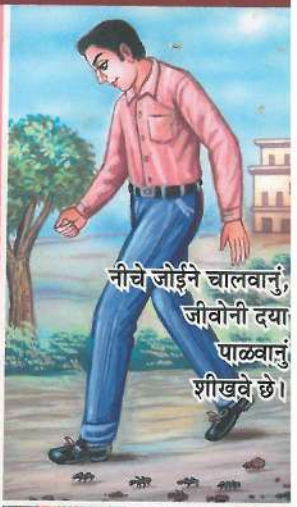

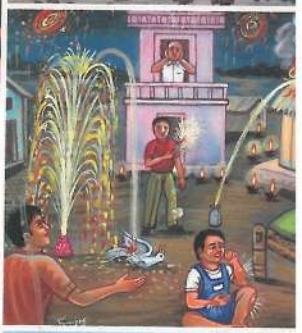

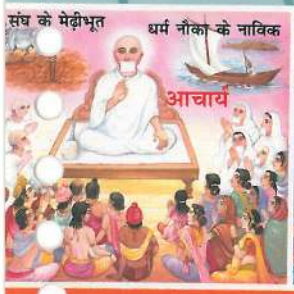

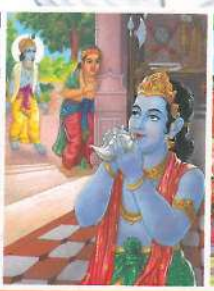

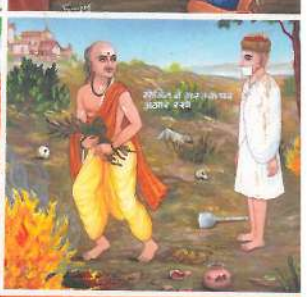

प्रकाशक : श्री बृहद् मुंबई वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ संचालित धार्मिक शिक्षण बोर्ड
542, जगन्नाथ शंकर शेठ रोड, चीराबजार, त्रीजे माळे, दशाश्रीमाळी कार्यालयनी उपर, मुंबई-400 002
फोन नं. : 22918788, 22018629

जैनशाळा अे जिनशासननुं हृदय छे

मारी धर्म प्रतिज्ञा

सिद्धक्षेत्र अे मारो देश छे। अरिहंत भगवान अने सिद्ध भगवान मारा देव छे । पांच महाव्रतना पालक साधु-साध्वीजी मारा गुरु छे। अरिहंत भगवाननी आज्ञा रूप मारो जैन धर्म छे।

हुं मारा माता पिता तथा वडिलो प्रत्ये सदा विनयी रहीश। हुं नियमित पू. साधु-साध्वीजीनां दर्शन करीश। नवकारशी तप करीश। मारी रगेरग मां जैन धर्म नी खूमारी रहेशे। सर्व जीवो प्रत्ये मैत्री भाव राखीश।

संसार छोडवा जेवो छे। संयम लेवा जेवो छे। मोक्ष मेळववा जेवो छे। आ मारो मुद्रालेख छे। हुं मारा धर्मने खूब चाहुं छुं। तेना समृद्ध अने वैविध्यपूर्ण वारसानो मने गर्व छे।

My Religious Oath

Siddh kshetra is my right native place. Arihant is my God. Followers of five great vows (Paanch Mahaavrat) are my Guru. My Jain religion is as per Arihant god's order & permission.

I will be always obedient towards my parents and elders. I will regularly go for Guru darshan. I will do Navkaarsi. My each and every drop of blood will be full of honour and respect towards Jain religion.

This is my Principle (Mudralekh). I love and respect my religion very much. I will have friendliness towards everybody. I am proud of its rich herritage and variegate. World (Sansar) is worth leaving, Penance (Sāyam) is worth achieving and Salvation (Moksh) is worth gaining.

श्रुत सहयोगी

भव्य जैनशासन जयवंतु रहो, दिव्य जैनशासननो जयजयकार थाओ।
ज्ञान अे चक्षु छे माटे ज, पढमं णाणं तओ दया।।

अमारा पूज्य पिताश्री स्व. प्रभुदास लीलाधर शेठना निर्दिष्ट मार्गथी जीवन धर्म संस्कारोथी नन्दनवन समुं छे। आपना हृदयनी मानवता, बेरोजगारने पगभर करवानी भावना, गुप्तदान, सरळता, प्रामाणिकता, अने उदारता जेवा अनेक सद्गुणोनी सुवास अमारा हृदयने सुगंधित करे छे।

हस्ते—आपना परिवारजन—गंगा स्वरूप–वसुमति प्रभुदास शेठ
नलिन–लीआ, अरुण–पूर्णिमा, धीरेन–लीना, कल्पना–नरेन

सचित्र

।। नमो नाणस्स ।।
।। पढमं नाणं तओ दया ।।

जैन पाठावली

Illustrated

JAIN PAATHAAVALI

Part-I

(हिन्दी लिपि – Hindi Lipi)

पुस्तक 1

श्रेणी : 1 थी 4 : धार्मिक अभ्यासक्रम		
पहेली श्रेणी	:	पाना 7 थी 30
बीजी श्रेणी	:	पाना 31 थी 58
त्रीजी श्रेणी	:	पाना 59 थी 85
चोथी श्रेणी	:	पाना 86 थी 132

प्रकाशक :

श्री बृहद् मुंबई वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ

संचालित **धार्मिक शिक्षण बोर्ड**

542, जगन्नाथ शंकर शेठ रोड, चीराबजार, त्रीजे माळे, दशाश्रीमाळी कार्यालयनी उपर,
मुंबई-400 002. फोन नं. : 22918788, 22018629

प्रकाशकीय

अनादिकाळनुं परिभ्रमण टाळवानो अेकमात्र उपाय छे कुदेव, कुगुरु अने कुधर्मनी श्रद्धारूप मिथ्यात्वनो त्याग। ते माटे मनुष्यभवमां तीर्थंकरे बतावेल मोक्षमार्गमां अतूट श्रद्धा राखवी, **लोकस्वरूप, कर्मस्वरूप, आत्मस्वरूपनुं भान** अने **ज्ञान** करवुं।

आवी श्रद्धा सुद्रढ करवा **ता. 30-7-1961** ना रोज **श्री चीमनलाल चकुभाई शाह** द्वारा **श्री बृहद् मुम्बई व. स्था. जैन महासंघनी** स्थापना करीने समस्त मुम्बईना स्थानकवासीने अेक छत्र नीचे लाववामां आव्या।

श्री महासंघनी आगेवानी नीचे **धार्मिक शिक्षण बोर्डनी** स्थापना करी **पू. संतबालजी म. सा.** ना अविस्मरणीय सहकारथी **श्रेणी 1 थी 7 नी जैन पाठावली** तैयार करी। आ धार्मिक शिक्षण बोर्डना वर्तमाने उद्देशो आ प्रमाणे छे। (1) मुम्बईनी जैनशाळा तथा महिलामंडळनी **धार्मिक परीक्षानुं आयोजन**। (2) परीक्षा माटे जरूरी **पुस्तको तैयार करवा**। (3) **शिक्षकोना संमेलनो** योजी तेमने अभ्यासक्रमनी समजण आपवी। (4) परीक्षामां प्रथम त्रण क्रमे आवेल परीक्षार्थीनुं मातुश्री पुष्पाबेन केशवलाल मोदी प्रेरीत **वार्षिक ईनामी मेळावडानुं आयोजन**।

जैनशाळा अने महिलामंडळमां ज्ञानविकास करवा आगमप्रेमी श्रावको **श्री वजुभाई कपूरचंद गांधी, श्री जशवंतलाल शांतिलाल शाह, श्री हीरालाल मोहनलाल तुरखीया तथा श्री अरविंदभाई धरमशी लुखी** विगेरेअे ई.स. 1982-83मां श्रेणी 8थी 12 अने ई. स. 1992-93मां श्रेणी 13 थी 16नो अभ्यासक्रम भगीरथ पुरुषार्थथी तैयार कर्यो।

ई. स. 1998-99/2005—जैन पाठावली-4, श्रेणी 13थी श्रेणी 16, ई. स. 1999 मां श्रेणी 1 थी 14 ना पांच वर्षना प्रश्नपेपरोनी उत्तरावली, ई. स. 2003-जैन पाठावली भाग-1, श्रेणी 1 थी 4, नव्य संस्करण, ई. स. 2005-जैन पाठावली भाग-2, श्रेणी 5थी 8 नव्य संस्करण तैयार कर्युं। ई. स. 2007 जैन पाठावली भाग 3, श्रेणी 1 थी 12 नव्य संस्करण।

प्रमुख श्री चंद्रकांतभाई शीवलाल शाह, श्री अरविंदभाई धरमशी लुखी, श्री अतुलभाई मुगटलाल चुडगर, श्रीमती नीतिबेन अतुलभाई चुडगर वगेरेअे उपरना पुस्तक प्रकाशनमां अपूर्व सहयोग आप्यो। तेओना कार्यमां **दरियापुरी, गोंडल तथा लींबडी अजरामर** सम्प्रदायनां पू. संतोनुं मार्गदर्शन मल्युं। ते सहुनो हृदयथी आभार।

मात्र पाँच वर्षमां जैन पाठावली भाग-1 नी 10,000 प्रत (गुजराती) पूर्ण थतां आ **सचित्र जैन पाठावली-1 द्वितीय आवृत्ति (हिन्दी लिपि)** प्रकाशन करतां श्री महासंघ हर्ष अनुभवे छे। आ पुस्तकमां **मांगरोल निवासी श्री प्रभुदास लीलाधर शेठ** तरफथी अनुदान मल्युं छे तेमनो आभार। अन्य सर्व श्रुतसेवा करनारनो आभार। **श्री दिवाकर प्रकाशनना श्री संजय भाई सुरानाअे** चित्र तैयार करी आप्या तथा आ पुस्तक प्रकाशन करवामां तेमना अपूर्व सहयोग माटे खूब खूब आभार।

निवेदक—

मानद् मंत्रीओ : श्री बृहद् मुम्बई व. स्थानकवासी जैन महासंघ तथा धार्मिक शिक्षण बोर्ड

श्री बृहद् मुम्बई वर्धमान स्था. जैन महासंघना पदाधिकारिओ

(1)	श्री प्राणलाल रामजीभाई शेठ	– प्रमुख	23623413
(2)	श्री शशिकांत गोरधनदास बदाणी	– उ. प्र. / ट्रस्टी	26437387
(3)	श्री दीनेशभाई अनोपचंद भायाणी	– उपप्रमुख	28983802
(4)	श्री मनहरलाल चुनिलाल शाह	– ट्रस्टी	24304226
(5)	श्री मगनलाल हरीलाल दोशी	– ट्रस्टी	22870090
(6)	श्री किशोरभाई बी. संघवी	– ट्रस्टी	26045601
(7)	श्री जादवजी लालजी शाह	–ट्रस्टी	23610469
(8)	श्री अरुणभाई आर. महेता	–ट्रस्टी	66650000
(9)	श्री मनुभाई डी. तुरखीया	– मानद् मंत्री	26491003
(10)	श्री दिलीपभाई जे. रांभीया	– मानद् मंत्री	25939125
(11)	श्री निशितभाई पी. तुरखीया	– मानद् मंत्री	24142129
(12)	श्री जगदीशभाई जी जोन्सा	– खजांची	26705656

धार्मिक शिक्षण बोर्ड मुम्बईना पदाधिकारिओ

(1)	श्री जसवंतराय वी. जोबालीया	– प्रमुख	25132767
(2)	डॉ. श्रीमती पार्वती नेणसी खीराणी	– उपप्रमुख	9869787692
(3)	श्री दिनेशभाई अे. भायाणी	– मानद् मंत्री	9969402176
(4)	श्री मयंकभाई जे. शाह	– मानद् मंत्री	24014223
(5)	श्री अतुलभाई अेम. चुडगर	– मानद् मंत्री	9322283217
(6)	श्री कौशलभाई पी. कारिया	– मानद् मंत्री	9820968204

धार्मिक शिक्षण बोर्डना कमिटी सभ्यो

(1) श्री अरविंदभाई डी. लुखी
(2) श्री ललितभाई डी. शाह
(3) श्री जयंतभाई टी. जोबालिया
(4) श्री अरविंदभाई वी. जोबालिया
(5) श्री केतनभाई जे. संघवी
(6) श्री चंद्रकांत रतिलाल वोरा
(7) श्री हंसराज पुनशी गलिया
(8) श्री खीमजी भाई अेम. छाडवा
(9) श्री अशोकभाई रसिकलाल शाह
(10) श्री चिरागभाई केशवजी संगोई
(11) श्रीमती नयनाबेन एच. महेता
(12) श्रीमती प्रवीणाबेन पी. कामाणी
(13) श्रीमती रश्मिबेन अे. देसाई
(14) श्रीमती नीतिबेन अे. चुडगर
(15) डॉ. नयनाबेन अेन. मोदी
(16) श्रीमती भानुबेन जे. शाह
(17) श्रीमती अमृताबेन अेस. शाह
(18) डॉ. श्रीमती रतनबेन खीमजी छाडवा
(19) श्रीमती छायाबेन प्रवरभाई कोटिया
(20) श्री दीपकभाई चंद्रकांत शाह

अनुक्रमणिका

श्रेणी-1

	पृष्ठ क्रमांक	गुण
सूत्र विभाग	7 थी 12	50
सामान्य समजण विभाग	13 थी 13	15
संस्कार विभाग	14 थी 21	15
कथा विभाग	21 थी 29	10
काव्य विभाग	30 थी 30	10

श्रेणी-2

सूत्र विभाग	31 थी 40	60
तत्त्व संस्कार विभाग	40 थी 46	20
कथा विभाग	47 थी 56	10
काव्य विभाग	57 थी 58	10

श्रेणी-3

सूत्र विभाग	60 थी 63	55
तत्त्व/संस्कार विभाग	64 थी 76	25
कथा विभाग	76 थी 82	10
काव्य विभाग	83 थी 85	10

श्रेणी-4

सूत्र विभाग	87 थी 100	50
संस्कार विभाग	101 थी 116	30
कथा विभाग	117 थी 128	10
काव्य विभाग	129 थी 132	10

अभ्यासक्रम : श्रेणी 1

		पृ. नं.
सूत्र विभाग (मार्क-50)		
1.	सामायिक संपूर्ण विधि सहित (मार्क-25)	7
2.	सामायिक प्रथम ४ पाठना अर्थ (मार्क-15)	
3.	सामायिकना प्रथम बे पाठना प्रश्नोत्तर (मार्क-10)	
सामान्य समजण विभाग (मार्क-15)		
1.	२४ तीर्थंकरना नाम	13
2.	महावीर स्वामीना ११ गणधरनां नाम	
3.	महावीर स्वामीना १० श्रावकोनां नाम	
4.	१६ सतीनां नाम	
5.	छकायना गोत्रनां नाम	
6.	८ कर्मनां नाम	
7.	नव तत्त्व अने त्रण तत्त्वनां नाम	
संस्कार विभाग (मार्क-15)		
1.	विनयधर्म	14
2.	माता-पिताने भूलशो नहि	15
3.	विवेक	16
4.	जैनशाळा	18
5.	सामायिकना उपकरणो	19
6.	ज्ञान गम्मत	21
कथा विभाग (मार्क-10)		
1.	महावीर स्वामी	21
2.	अमरकुमार	25
3.	अतिमुक्तकुमार	27
कव्य विभाग (मार्क-10)		
1.	महावीरनां संतान...	30
2.	सकल मंगल	30
3.	नानां नानां भूलकां	30

कुल गुण 100

पाठ : 1

नमस्कार सूत्र प्रश्नोत्तर

सूत्र विभाग

प्रश्न १—जैन अेटले शुं?

उत्तर—(१) जे साचा देव, गुरु अने धर्मनां स्वरूपने जाणे, (२) तीर्थंकरनी आज्ञाने यथाशक्ति आचरणमां मूके, (३) जे क्रोध, मान, माया, लोभ आ चार कषायोने जीतवानो प्रयत्न करे, तेने जैन कहे छे।

प्रश्न २—जैनो 'भगवान' कोने कहे छे?

उत्तर—जैनो 'भगवान' नां बे भेद पाडे छे—(१) देहधारी भगवान **अरिहंत, तीर्थंकर,** (२) देह छोडी दीधेलां (देहरहित) भगवान **सिद्ध** भगवान छे।

प्रश्न ३—अरिहंत अने सिद्धमां मोटा कोण छे? शा माटे?

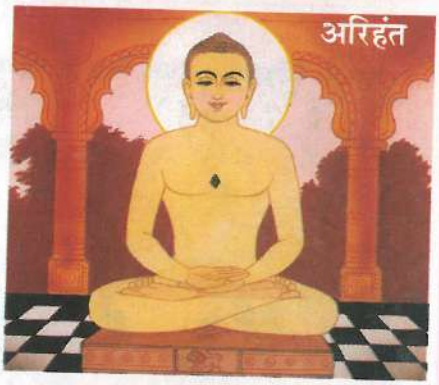

उत्तर—देहरहित **सिद्ध भगवान** मोटा कहेवाय छे, कारण के तेओ आठ कर्मोनो क्षय (नाश) करी मोक्ष पाम्या छे। ज्यारे अरिहंत भगवाने ४ धाती कर्म (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय अंतराय) नो क्षय कर्यो छे अने बाकीनां ४ अधाती कर्म (वेदनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र) नो क्षय करीने मोक्षे जशे। बाकी केवलज्ञान, केवलदर्शन आ गुणमां बन्ने समान छे।

प्रश्न ४—नमस्कार मंत्रमां कोनो समावेश करवामां आवे छे?

उत्तर—नमस्कार मंत्रनां पांच पदमां मोटा गुणीजनोनो समावेश करवामां आव्यो छे। तेओ नमस्कार करवा योग्य छे—**(१) अरिहंतो, (२) सिद्धो, (३) आचार्यो, (४) उपाध्यायो अने (५) लोकनां सर्व साधु-साध्वीजीओ के जे पंच परमेष्ठी भगवान कहेवाय छे। ते भगवान केवा छे? ते भगवान परम उपकारी छे, परम हितकारी छे, परम सुखकारी छे।**

प्रश्न ५—नमस्कार मंत्रमां पहेला सिद्धने नमस्कार करवाने बदले अरिहंतने नमस्कार केम करवामां आवे छे?

उत्तर—नमस्कार मंत्रमां अरिहंत (तीर्थंकर) नुं पद पहेलुं छे। कारण के तेओ पोते (१) संसार तरीने बीजाने संसार तरवा माटेनो साचो मार्ग बतावे छे, (२) सिद्ध भगवाननी ओळखाण अरिहंत भगवान करावे छे, तेथी **आपणा पर उपकारनी दृष्टिअे अरिहंत भगवाननी मुख्यता छे** अने गुणोनी दृष्टिअे सिद्ध भगवाननी मुख्यता छे।

प्रश्न ६—तीर्थंकर अेटले शुं ?

उत्तर—तीर्थनी स्थापना करनार पुरुषने **'तीर्थंकर'** कहेवाय छे। तेओ **'अरिहंत'** के **'जिनेश्वर'** पण कहेवाय छे।

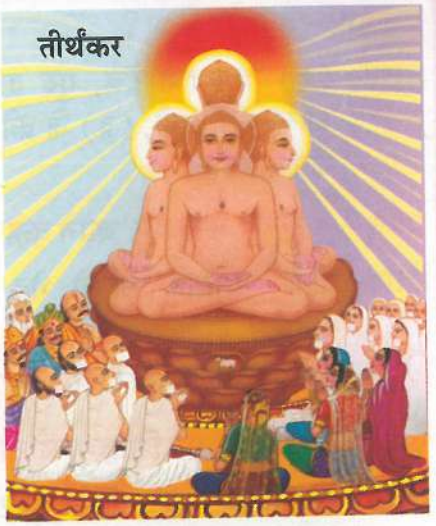

प्रश्न ७—तीर्थ अेटले शुं ? ते केटला छे? तेमां कोनो समावेश थाय छे ?

उत्तर—जेनी स्थापना तीर्थंकर करे छे ते तीर्थ। तीर्थ चार छे तेमां साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकानो समावेश थाय छे. आ चार तीर्थनुं बीजुं नाम **चतुर्विध संघ** छे।

प्रश्न ८—अत्यारे तीर्थंकरो हाजर नथी तो जैन धर्म केवी रीते चाले छे?

उत्तर—तीर्थंकरो हाजर नथी, पण **पूज्य आचार्य, उपाध्याय, साधु-साध्वीजीओ अने भगवान महावीरना उपदेशनां मुख्य ३२ आगमो** (शास्त्रो-पुस्तको) हाजर छे, तेमना आधारे जैन धर्म चाले छे।

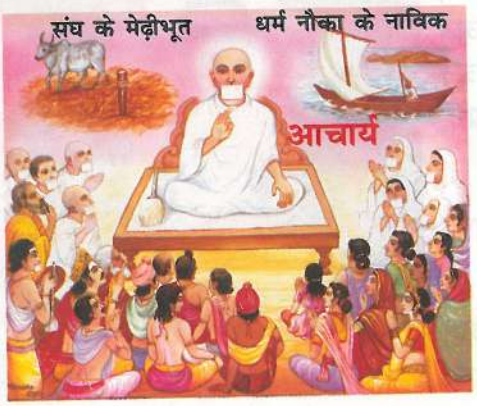

प्रश्न ९—'आचार्य' कोने कहे छे?

उत्तर—जे साधु पुरुष पोते पांच आचार पाळे, अन्यने पाळवा माटे प्रेरणा करे तथा चतुर्विध संघनुं नेतृत्व करे, तेने **'आचार्य'** कहेवाय छे।

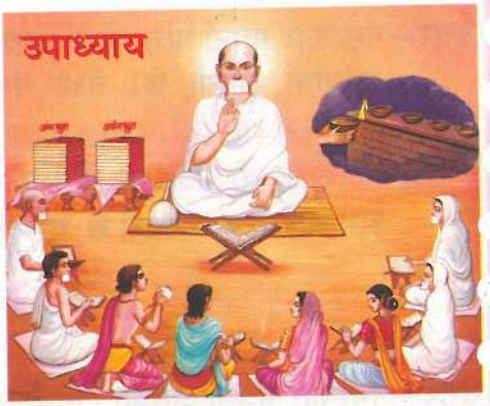

प्रश्न १०—'उपाध्याय' कोने कहे छे?

उत्तर—जे साधु पुरुष स्वयं पोते ३२ जैन आगम (शास्त्र)ने भणे अने बीजाने भणावे, तेने **'उपाध्याय'** कहे छे।

प्रश्न ११—साधु-साध्वीजी कोने कहेवाय?

उत्तर—(१) जे भाई के बहेन संसारनो त्याग करी संयम अंगीकार करे, (२) समकित सहित पांच महाव्रत धारे, (३) जेमनामां दया, क्षमा, संतोष विनय, सहनशीलता वगेरे गुणो होय, (४) जे हिंसा न करे, (५) जूठुं न बोले,

(६) चोरी न करे, (७) रात्रीभोजन अने १८ पापनो त्याग करे, तेवा पुरुषने **साधु** अने बहेनने **साध्वीजी** कहेवाय छे।

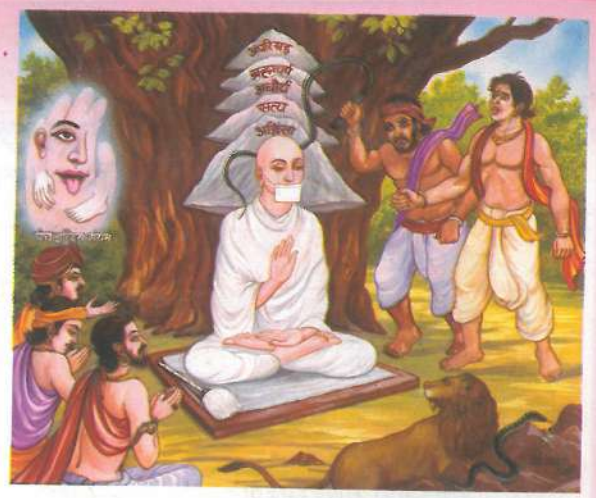

प्रश्न १२—आपणा धर्मगुरु कोण छे?

उत्तर—सर्व साधुओमां उच्च करणी करनार स्थानकवासी जैन साधु- साध्वीजी आपणां धर्मगुरु कहेवाय छे—(१) तेओ सफेद वस्त्रो पहेरे छे, (२) हाथमां रजोहरण राखे छे, (३) मुखे मुहपत्ति बांधे छे, (४) माथाना केश (वाळ) हाथे चूंटी लोच करे छे, (५) तेओ गामेगाम खुल्ला पगे पगपाळा चालीने, लोकोने धर्म तथा नीतिनो उपदेश आपे छे, (६) संयमना रक्षण माटे तथा जीवन टकाववा माटे घरे घरे फरी गोचरी (भिक्षा) वहोरवा (लेवा) जाय छे। आपणा धर्मगुरु आवा महान छे।

प्रश्न १३—आ धर्मगुरुओनां बीजां कया कया नाम छे?

उत्तर—मुनि, श्रमण, अणगार, निर्ग्रंथ जेवां अनेक नाम छे।

प्रश्न १४—नमस्कार सूत्रनी विशिष्टता शुं छे? आ मंत्रनुं स्मरण क्यारे करी शकाय?

उत्तर—विशिष्टता—(१) नमस्कार सूत्रमां कोई व्यक्तिने नमस्कार नथी, परन्तु जेमणे गुणो प्राप्त कर्यां छे, तेमने नमस्कार छे।

(२) धर्मनुं मूळ विनय समजाववा माटे पाठमां पहेलो ज शब्द '**नमो**' छे।

(३) नमस्कार सूत्र शाश्वतो छे। आ सूत्र जैन धर्मनो महामंत्र छे।

नमस्कार मंत्रने सूतां, ऊठतां, जमतां, बहार जतां, कोईपण कार्यनी शरूआत करतां पहेलां, कोईपण घडीअे अने कोईपण स्थळे भावपूर्वक स्मरण करी शकाय छे।

प्रश्न १५—आपणे नमस्कार सूत्र शा माटे बोलीअे छीअे? आ गणवाथी कोने लाभ थयो?

उत्तर—(१) नमस्कार सूत्र आपणा धर्मनो मुख्य मंत्र छे माटे श्रद्धा साथे बोलवो जोईअे, (२) आ पाठ बोलवाथी भवोभवनां पाप धोवाय, गुणोनां बीज ववाय, (३) मन आनंदमां रहे, (४) सारी गति मळे, (५) आ मंत्र गणतां तेमना उपकार अने गुणो याद आवे। तेमनुं जीवन अने शक्ति याद आवे, (६) संसारनो पार पमाय।

सुदर्शन शेठ, अमरकुमार वगेरेने नमस्कार सूत्र गणवाथी लाभ थयो हतो।

प्रश्न १६—नमस्कार मंत्रनां पांच पदमांथी दरेक पदना गुण केटला ? तेमां देव अने गुरु केटला ? कोने केटलां कर्म होय ?

उत्तर—नमस्कार मंत्रना दरेक पदना मळीने गुण कुल १०८ छे. तेथी माळाना मणका (पारा) १०८ छे। तेनां पांचे पदना गुण, देव के गुरु कोण, केटलां कर्म होय, तेनी संख्या नीचे मुजब छे—

पदनुं नाम	गुण	देव के गुरु	कर्म
१. नमो अरिहंताणं	१२	देव	४
२. नमो सिद्धाणं	८	देव	०
३. नमो आयरियाणं	३६	गुरु	८
४. नमो उवज्झायाणं	२५	गुरु	८
५. नमो लोअे सव्व साहूणं	२७	गुरु	८
कुल	१०८		

प्रश्न १७—पांच पदमांथी ऊंघ कोने आवे, कोने न आवे ? शरीर सहित, शरीर रहित कोण ? आहार कोण करे, कोण न करे ? कोण बोले, कोण न बोले ?

उत्तर—

पदनुं नाम	ऊंघ	शरीर	आहार	बोले/न बोले
१. अरिहंत भगवान	न आवे	होय	करे	बोले
२. सिद्ध भगवान	न आवे	न होय	न करे	न बोले
३. आचार्यजी	आवे	होय	करे	बोले
४. उपाध्यायजी	आवे	होय	करे	बोले
५. साधु-साध्वीजी	आवे	होय	करे	बोले

प्रश्न १८—श्रावक कोने कहे छे ?

उत्तर—जे केवली प्ररूपित धर्मनुं श्रवण (सांभळे) करे अने शक्ति प्रमाणे आचरे, तेने **'श्रावक'** कहे छे। श्रद्धापूर्वक **वि**नय-विवेक साचवीने जे **क्रि**या करे ते **श्रावक**।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) अरिहंतने केटलां कर्म बाकी छे ? (२) पंचपरमेष्ठिमांथी उपाश्रयमां केटला होय ? व्याख्यान केटला वांचे ? (३) पंचपरमेष्ठिमां स्वप्न कोण जूअे ? (४) तीर्थ कोण स्थापे ? (५) पंचपरमेष्ठिमां केवलज्ञानी केटला ? (६) जैन आगम केटलां ? (७) पांच पदमांथी हसे, रडे केटला ?

पाठ : 2

तिक्खुत्तो—गुरुवंदन सूत्र

प्रश्न १—गुरुवंदना प्रदक्षिणानी विधि बतावतो पाठ कयो छे?

उत्तर—**बीजो** तिक्खुत्तोनो पाठ गुरुवंदना अने प्रदक्षिणानी विधिनो छे।

गुरुवंदननी विधि

प्रश्न २—गुरुवंदननी विधि शुं छे?

उत्तर—सौ प्रथम (१) स्थिर ऊभा रहीने, बे हाथ जोडीने पोताना जमणा कानथी शरू करीने फरीथी जमणा कान सुधी लई जवा। आवी रीते त्रण आवर्त्तन (प्रदक्षिणा) करीने (२) घूंटण पर बेसीने 'वंदामि नममं स्वामी' शब्द वखते झुकवुं (३) फरी मस्तक ऊपर करी आगळनो सम्पूर्ण पाठ बोलवो, (४) पज्जुवासामि वखते फरी मस्तक जमीनने अडाडवुं। मस्तक, बे हाथ, बे पग आम पांच अंग नमावीने, त्रणवार तिक्खुत्तोना पाठथी वंदना करवी।

प्रश्न ३—देव अने गुरुने वंदन केटलीवार कराय? शा माटे?

उत्तर—वंदनीय पंच परमेष्ठिमां रहेलां (१) सम्यग् ज्ञान, (२) सम्यग् दर्शन, (३) सम्यक् चारित्र, आ त्रण गुणोने वंदन-विनय करवा माटे तथा आपणामां पण तेवा गुणो प्रगट थाय ते माटे गुरुवंदन त्रणवार करवामां आवे छे।

प्रश्न ४—गुरुवंदननां प्रकार कया कया छे?

उत्तर—गुरुवंदननां त्रण प्रकार छे—**(१) जघन्य वंदना**—रस्तामां चालतां पू. साधु-साध्वीजी मळी जाय तो बे हाथ जोडीने माथुं नमावी 'मत्थेणं वंदामि' बोली नमस्कार करवा, **(२) मध्यम वंदना**—पंचांग (बे हाथ, बे पग, अेक मस्तक) नमावीने 'तिक्खुत्तो' ना पाठथी त्रण वार करवी, **(३) उत्कृष्ट वंदना**—प्रतिक्रमणना त्रीजा पाठ वड़े गोदोहिका आसने बेसीने कराय छे, ते वंदना बे वार कराय छे।

प्रश्न ५—सत्कार अेटले शुं?

उत्तर— गुरु भगवंतनो वाणीथी सत्कार करवो। आवो, पधारो. बोलवुं। बे हाथ जोडवा वगेरे सत्कार छे।

प्रश्न ६—सन्मान अेटले शुं?

उत्तर— गुरु भगवंतनुं सन्मान करवुं। योग्य आसन आपवुं। वस्त्र-पात्र-गोचरी-पाणी वगेरे वहोरावबा। ते सन्मान छे।

प्रश्न ७—वंदना करवाथी शुं लाभ थाय?

उत्तर— शुद्धभावे विधि सहित वंदना करवाथी (१) नीचगोत्र (अशुभ कर्म) नो क्षय थाय छे, (२) उच्च गोत्र (शुभ कर्म) नो बंध थाय छे, (३) सौभाग्य अने सुखनी प्राप्ति थाय छे, (४) गुरु प्रत्ये पोतानो आदरभाव प्रगट थतां तेमनां वचन अने आज्ञानुं पालन सहेलाईथी थाय छे, (५) विनयगुण प्राप्त थाय छे। (६) आदेय नाम कर्म बंधाय छे।

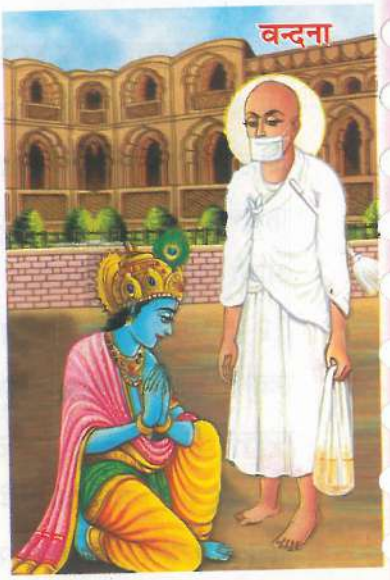

प्रश्न ८—शुद्ध भावनाथी वंदन करवानुं फळ कोने मल्युं?

उत्तर— शुद्ध भावनाथी वंदन करवानुं फळ कृष्ण महाराजाने मल्युं।

प्रश्न ९—वंदना करी शुं करवुं?

उत्तर— (१) भगवानने वंदना करो। भगवाननी भक्ति करो, (२) गुरुजीने वंदना करो। गुरु आज्ञा दिलमां धरो, (३) पिताजीने वंदना करो। पिताना उपकार याद करो। (४) माताने वंदना करो, माताना उपकार याद करो।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) वंदना करती वखते तिक्खुत्तोनो पाठ केटली वार बोलाय? (२) गुरुनां गुणग्राम करतां शब्दो केटला छे? क्या क्या? (३) गुरुने केवा केवा कह्या छे? (४) पांच अंग कया कया छे? (५) प्रदक्षिण अेटले शुं?

सामान्य समजण विभाग

(१) २४ तीर्थंकरोनां नाम

१. श्री ऋषभदेव स्वामी	२. श्री अजितनाथ स्वामी	३. श्री संभवनाथ स्वामी
४. श्री अभिनंदन स्वामी	५. श्री सुमतिनाथ स्वामी	६. श्री पद्मप्रभ स्वामी
७. श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी	८. श्री चंद्रप्रभ स्वामी	९. श्री सुविधिनाथ स्वामी
१०. श्री शीतलनाथ स्वामी	११. श्री श्रेयांसनाथ स्वामी	१२. श्री वासुपूज्य स्वामी
१३. श्री विमलनाथ स्वामी	१४. श्री अनंतनाथ स्वामी	१५. श्री धर्मनाथ स्वामी
१६. श्री शांतिनाथ स्वामी	१७. श्री कुंथुनाथ स्वामी	१८. श्री अरनाथ स्वामी
१९. श्री मल्लिनाथ स्वामी	२०. श्री मुनिसुव्रत स्वामी	२१. श्री नमिनाथ स्वामी
२२. श्री नेमनाथ स्वामी	२३. श्री पार्श्वनाथ स्वामी	२४. श्री महावीर स्वामी

(२) श्री महावीर स्वामीना ११ गणधरोनां नाम

१. इन्द्रभूति २. अग्निभूति ३. वायुभूति ४. व्यक्तजी ५. सुधर्मा स्वामी ६. मौर्यपुत्र
७. अकंपितजी ८. मंडितजी ९. अचलभ्राता १०. मेतार्य ११. प्रभास

(३) श्री महावीर स्वामीनां १० श्रावकोनां नाम

१. आनंद श्रावक २. कामदेव श्रावक ३. चुलनीपिता श्रावक ४. सुरादेव श्रावक
५. चुल्लणीशतक श्रावक ६. कुंडकौलिक श्रावक ७. शकडालपुत्र श्रावक ८. महाशतक श्रावक
९. नंदिनीपिता श्रावक १०. सालिहीपिता श्रावक

(४) १६ सतीओनां नाम

१. ब्राह्मी	२. सुंदरी	३. चंदनबाळा	४. राजेमति	५. द्रौपदी	६. कौशल्या
७. मृगावती	८. सुलसा	९. सीता	१०. दमयंती	११. शिवादेवी	१२. कुंता
१३. सुभद्रा	१४. पुष्पचूला	१५. प्रभावती	१६. पद्मावती		

(५) छकायनां गोत्रनां नाम

१. पृथ्वीकाय (माटी)	२. अपकाय (पाणी)	३. तेउकाय (अग्नि)
४. वायुकाय (हवा)	५. वनस्पतिकाय (झाड, पान)	६. त्रसकाय (हालतां चालतां जीवो)

(६) आठ कर्मनां नाम

१. ज्ञानावरणीय कर्म	२. दर्शनावरणीय कर्म	३. वेदनीय कर्म	४. मोहनीय कर्म
५. आयुष्य कर्म	६. नाम कर्म	७. गोत्र कर्म	८. अंतराय कर्म

(७) नव तत्त्वोनां नाम

१. जीव तत्त्व (Living being)	२. अजीव तत्त्व (Non living being)	३. पुण्य तत्त्व (सुख)
४. पाप तत्त्व (दु:ख)	५. आश्रव तत्त्व (कर्म की आवक)	६. संवर तत्त्व (कर्म रोकवा)
७. निर्जरा तत्त्व (कर्म खपाववा)	८. बंध तत्त्व (कर्म जोडावा)	९. मोक्ष तत्त्व (कर्मथी मुक्त थवुं)

त्रण तत्त्वनां नाम

देव तत्त्व: गुरु तत्त्व: धर्म तत्त्व: अरिहंत देव निर्ग्रंथ गुरु केवली प्ररूपित धर्म

पाठ : 1

विनय धर्म

संस्कार विभाग

दोहरो

विनय थकी विधा दीपे, विनय धर्मनुं अंग।
प्रीति पण तेथी वधे, करो विनयनो संग।।

प्रश्न १—आंबानुं वृक्ष आपणने शुं शीखवे छे?

उत्तर—जेम आंबानुं वृक्ष मोटुं थाय छे तेम ते नीचे नमे छे। ते रीते आपणे पण **जेम जेम मोटा थईअे तेम वधु ने वधु नम्र बनवुं जोईअे।** साचां हृदयना भावथी जे नमे छे। ते सहुने गमे छे।

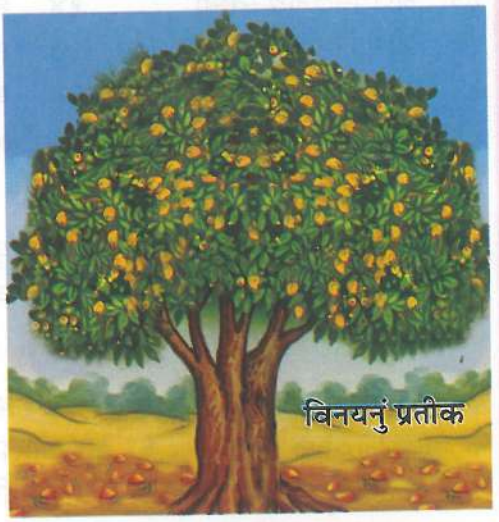

प्रश्न २—मोटाई केटला प्रकारनी छे? कई कई?

उत्तर—मोटाई बे प्रकारनी छे—(१) उंमरनी अने (२) गुणनी।

प्रश्न ३—गुणथी मोटा केम थवाय?

उत्तर—समय सहुने उंमरथी मोटा बनावे छे, पण गुणीजनोने नमन करवाथी गुणथी मोटा थवाय छे। गुणीजनोने नमस्कार करवाथी तेमनामां रहेलां **गुणो** अने **धर्मनां संस्कारो** आपणामां आवे छे।

प्रश्न ४—धर्म अेटले शुं?

उत्तर—(१) जेनो **विचार** करवाथी, **आचरण** करवाथी, जेनुं **शरण** लेवाथी **दुर्गतिमां** न जवुं पडे, तेने धर्म कहेवाय,
(२) जीवने दुर्गतिमां पडतां अटकावे अने आत्म गुणोने प्रगटावे ते धर्म छे,
(३) धर्म अेटले भलाई करवी अने बुराई छोडवी।

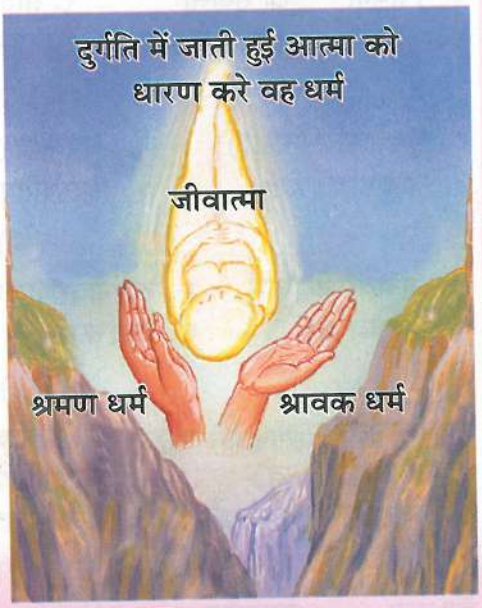

प्रश्न ५—धर्मनुं मूळ शुं?

उत्तर—धर्मनुं मूळ **विनय** छे।

प्रश्न ६—विनय अेटले शुं?

उत्तर—विनय अेटले नमतां शीखवुं / नमवुं।

प्रश्न ७—विनय धर्मनी प्राप्ति केवी रीते थाय छे?

उत्तर—विनय धर्मनी प्राप्ति करवा माटे (१) वडीलो अने गुणवानोने मान आपवुं, (२) तेमनी सामे बोलवुं नहि, (३) देव-अरिहंत, गुरु-साधु- साध्वीजी, अहिंसा प्रधान धर्मने नित्य वंदन करवा, (४) तेमनुं बहुमान जाळववुं, (५) तेमनी आज्ञानुं पालन करवुं।

प्रश्न ८—विनयथी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर—विनयथी नीचे मुजब लाभ थाय छे—

(१) तीर्थंकर भगवाननी **आज्ञानुं पालन** थाय छे, (२) **अभिमान** जतुं रहे छे, (३) **साचा विचार** आवे छे, (४) वाणीमां मीठाश आवे छे, (५) हृदय **विशाळ** अने **दयाळु** बने छे, (६) दुश्मन पण **मित्र** बने छे, (७) **विद्या, त्याग, वैराग्य अने विवेक** जेवा गुणो पण विनयथी ज आवे छे। आम, विनयथी आत्मानो विकास थतां आपणे सुखी थईअे छीअे।

पाठ : 2 मातापिताने भूलशुं नहि

(१) मारा उपर **सौथी वधु उपकार मातापितानो** छे, जे हुं कदी भूलीश नहि।

(२) मातापिताअे मने जन्म आपी, जीवन घडतरमां धार्मिक सुसंस्कारोनुं जे सिंचन कर्युं छे। तेनो बदलो आपी शकाय तेम नथी।

(३) तेओअे हुं सदा आनंदमां अने सुखमां रहुं ते माटे मारी इच्छा पूर्ण करवा सदा प्रयत्नो कर्या छे।

(४) हुं रोज सवारे ऊठीने मातापिताने वंदन करी '**जय जिनेन्द्र**' कहीश। तेमना प्रत्ये विनय, आदर, बहुमानना भावो राखी, सदा तेमनी भावना प्रमाणे जीवन बनाववा प्रयत्न करीश।

(५) तेमनी **सामे बोलीश नहि**। तेमनुं दिल दुभाय तेवुं वर्तन करीश नहि। वस्तु लेवा **जीद करीश नहि**।

(६) कुमित्रोनी सोबत करीश नहि अने खोटां व्यसनो, शोख ऊभा करी तेमने खोटां खर्चा करावीश नहि।

(७) वृद्धावस्थामां अने बीमारीमां तेमनी सेवा करीश। आखी जिंदगी सेवा करीश तो पण तेमना उपकारनो बदलो थाय तेम नथी। तेमने धर्म करवा सर्व अनुकूळता करी आपीश। तेमनी सद्‌गति थाय तेवा प्रयत्नो करीश। आथी ज.....

सहन करजो

माता-पितानो **उपको** सहन करजो....
शिक्षकनी **शिक्षा** सहन करजो....
कोईनी **गाळी** सहन करजो....
दु:ख आवे तो सहन करजो....

मातापितानी सामे न थशो।
शिक्षकनी विरुद्ध न जशो।
गाळीनी सामे गाळी न देशो।
दु:खमां रोदणां (पोतानुं दु:ख) न रोशो।

सहन करवामां सो गुण।

पाठ : 3

विवेक

विनय करवाथी विवेकनो गुण आवे छे। **पोतानां आत्मानुं अने जीवननुं हित क्यां छे अने क्यां नथी? ते विचारीने वर्तन करवुं, तेने 'विवेक' कहेवाय छे।**

जे अविवेकी छे, **ते सूतेलो छे।** जे विवेकी छे **ते जागृत छे।**

(१) विवेक अेक किंमती **धनभंडार** छे, (२) विवेकथी धर्मनी **शोभा** वधे छे, (३) विवेकथी... सौने **प्रिय** बनाय, (४) विवेकथी... **महापुरुष बनाय**। माटे हुं आहार विवेक, वाणी विवेक अने दृष्टि विवेक राखीश।

आहार-विवेक

हुं जमती वखते नीचेनी बाबतोनुं ध्यान राखीश **ते मारो आहार विवेक छे**–

(१) जमतां पहेलां हुं पांचवार **नवकार स्मरण** करीश। **सुपात्रदाननी भावना** भावीश।

(२) मारा माटे जुदी वस्तु करवी पडे, भावती वस्तु के स्वादवाळुं खावानुं बनाववुं पडे तेवी जीद करीश नहि। वारंवार **खा खा करीश** नही।

(३) भोजनमां स्वाद माटे उपरथी काचुं मीठुं वगेरे **सचेत वस्तु** वापरीश नहि।

(४) जमती वखते आहारनी **निंदा के प्रशंसा** करीश नहि। **मौन** राखीश। जम्या पछी थाळी धोइने पी जईश।

(५) वगर कारणे पैसा खर्चीने **हॉटेलमां** के **रेंकडीनी** उघाडी वस्तुओ खाईश नहि।

(६) **आठम**, पाखी वगेरे तिथिना दिवसनी जाणकारी राखी **लीलोतरीनो त्याग** करीश ते दिवसे **नवकारशी** आदि नानुं **तप** तो जरूर करीश।

(७) रोज भूख करतां **ओछुं खावानी** टेव राखीश।

(८) सूर्यास्त पछी अेटले **रात्रे आहारनो त्याग** करीश, जेथी (१) तीर्थंकरनी **आज्ञानुं पालन** थाय, (२) पू. संतोने **वहोरावानो लाभ** मळे, (३) छकाय **जीवोनी दया** थाय। आ त्रण लाभ थाय।

वाणी विवेक

पोताने के बीजाने हितकारी अने प्रियकारी वाणी बोलवी, तेने '**वाणी-विवेक**' कहे छे।

कोईने पण दुःख थाय तेवी वाणी बोलवी, तेने 'वाणी-अविवेक' कहे छे।

(१) हुं असत्य भाषा / **जूठुं** बोलीश नहि, कोई वस्तु माटे **कजियो** करीश नहि।

(२) हुं कोईने **डर** लागे, कोई साथे **झघडो** थाय तेवा **कडवा** अने **खराब** शब्दो बोलीश नहि।

(३) हुं **ऊंचे अवाजे** बोलीश नहि, मातापिता के वडीलो सामे जेमतेम अने **अविनयथी** बोलीश नहि।

(४) हुं सदा **मीठी** अने **नम्र** वाणी बोलीश। दुःखी लोकोने **आश्वासन मळे** तेवा शब्दो बोलीश।

(५) धर्मथी पडतां जीवो मारी **वाणीथी स्थिर** थई जाय तेवुं बोलीश।

दृष्टि विवेक

१. सिनेमा न जोवाय। **२. बीजाना दोष न जोवाय।**

३. खराब काम न जोवाय। **४. बीजानुं धन न जोवाय।**

- **सिनेमा जोवाथी-थतां नुकसान :** १. आंख बगडे, २. पैसा बगडे, ३. मन बगडे, ४. जीवन बगडे।
- **बीजानुं धन जोवाथी-थतां नुकसान :** १. आपणामां दोष आवे, २. आपणा गुणो जाय।
- **खराब काम जोवाथी-थतां नुकसान :** १. खराब काम थाये, २. खराब भावो जागे।
- **बीजानुं धन जोवाथी-थतां नुकसान :** १. चोरीनुं मन थाय, २. धननो लोभ जागे।

आम, टी.वी., सिनेमा जोवामां अमूल्य समय न गुमावशो।
टेपरेकोर्ड सांभळवामां, कोम्प्युटर गेम रमवामां समय न गुमावशो।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) जमतां पहेलां शुं करवुं ? (२) रात्रीभोजन त्यागवाथी शुं लाभ थाय? (३) शुं न खावुं ? (४) शुं न जोवुं ? (५) सिनेमा जोवाथी शुं थाय? (६) बीजाना दोष जोवाथी शुं नुकसान थाय ? (७) बीजानुं धन जोवाथी शुं थाय ?

पाठ : 4 जैनशाळा

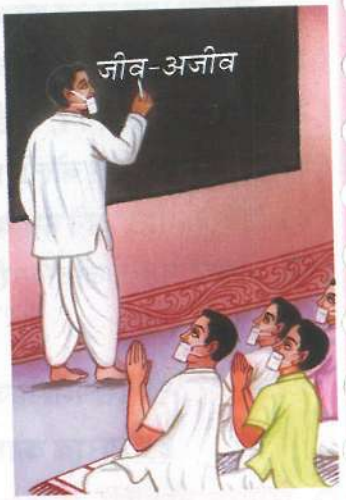

प्रश्न १—जैनशाळा अेटले शुं?

उत्तर—ज्यां जैन धर्मनुं ज्ञान शीखववामां आवे छे, ते जैनशाळा छे।

प्रश्न २—धर्मनुं ज्ञान मेळववाथी शुं लाभ थाय?

उत्तर—धर्मनुं ज्ञान मेळववाथी (१) आत्मभान थाय छे, (२) आपणे कर्तव्य (शुं करवुं?) अने अकर्तव्यने (शुं न करवुं?) जाणी शकीअे छीअे, (३) प्रामाणिकता, सादाई, संतोष, दयाभाव वगेरे गुणोनी वृद्धि थाय छे।

प्रश्न ३—जैनशाळामां रोज जवाथी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर—जैनशाळाअे रोज जवुं जोईअे कारण के—

(१) साचा देव, गुरु अने **धर्मनी ओळखाण** थाय छे, (२) धार्मिक **संस्कारो** मळे छे, (३) विनय, विवेक, शिस्त अने नम्रता शीखवा मळे छे, (४) जीव-अजीवनी जाणकारी मळवाथी सर्व जीवो प्रत्ये **मैत्रीभाव** प्रगट थाय छे, (५) मातापिता अने वडीलोना **उपकारनी जाण** थाय छे, (६) सम्यग्-ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपनां आचरण द्वारा **मोक्ष** मेळववानो उपाय जाणवा मळे छे, (७) धर्मनुं ज्ञान मेळवीने भविष्यमां आदर्श नागरिक, श्रावक, श्राविका, **साधु** के **साध्वी** बनी शकाय छे।

प्रश्न ४—जैनशाळामां जईने सौ प्रथम शुं करवुं?

उत्तर—जैनशाळामां सौ प्रथम वंदना करी संवर के सामायिक लेवी।

संवरनां पच्चक्खाण नीचे प्रमाणे छे—

द्रव्य थकी १८ पाप अने पांचे आश्रव सेववानां पच्चक्खाण,

क्षेत्र थकी जैनशाळा (घर, ब्लोक, ट्रेन) तथा बहार दृष्टि जाय त्यां सुधीनो आगार (अथवा पोतानी जरूर प्रमाणे आगार करवो) ते सिवाय १४ राजलोकनां आश्रवनां पच्चक्खाण,

काळ थकी १ वार नमस्कार मंत्र (अथवा 'नमो अरिहंताणं) गणीने न पारुं त्यां सुधी,

भाव थकी उपयोग सहित पच्चक्खाणनुं पालन करवुं। एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वचसा कायसा तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।।

संवर पारवानी विधि : मारो संवर पूरो थयो तेमां दोष लाग्यो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं। ३ नमस्कार मंत्रनो काउस्सग्ग करवो।

पाठ : 5 सामायिकनां उपकरणो

प्रश्न १—सामायिक अेटले शुं?

उत्तर—(१) १८ पापनी वृत्ति (ईच्छा) अने प्रवृत्ति छोडीने समभाव प्राप्त करवो ते सामायिक छे। (२) बे घडी (४८ मिनिट) सुधी शांतिथी अेक स्थाने बेसीने भगवानना तथा निज (पोताना) आत्माना गुणोनुं चिंतन करवुं। (३) ते गुणो पोतानामां खीलववा प्रयास करवो ते **सामायिक** छे।

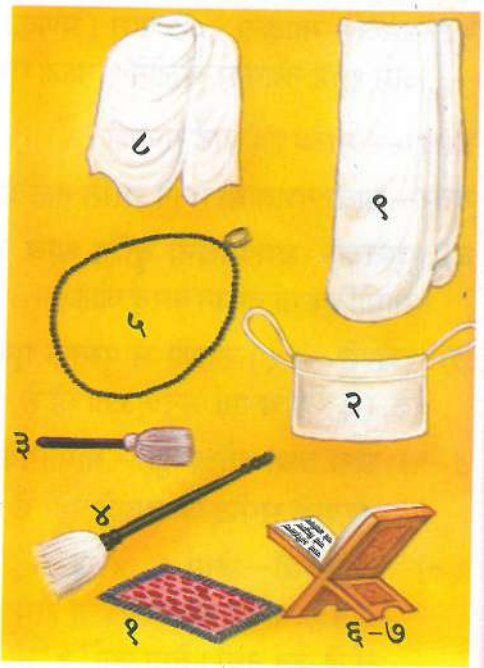

प्रश्न २—सामायिकनां उपकरणोनी समजण आपो।

उत्तर—सामायिकमां आराधना करवा माटे **(१) आसन (पाथरणुं), (२) मुहपत्ति, (३) गुच्छो, (४) रजोहरण, (५) माला, (६) पुस्तक, (७) ठवणी, (८) खेस, (९) चोलपट्टो, (१०) आनुपूर्वी** वगेरे उपकरणोनो उपयोग करवो जोईअे। ते उपकरणोनी समजण टूंकमां नीचे आपवामां आवी छे—

१) **आसन**—(१) सफेद वस्त्रोना (कांतेली के वणेली खादीना, ऊनना) नाना टुकडाने आसन/पाथरणुं कहेवाय छे, (२) आसन जमीन पर पाथरवानुं होय छे, (३) आसन पर बेसी सामायिक थाय।

प्रश्न ३—आसन शा माटे पाथरवुं जोइअे?

उत्तर—आसन पाथरवाथी जीवजंतु आपणां शरीर पर न चडे अने बाजुथी चाल्यां जाय छे।

२) **मुहपत्ति—मुहपत्ति अेटले मुखवस्त्रिका। सफेद रंगनुं आठ पडनुं सुतराउ कपडुं (Cotton Cloth) मुख पर राखी कान सुधी दोरा वडे बांधवामां आवे छे।**

प्रश्न ४—मुहपत्ति पहेरवाथी शुं लाभ थाय?

उत्तर—(१) तेनाथी वायुकायना जीवोनी रक्षा थाय छे, (२) बीजां त्रस जीवो आवीने मुखमां पडता नथी, (३) ते जैन धर्मनुं चिन्ह छे, (४) ते पहेरवाथी बोलवामां विवेक सचवाय छे।

३) **गुच्छो**—(१) ते ऊननो बनेलो होय छे, (२) तेने पकडवा माटे नानी लाकडानी दांडी (भाईना गुच्छामां) अथवा नाकी (बहेनना गुच्छामां) होय छे, (३) कीडी, मंकोडा, कंथवा जेवां नानां जीवजंतुओ आसन के शरीर पर चडी आवे तो गुच्छाथी जतनापूर्वक (ध्यानथी) दूर कराय छे, (४) **गुच्छाथी ते जीवोने पीडा, कष्ट के दु:ख थतुं नथी।**

४) **रजोहरण**—(१) ऊननो बनेलो अने गुच्छाथी मोटो होय छे, (२) मोटी लाकडीथी तेने बांधवामां आवे छे, (३) रात्रे के अंधारांमां जमीन पर रहेलां **जीवोनी रक्षा करवा, दया पाळवा, पूंजीने चालवामां आवे छे,** (४) गुच्छो अने रजोहरणनो उपयोग करवाथी **जीव हिंसाथी बची शकाय छे।**

५) **माळा**—माळाना १०८ पारा (मणका) होय छे। माळा गणवा १ नवकार बोलीने १ पारो मूकवो। अेम १०८ नवकार बोलीने १ माळा गणवी।

प्रश्न ५—माळा शा माटे गणवी?

उत्तर—माळा गणवाथी मनने **शांति** मळे अने कर्म **निर्जरा** थाय छे।

६) **पुस्तक**—**समभावनी वृद्धि थाय** अने आत्मज्ञान-धार्मिक **ज्ञाननी समज** आपे तेवां पुस्तकोनुं सामायिकमां वांचन करवुं जोईअे।

७) **ठवणी**—(१) ठवणी अे पुस्तक मूकवानुं योग्य साधन छे, (२) तेनाथी पुस्तकनी जाळवणी थाय छे, (३) वांचनमां अनुकूळता रहे छे, (४) प्राय: लाकडांनी बनेली होय छे।

८-९) **खेस तथा चोलपट्टो**—सामायिकमां भाईओ शर्टनी जग्याअे **सफेद खेस** पहेरे छे अने पेन्टनी जग्याअे **सफेद चोलपट्टो** पहेरे छे। बहेनोअे पण सादां अने सफेद वस्त्रो पहेरवां जोईअे।

१०) **आनुपूर्वी**—जेमां १, ४, ३, ५, २ आम आडां अने ऊभा आंकडा लखेला होय छे, जेथी ध्यान बीजे जतुं नथी। तेमा ज्यां '१' नो आंक होय त्यां नवकार मंत्र प्रथम पद 'नमो अरिहंताणं, २ नो आंक होय त्यां 'नमो सिद्धाणं', ३ नो आंक होय त्यां 'नमो आयरियाणं', '४' नो आंक होय त्यां 'नमो उवज्झायाणं', '५' नो आंक होय त्यां 'नमो लोअे सव्व साहूणं', पद ध्यानथी **चित्तनी अेकाग्रताथी** बोलवानुं होय छे। (अहीं आनुपूर्वीना २० कोठामांथी फक्त १ कोठो समजवा माटे मूकेलो छे।)

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

समजण माटे प्रश्न पूछाशे नहि—(१) **आसननुं** अंदाजित माप २ फूट × २ फूट। (२) मुहपत्ति पोताना हाथना **१६ अंगुल × २१ अंगुलनी** होय छे। (३) खेस सवा बे मीटर × ३६ इंचनो अने बंने छेडा खुल्लां होय छे। (४) चोलपट्टो बे के अढी मीटर × ३६ इंचनो अने बंने छेडा परस्पर सीवेलां होय छे।

पाठ : 6

ज्ञान-गम्मत

प्रश्न १—हुं कोण छुं?

उत्तर—हुं आत्मा छुं।

प्रश्न २—मारुं सारुं करनार कोण?

उत्तर—हुं पोते ज छुं।

प्रश्न ३—मारुं खराब करनार कोण?

उत्तर—हुं पोते ज छुं।

प्रश्न ४—शूरवीर कोण?

उत्तर—मनने जीते ते।

प्रश्न ५—मन केवी रीते जीताय?

उत्तर—ज्ञानाभ्यास करी समजण केळववाथी।

प्रश्न ६—डाह्यो कोण?

उत्तर—समयने ओळखे ते।

प्रश्न ७—मूर्ख कोण?

उत्तर—अमूल्य मानवभव गुमावे ते।

प्रश्न ८—जगतनो दास कोण?

उत्तर—जे आशानो दास होय ते।

प्रश्न ९—जगतनो मालिक कोण?

उत्तर—आशा जेनी दासी छे ते।

प्रश्न १०—उत्तम दान क्या क्या?

उत्तर—अभयदान, ज्ञानदान, सुपात्रदान अने उचित्तदान।

प्रश्न ११—श्रीमंत कोण?

उत्तर—संतोषी।

प्रश्न १२—दरिद्र (गरीब) कोण?

उत्तर—तृष्णावाळो (इच्छावाळो)।

प्रश्न १३—अत्यारे कोनुं शासन चाले छे?

उत्तर—चोवीसमा तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामीनुं।

प्रश्न १४—जय जिनेन्द्र अेटले शुं?

उत्तर—जय जिनेन्द्र अेटले अनंत जिनेश्वर भगवंतोनो जय हो।

प्रश्न १५—'जय जिनेन्द्र' बोलवाथी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर—(१) अनंत जिनेश्वर भगवंतोनो **जय** थाय छे, (२) जैन धर्मनुं **गौरव** वधे छे, (३) जैनपणानी **स्मृति** थाय छे, (४) जय जिनेन्द्र अे जैनपणानो **सूचक** शब्द छे।

कथा : 1

भगवान महावीर

कथा विभाग

भगवान महावीर स्वामीनो जन्म **चैत्र सुद तेरस** (१३) नी मध्यरात्रीअे माता **त्रिशलाराणीनी** कुक्षिअे थयो हतो। तेओ भविष्यना तीर्थंकर होवाथी तेमनो जन्म अभिषेक ६४ इन्द्रो द्वारा मेरु पर्वत उपर उजववामां आव्यो हतो।

तेमना पितानुं नाम राजा **सिद्धार्थ** हतुं। गर्भथी ज भगवान महावीर मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान अे त्रण ज्ञानना धारक हता। गर्भमां तेमना हलनचलनथी माताने कष्ट पडतुं हतुं, तेथी तेमणे हलनचलन बंध करी दीधुं। तेमनी माताने

तेथी चिंता थवा लागी अने तेओ शोकमग्न थई गयां। आवी जाण थतां ज महावीरे तरत गर्भमां हलनचलन शरू कर्युं, जेथी माता खूब ज आनंदित थई गयां। आ कारणे भगवान महावीरे गर्भमां ज माता-पितानी **हाजरीमां दीक्षा न लेवानी प्रतिज्ञा करी।** आम गर्भमां हता त्यारथी ज तेओ **माता-पिताना परम भक्त** हता।

भगवान महावीर ज्यारे माताना गर्भमां हता त्यारे पिताना घरे तथा नगरमां धन-धान्य आदिनी वृद्धि थई हती, तेथी जन्म थतां तेमनुं नाम '**वर्धमान**' पाडवामां आव्युं। तेओ देवथी पण वधारे स्वरूपवान हता।

तेमना मोटा भाई **नंदीवर्धन** अने बहेन **सुदर्शना** हतां।

तेओ ज्यारे मात्र आठ वर्षना हता त्यारे अेक देव तेमने डराववा सापनुं रूप धारण करीने आव्यो। सापने जोई बधां बाळको भागवा लाग्यां अने बोल्यां, "वर्धमान! तुं पण भागी जा, नहि तो साप तने करडशे।" पण वर्धमान हिंमतवाळा अने नीडर हता। तेमणे कह्युं, "दोस्तो! आपणे सापनुं शुं बगाड्युं छे के ते आपणने करडे ?" तेमणे कोईपण बीक विना सापने उपाडीने अेक बाजु मूकी दीधो।

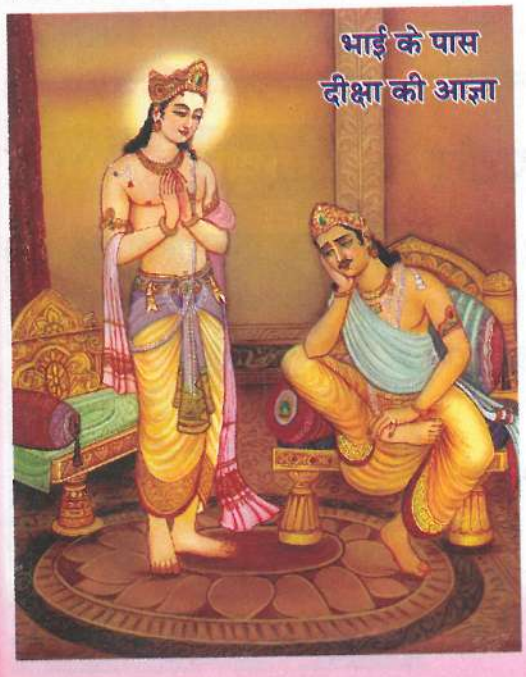

ते देवे वर्धमानने हराववा माटे नवो दाव अजमाव्यो। ते अेक बाळकनुं रूप बनावीने बधा साथे रमवा लाग्यो, त्यारे बाळको '**तिंदुषक**' नामे रमत रमतां हतां। जे हारी जाय तेनो दाव आवे अथवा पोतानी पीठ उपर विजेता छोकराने बेसाडे, तेवी आ रमत हती। पेलो बालक देव जाणी जोईने हारी गयो अने तेणे विजेता वर्धमानने पीठ पर बेसाड्या. जेवा वर्धमान तेनी पीठ उपर बेठा के तरत ज तेणे विकराळ पिशाचनुं स्वरूप बनाव्युं अने ताड जेटलो ऊंचो थई गयो। वर्धमानने डराववा जोरजोरथी चिचियारीओ करवा लाग्यो। नानकडा वर्धमाने अवधिज्ञानथी जाणी लीधुं के आ तो देवनी माया छे, आथी तेमणे अेक ज मुट्ठी मारी देवने नीचे नमावी दीधो।

पछी ते देवे पोतानुं साचुं स्वरूप प्रगट करीने वर्धमानने शाबाशी आपी कह्युं, "आप खरेखर खूब ज बळवान छो, तेथी आप महावीर छो।" तेम कही ते देव पोताना स्थाने चाल्यो गयो। आम देव द्वारा तेमनुं नाम **'महावीर'** पड्युं।

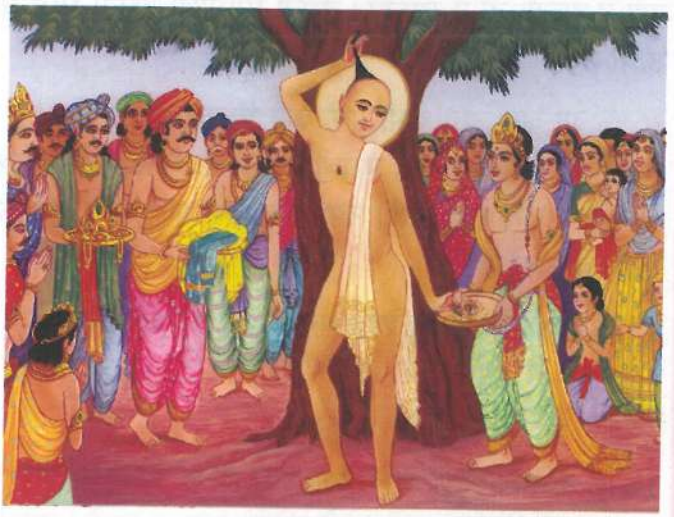

वर्धमानकुमार युवान थतां गुणवान अने स्वरूपवान अेवा **यशोदा** साथे तेमनां लग्न थयां. तेमने त्यां **प्रियदर्शना** नामे पुत्रीनो जन्म थयो।

तेओ ज्यारे २८ वर्षना हता त्यारे तेमनां मातापितानुं देवलोकगमन थयुं। पछी तरत ज महावीरे मोटा भाई नंदीवर्धन पासे दीक्षा लेवानी आज्ञा मांगी, पण भाईअे तेमने बे वर्ष सुधी थोभी जवानी विनंती करी।

मोटा भाईनी लागणीने मान आपीने तेओ संसारमां निरासक्तभावे रहेवा लाग्या।

तेमणे ब्रह्मचर्यनुं पालन, रात्रीभोजन त्याग, सचेत भोजन- पाणीत्याग अने छकाय जीवोनी दया पाळवानो संकल्प कर्यो। अेक वर्ष सुधी रोज १ करोड ८ लाख सुवर्णमुद्रानुं दान करवा लाग्या, जेने **'वर्षीदान'** कहेवाय छे।

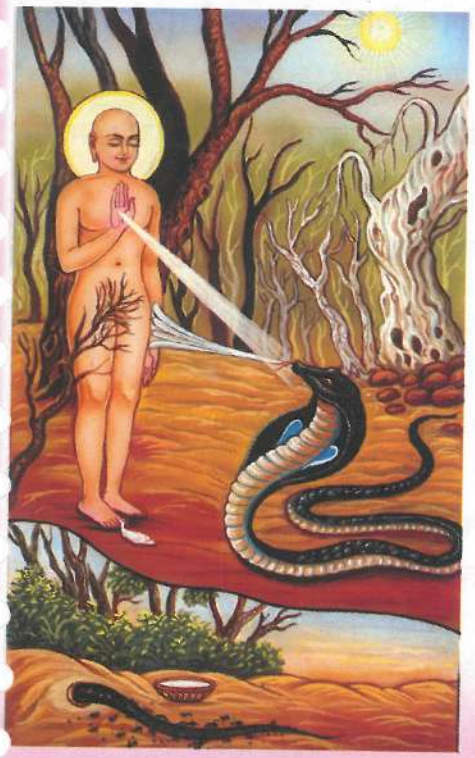

३० वर्षनी युवान वये तेमणे संसारनो त्याग करी **जैन दीक्षा** ग्रहण करी। तेओ खुल्ला पगे चालता, घरे घरे फरीने मांगीने आहार-पाणी करता। घणां दिवस सुधी उपवास करतां। कोईने दुःख देतां नहि अने कोई अपमान करे तो हसते मोढे सहन करी लेतां हतां। तेओने संयमजीवन दरमियान देव, मनुष्य अने तिर्यंच प्राणीओअे खूब ज कष्ट आप्या अने तकलीफो आपी।

✦ ✦ ✦ ✦

अेक वखतनी वात छे, तेओ जंगलमां चाल्या जतां हतां। रस्तामां लोकोअे कह्युं, "आप आ तरफ न जशो! त्यां अेक बहु भयंकर अने झेरी नाग रहे छे। तेनी नजरना झेर मात्रथी मनुष्य, पशु, पक्षी तरत ज मरी जाय छे।"

भगवान महावीर तो मोतथी डरता न हता। तेओ तो ते नागना राफडा तरफ चालवा लाग्या। नाग तेमने आवतां जोईने खूब ज क्रोधमां आवी गयो। ते नाग भगवानना पग फरते वींटळाई गयो अने तेमने भींस दीधी। क्रोधथी फूंफाडा मारवा लाग्यो अने पगना अंगूठे जोरथी डंख मार्यो। पण भगवान तो जरा पण न हाल्या के न चाल्या। तेमना पगमांथी दूधनी धारा वहेवा लागी। तेओ तो समताभावे त्यां अडग ऊभा रह्या।

आ जोई नाग थंभी गयो अने विचारवा लाग्यो, 'आ तो कोई देव छे के माणस? तेणे भगवाननी आंखोंमां पोतानी आंखों परोवीने जोयुं तो भगवाननी आंखमां तो अमृत भरेलुं हतुं। तेओ करुणासभर आंखें तेने जोई रह्यां हतां। नाग शांत बनी गयो, अेने थयुं के 'में जेना उपर झेर फेंकयुं तेओ तो मारा पर अमृत वरसावे छे!'

महावीरे हवे तेने शांत थयेलो जोईने उपदेश आप्यो, "ओ नाग! बुज्झ! बुज्झ! बोधने पाम। तुं पण अमृतनो दरियो छे। तुं तारा पूर्वभवनो विचार कर। तें मनुष्यना भवमां क्रोध कर्यो, तेथी तुं आजे आ नागनो जन्म पाम्यो छे। माटे हवे तुं समज अने क्रोध करवानुं छोडी दे।"

भगवानना उपदेशनी तेना उपर जादुई असर थई। नागने पोतानो पूर्वभव याद आव्यो अने हवे क्रोध न करवानो निर्णय कर्यो। तेणे कोईने डंस न मार्यो। क्रोध न कर्यो, कोई पथरो मारे तो सहन करतो। कीडीओ करडे तो पण क्षमा धारण करी। आहार-पाणीनो त्याग कर्यो अने पोतानुं मोढु दरमां राखीने रहेतो। अंते मृत्यु पामीने ते देव थयो।

भगवाननो संग थवाथी नागे पण पोतानो भव सुधारी लीधो। ज्यां माणसने सुधारवो मुश्केल छे, त्यां आ तो नाग सुधरी गयो! अहो आश्चर्य!

७२ वर्षनी उंमरे **आसो वद अमास** (दिवाळी)ना दिवसे भगवान महावीर स्वामी मोक्ष पधार्या। भगवान महावीरनुं शासन जयवंतु वर्तो।

बोलो भगवान महावीर स्वामीनी जय हो!

नोट—*नीचे लखेला प्रश्ननां उत्तर ऊपरनी वार्तामां Pink Colour थी आप्या छे। आज पद्धति आखा पुस्तकमां राखी छे (संस्कार विभाग अने कथा विभागमां)।*

अपेक्षित प्रश्नो

(१) महावीरनुं नाम 'वर्धमान' शाथी पड्युं? (२) भगवान महावीरे केटलामे वर्षे दीक्षा लीधी? (३) भगवान महावीरे नागने शो उपदेश आप्यो? (४) नाग मृत्यु पामीने क्यां उत्पन्न थयो? (५) अत्यारे कोनुं शासन चाले छे? (६) बाल वर्धमाने देवने केवी रीते नमावी दीधो? (७) भगवान महावीरना मोटाभाई, बहेन, पुत्री अने पत्नीनां नाम लखो, (८) नागे शुं विचार कर्यो? (९) महावीर नाम केवी रीते पडयुं? (१०) देवे वर्धमानने डराववा शुं कर्युं?

कथा : 2

अमरकुमार

मगधदेशना राजा श्रेणिक चित्रशाळा बंधावता हता। तेनो दरवाजो पूरो चणाय ते पहेलां ज तूटी जतो हतो। कोईके राजाने सलाह आपी के 'बत्रीस लक्षणवाला बाळकनुं बलिदान देवाय तो ज दरवाजो पूरो चणी शकाशे।' श्रेणिक राजा ते वखते भगवान महावीरना श्रावक थया न हता। तेमणे ते वात मानी लीधी। पण प्रजा पासेथी पराणे बाळक केम लेवाय? तेथी तेमणे ढंढेरो पिटाव्यो के **'जे कोई पोतानो बत्रीस लक्षणो बाळक राजाने आपशे तेने बाळकना वजन जेटला सोनैया मळशे।'**

तेमना ज नगरमां अमरकुमार नामे अेक ३२ लक्षणो बाळक हतो। तेनुं रूप घणुं ज सुंदर अने आकर्षण उपजावे तेवुं हतुं। वाणीमां मीठास होवाथी तेना पर वहाल उत्पन्न थाय तेवुं हतुं। तेना गरीब पिता **ऋषभदत्त** ब्राह्मणने तेना उपर घणो प्रेम हतो। 'पिताजी मारे आ वस्तु जोईअे, ते वस्तु जोईअे' तेवी मागणीओ अने लाड अमरकुमार तेना पिता पासे करतो। परन्तु तेनी माताने तेना पर खूब अणगमो हतो।

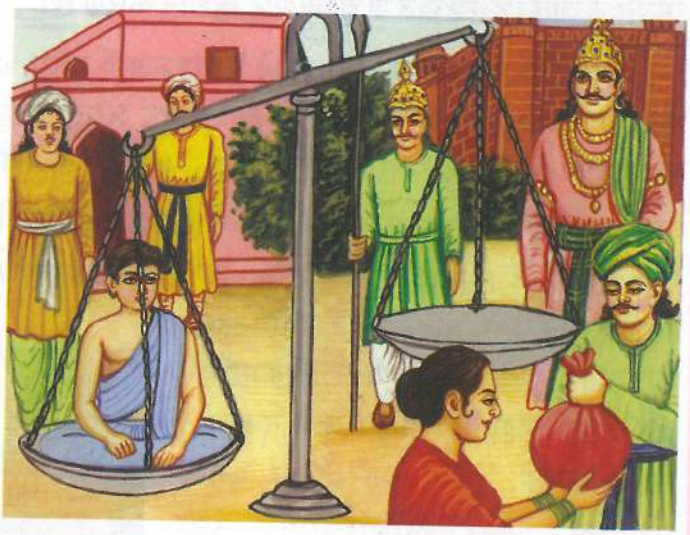

अमरकुमारनी माताअे राजानो ढंढेरो सांभल्यो। जेना घरमां खावाना सांसां होय अने कोई प्रत्ये अणगमो होय तेने कुविचार उत्पन्न थाय। तेवी रीते अमरकुमारनी माताने विचार आव्यो, 'आ तक सारी छे, अमरकुमारनो कांटो काढी नांखवानी! जो तेने राजाने आपी दईअे तो गरीबी अने बला बंने अेक साथे दूर थइ जाय!'

ऋषभदत्त घरमां खावानी सामग्री न होवाथी भोजननी चिंता करतो बेठो हतो। तेनुं सुकाई गयेलुं शरीर तेनी गरीबीनी चाडी खातुं हतुं। तेनी पत्नीअे त्यां आवीने तेने कह्युं, "तमे ढंढेरो सांभळ्यो?" वातमां कोई रस न होय तेम तेणे टूंकमा जणाव्युं, "हा।" ब्राह्मणी बोली, "तो पछी केम ऊठता नथी? आ भूखनुं दु:ख तो केम पण सहन थतुं नथी।" ऋषभदत्त अरुचि साथे बोल्यो, "सोनैया तो बत्रीस लक्षणा पुत्रना बदलामां मळवाना छे, फोगटमां नहि।" ब्राह्मण समज्या नथी तेम जणातां ब्राह्मणीअे पोतानो पापी विचार प्रगट कर्यो, "आपणो अमरियो छे ने! तेने आपी दईअे, बदलामां सारा पैसा मळशे।" ब्राह्मणने सांभळीने आंचको लाग्यो। ते विचारवा लाग्यो, 'दीकरा जेवो दीकरो केम दई देवाय?'

भूखनां दु:ख आगळ तो भलभला ओगळी जाय छे अने आ तो अेक गरीब ब्राह्मण हतो। ते पण भूख ने दु:खथी कंटाळी गयो हतो। अंते मन मनावीने तेणे ब्राह्मणीनी वात मानी लीधी। ऋषभदत्ते पोताना

वहालसोया बाळकने राजाने सोंपी दीधो। अमरकुमार खूब रड्यो, करगर्यो, पण मातापिता मान्यां नहि। अने अमरकुमारना बदलामां सोनैया मेळव्या।

लोको तेमनी टीका करवा लाग्या : 'आ ते मातापिता छे के जीवता राक्षस? धननी खातर कोई आवा सुंदर पुत्रनी बलि चडावी दे, राजाने सोंपी दे? धिक्कार छे तेमने! चित्रशाळामां अमरकुमारनी बलि देवानी तैयारी थई रही हती। अग्निनी भडभडती ज्वालाओ नीकळे छे। लोको भेगा थईने वातो करे छे, 'आ तो केवो अनर्थ छे? राजामां दया नथी?' राजाने कहेवानी कोईनामां हिंमत नथी, पण मनमां खूब दु:खी थाय छे। तो वळी कोई निर्दय माणसो मातापितानो पक्ष लईने खुश थाय छे! केवो विचित्र संसार? कोईने जे वातनुं दु:ख छे ते ज बीजा माटे खुशीनुं कारण छे!

राजसेवको अमरकुमारने लईने चित्रशाळामां हाजर थया। अमरकुमारनी आंखों तो रडी रडीने सूझी गई हती। पण हवे तो ते रडे के ना रडे बधुं सरखुं ज हतुं। ज्यां मातापिता ज दुश्मन बनी गया त्यां बीजुं कोण सहाय करे? मरवा सिवाय कोई उपाय देखातो न हतो।

अमरकुमार स्वस्थ थवानो प्रयत्न करवा लाग्यो। विचार करतां करतां अचानक तेने कोई जैन मुनिअे शिखडावेलो **'नवकार मंत्र'** याद आव्यो। आ तो जाणे डूबताने नावडी मळी! बेसहाराने सहारो मल्यो! तेने भारे आनंद थई गयो। मनने मजबूत करी, अेकाग्रचित्ते तेणे अतूट श्रद्धा अने भक्ति साथे नवकारनुं रटण कर्युं। **'नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोअे सव्व साहूणं'** अेम रटण करतां अमरकुमार शीतळ अने सुगंधी पाणीना होजमां प्रवेशतो होय तेम आगमां प्रवेशी गयो।

अचानक राजा श्रेणिक चक्कर खाईने नीचे जमीन पर बेहोश पडी गया। मंत्री तेमने शुद्धिमां लावववा उपाय करवा लाग्या। वैदो पण आवी उपचार करवा लाग्या, पण तेथी कांई ज फरक न पडयो। सौना मनमां थयुं के 'नक्की अमरकुमारने दु:ख दीधुं तेनो बदलो मल्यो छे।'

अमरकुमार तो खडकायेली चितामां कोई योगीनी जेम नवकार गणतो, ध्यान धरीने बेठो हतो। सौने थयुं के 'आ बाळकमां घणी शक्ति छे।' आ तरफ सळगावेली चित्ता शांत थई गई, पण अमरकुमारने ऊनी आंच पण न आवी। सौ तेनां चरणोमां पडी राजाने शुद्धिमां लावववा माटे विनंती करवा लाग्या। अमरकुमारे लोकोने कह्युं, "मने राजा पर जरा पण क्रोध नथी आव्यो अने में राजानुं खराब पण इच्छ्युं नथी। माराथी बने तो राजाने साजा करवा हुं प्रयत्न करुं छुं।' अेम कही तेणे नवकार बोलीने राजा प

पाणी छांटयुं। राजाने शुद्धि आववा मांडी अने ते तरत आळस मरडीने बेठो थयो। लोको अमरकुमारना वखाण करवा लाग्या। श्रेणिक राजाअे तेने वहालथी छाती साथे लगाव्यो अने कह्युं, "हे वत्स! मने माफ कर। तुं मांगे ते हुं तने आपीश।"

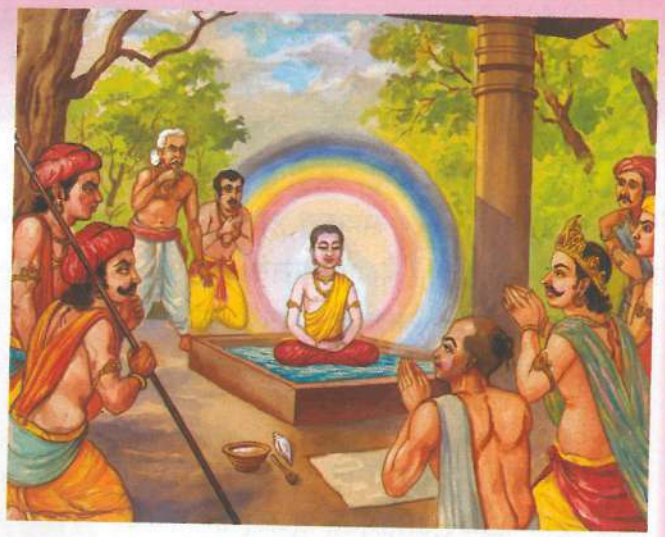

अमरकुमारे कह्युं, "हे राजन, मारे कांई जोईतुं नथी। मारी पासे तो मारो नवकार मंत्र छे, ते श्रेष्ठ छे। संसारनां बधां दु:खोनो नाश करीने अनंत सुख आपवानी तेमां शक्ति छे।" तेने थयुं के 'संसार आखो स्वार्थनो सगो छे। अरे, खुद मातापिता पण!' आवा संसारनी असारता जाणी ते अमरकुमारे वैराग्य साथे दीक्षा लीधी अने सर्व दु:खोनो अंत कर्यो।

धन्य छे अमरकुमारनी दृढताने...धन्य छे तेनी श्रद्धाने...

अपेक्षित प्रश्नो

(१) श्रेणिक राजानो ढंढेरो शुं हतो? (२) अमरकुमार कया कारणोथी जैन धर्मना इतिहासमां अमर थई गया? (३) शुद्धि आव्या पछी राजाअे अमरकुमारने शुं मांगवानुं कह्युं? अमरकुमारे शुं जवाब आप्यो?

कथा : 3 अतिमुक्त कुमार

पोलासपुर नगरना राजा **विजयसेनने** ाणी **श्रीदेवी** द्वारा **अतिमुक्त कुमारनो** जन्म थयो। बाळकुमार लगभग सात वरसना हता अने बाळको साथे रमी रह्या हता. ते समये श्रमण भगवान महावीर स्वामी **पोलासपुर** धार्या अने श्रीवन उद्यानमां बिराजमान थया। ेपना सुशिष्य **गणधर श्री गौतम स्वामी** ब्ठुना पारणा माटे गोचरी लेवा नगरमां गया।

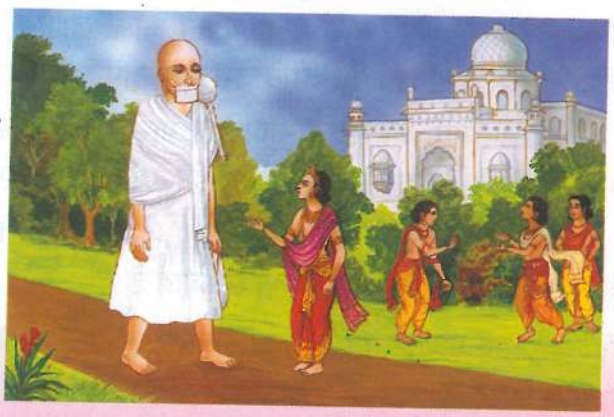

तेओ ज्यां राजकुमार अतिमुक्त कुमार आदि रमता हता, ते '**इन्द्रस्थान**' नामे जग्या पासेथी पसार थया। अतिमुक्त कुमारनी दृष्टि गणधर गौतम पर पडी अने तेमना तरफ आकर्षित थया अने पासे आवीने प्रश्न पूछ्यो, "महात्मन्! आप कोण छो? अने कया कारणथी आप कई तरफ जई रह्या छो?"

गौतम गणधरे कह्युं, "देवानुप्रिय, हुं जैन साधु छुं। आत्मकल्याण करवा माटे में दीक्षा ग्रहण करी छे। अहिंसा आदि पांच महाव्रत, त्रण गुप्ति, रात्रिभोजन त्याग आदि नियमनी हुं आराधना करुं छुं अने छट्ठना पारणे छट्ठ (बे उपवासना पारणे बे उपवास) करी तप करुं छुं। आजे मारा छट्ठ उपवासनुं पारणुं छे, तेथी नगरमां गोचरी लेवा जाऊं छुं।"

"चालो, हुं पण तमने गोचरी वहोरावा आवुं छुं।" कहीने अतिमुक्त राजकुमारे गणधर गौतमनी आंगळी पकडी लीधी अने चालवा लाग्या। गौतम स्वामीने लईने ते राजमहेलमां आव्या। राणी श्रीदेवी गौतम गणधरने जोईने आनंदित थई अने आसन परथी ऊठीने तेमनुं स्वागत कर्युं। गौतम गणधरने वंदन नमस्कार कर्या, आहार-पाणी वहोराव्या अने आदर सहित सात-आठ डगलां तेमनी पाछळ गयां।

अतिमुक्ते गणधर गौतम स्वामीने पूछ्युं, "महात्मन्! आपनुं घर क्यां छे अने आप क्यां रहो छो?"

"देवानुप्रिय, मारा धर्मगुरु भगवान महावीर स्वामी आ नगरनी बहार **श्रीवन** उद्यानमां बिराजे छे, त्यां हुं रहुं छुं।" गौतम स्वामीअे कह्युं।

"हुं पण आपनी साथे भगवानने वंदन करवा आवुं छुं।"

"जेवी तमारी इच्छा।" गौतम स्वामीअे कह्युं।

भगवान पासे पहोंचीने अतिमुक्ते वंदन कर्या। भगवाने तेमने धर्मोपदेश आप्यो, जेनाथी **तेमने वैराग्य उत्पन्न थयो**। अतिमुक्त कुमारे भगवानने कह्युं, "आपनो उपदेश सांभळीने मने श्रद्धा जागी अने वैराग्य थयो छे। तेथी मारां मातापितानी आज्ञा लईने हुं तमारी पासे दीक्षा लेवा मांगुं छुं।" भगवाने तेने दीक्षा योग्य जाणीने कह्युं, "तमने जेम सुख ऊपजे अेम करो। आत्म कल्याण करवामां मोडुं न करो।"

राजकुमार अतिमुक्त मातापिता पासे आवीने कहेवा लाग्या, "आपनी आज्ञा होय तो हुं श्रमण भगवान महावीर स्वामी पासे दीक्षा लईने तेमना शिष्य बनी धर्मनी आराधना करुं।"

मातापिताअे विस्मय पामीने कह्युं, "अरे पुत्र, तमे तो हजु नाना छो। तमने दीक्षा अने संयम अेटले शुं ते न समजाय। तमने धर्ममां शुं समजाय छे?"

राजकुमार अतिमुक्ते कह्युं, "माता! हुं नानो छुं, **परन्तु जे वस्तु जाणुं छुं ते नथी जाणतो अने जे नथी जाणतो ते जाणुं छुं।**"

राजकुमार अतिमुक्तनी गूढ वात पर आश्चर्य थई मातापिताअे पूछ्युं, "शुं कह्युं ? पुत्र स्पष्ट करो। अमने तमारी वात न समजाई।"

राजकुमार अतिमुक्ते कह्युं, "हुं अे जाणुं छुं के जेणे जन्म लीधो छे ते अवश्य मरशे परन्तु हुं अे नथी जाणतो के क्यां, केवी रीते अने क्यारे मृत्यु थशे। हुं अे नथी जाणतो के जीव कया कर्मोथी नारकी, तिर्यंच, मनुष्य अने देवगतिमां उत्पन्न थाय छे। परन्तु अेटलुं अवश्य जाणुं छुं के जीव पोतानां कर्मोथी ज चार गतिमां उत्पन्न थाय छे।" पुत्रनी आवी बुद्धि अने वैराग्यपूर्ण वात जाणीने मातापिता आश्चर्य चकित थई गयां।

तेमणे राजकुमार अतिमुक्तने संयमनी कठोर साधना अने तेमां आवतां विघ्न अने परिषह आदिनुं वर्णन कर्युं तथा ते कष्टो सहन करवा कठिन छे ते समजाव्युं, लोखंडना चणा चाववा जेवुं अघरुं काम छे। आम अनेक प्रकारे समजावीने तेने रोकवानो प्रयत्न कर्यो। परन्तु पुत्रनी दृढता सामे तेमनुं कांई न चाल्युं अने दीक्षानी आज्ञा आपी। राजकुमार अतिमुक्तनी तुरंत दीक्षा थई गई।

अेकवार चोमासामां अतिमुक्त मुनि स्थविर मुनिओ साथे शरीरना काम माटे बहार गया हता। त्यारे तेमणे अेक नानकडुं पाणीनुं झरणुं वहेतुं जोयुं। बालसहज चेष्टाथी तेमणे माटीनी पाळी बांधी अने पाणीने रोकी लीधुं तथा तेमां पोतानुं पात्रुं पाणीमां तरतुं छोडी दीधुं। 'मारी होडी पाणीमां तरे छे, मारी होडी पाणीमां तरे छे' अेम बोलवा लाग्या।

अतिमुक्त मुनिनुं आ काम वडील संतोने पसंद न पडयुं। तेओ चूपचाप पोताना स्थाने पाछा आव्या अने भगवान महावीरने पात्रुं पाणीमां तरावानी वात करी। भगवाने ते साधुओने कह्युं, "अतिमुक्त मुनि आ भवमां मोक्ष जवाना छे। तमे तेमनी हिलना, निंदा तथा उपेक्षा न करो। तमे तेमनो स्वीकार करीने तेमने साचुं शिक्षण अने गोचरी-पाणी आपीने सेवा करो।"

भगवाननी आज्ञा स्वीकार करीने वडील साधुओ अतिमुक्त मुनिनी सेवा करवा लाग्या। अतिमुक्त अणगारे त्यारबाद ११ अंगसूत्रोनुं (शास्त्रोनुं) अध्ययन कर्युं। गुणरत्न संवत्सर तप तथा अनेक प्रकारनां तप कर्या अने सर्व कर्मोनो नाश करी मोक्षमां गया।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) गौतम स्वामीना गुरु कोण हता? (२) अतिमुक्त कुमारना पितानुं अने गामनुं नाम लखो। (३) माताअे बाळकने धर्म विशे पूछ्युं त्यारे शुं जवाब आप्यो? (४) अतिमुक्त मुनिअे शुं वर्तन कर्युं, जे वडील संतोने पसंद न आव्युं?

काव्य विभाग

काव्य १ : महावीरनां संतान

महावीरनां संतान छे, भाई महावीरना संतान छे,
देव अमारा अरिहंतोने, गुरु अमारा निर्ग्रन्थो,
धर्म दया प्रधान छे, भाई महावीरनां संतान छे...१
श्रद्धा भरी छे अंतरमां ने रंग लाग्यो छे रगरगमां,
नव तत्त्वोनुं ज्ञान छे, भाई महावीरनां संतान छे...२
जन्म्या छे तो धर्मने माटे, जीववुं छे तो धर्मने माटे,
धर्म माटे बलिदान छे, भाई महावीरनां संतान छे...३
जीववुं छे तो धर्मने माटे, मरवुं छे तो धर्मने माटे,
तन मन धन कुरबान छे, भाई महावीरनां संतान छे...४

काव्य २ : नानां नानां भूलकां

नानां नानां भूलकां, जाणे गुलाब फूलडां,
चालो आपणे जइअे, महावीरना शासनमां...
आपणे बनवुं महावीर, आपणे बनवुं गौतम,
जंबू जेवा थईअे, महावीरनां शासनमां... १
चंदनबाळा बनीअे, मृगावती बनीअे,
सीता जेवा थईअे, महावीरनां शासनमां... २
वहेला ऊठी जईअे, नवकार मंत्र गणीअे,
जय जिनेन्द्र बोलीअे, महावीरना शासनमां... ३
हसतां-रमतां रहीअे, गुस्सो नहि करीअे,
संप सेवा साधीअे, महावीरनां शासनमां... ४
मोटा ज्यारे थईअे, शासनने झळकावीअे,
जल्दी मुक्ति वरीअे, महावीरनां शासनमां... ५

काव्य ३ : सकल मंगल

सकल मंगल महीं मंगल, प्रथम मंगल गणुं जेने,
प्रभु ते पंचपरमेष्ठी, नमुं छुं भावथी तेने...१
अरिहंतो जिनेश्वर जे, जीतीने राग द्वेषोने,
वर्या छे ज्ञान केवळने, नमुं छुं भावथी तेने...२
बीजा छे सिद्ध परमात्मा, करीने भस्म कर्मोने,
बिराजे मुक्तिपदमां जे, नमुं छुं भावथी तेने...३
धरी चारित्र आचार्यो, धरावे भव्य जीवोने,
विदारे कर्मना मळने, नमुं छुं भावथी तेने...४
भणावे जे उपाध्यायो, सकल सिद्धांत समजीने,
रमे छे ज्ञाननां दाने, नमुं छुं भावथी तेने...५
अखिल लोके मुनिराजो, जगतना मोह मारीने,
गुंथाया आत्म शुद्धिमां, नमुं छुं भावथी तेने...६
अमारी आत्म शुद्धिनो, वहालो मंत्र बोलीने,
हवे लेवा अमरपदने, नमुं छुं भावथी तेने...७

अभ्यासक्रम : श्रेणी 2

पृ. नं.

सूत्र विभाग (मार्क-60)

1. सामायिक संपूर्ण विधि अर्थ अने ३२ दोष सहित (मार्क-२०)
2. सामायिक पाठ ३ थी ८ पाठावलीना प्रश्नोत्तर (मार्क-१५) 32
3. प्रतिक्रमण मांगलिक सुधी विधि सहित (मार्क-२५)

संस्कार विभाग (मार्क-20)

1. पू. साधु-साध्वीजी साथे आदर्श व्यवहार 40
2. शुं कायम न टके ? 42
3. कोण शरण आपे ? 43
4. मारुं कोण ? 44
5. रोज रोज विचारो 44
6. ज्ञानवृद्धिना ११ बोल 45
7. मारुं आत्म स्वरूप-अरूपी अने अमर 45

कथा विभाग (मार्क-10)

1. पार्श्वनाथ भगवाननी अनुकंपा 47
2. सती चंदनबाळा 49
3. सेवाभावी नंदीषेणमुनि 53

काव्य विभाग (मार्क-10)

1. ओ प्रभु ! तारा चरणकमलमां... 57
2. उपकार कर्या मुज पर... ! 57
3. हे परमात्मा ! 58
4. पंच परमेष्ठि छे सार 58

कुल गुण 100

इरियावहियं सूत्र

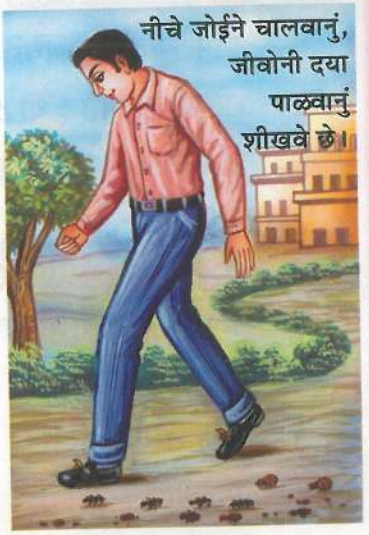

प्रश्न १—सामायिकना त्रीजा पाठनुं नाम शुं छे?

उत्तर—इरियावहियं सूत्र अथवा आलोचना सूत्र।

प्रश्न २—आ पाठने 'आलोचना सूत्र' शा माटे कहे छे?

उत्तर—आ पाठथी रस्तामां जतां-आवतां थती विराधनानी माफी मांगवामां आवे छे, तेथी ते आलोचना सूत्र कहेवाय छे।

प्रश्न ३—आ पाठ आपणने शुं शीखवे छे?

उत्तर—आ पाठ नीचे जोईने चालवानुं, जीवोनी दया पाळवानुं शीखवे छे।

प्रश्न ४—विराधना कोने कहे छे?

उत्तर—विराधना अेटले जीवोनी हिंसा।

प्रश्न ५—विराधना कया कया जीवोनी थई शके छे?

उत्तर—विराधना अेकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय अने पंचेन्द्रिय अेम पांच प्रकारना जीवोनी थई शके छे।

प्रश्न ६—विराधनाना प्रकार केटला अने कया कया?

उत्तर—विराधनाना १० प्रकार छे। अभिहया... थी... जीवियाओ ववरोविया सुधी आ दस प्रकारनी क्रिया द्वारा विराधना थाय छे।

प्रश्न ७—विराधनाथी केवी रीते बची शकाय छे?

उत्तर—दरेक काम जीवहिंसा न थाय के ओछी थाय अेवा विचारथी जतनापूर्वक (ध्यानथी) करवाथी जीवोनी विराधनाथी बची शकाय छे। छतां पण विराधना थई जाय तो पापथी बचवा माटे इरियावहिया करवामां आवे छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) अेकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय अेटले शुं? (२) तमारे आंख जोईअे के कान? शा माटे? (३) माखीने केटली इन्द्रिय होय? कई कई? (४) तमने केटली इन्द्रिय छे? (५) जेने नाक न होय तेने केटली इन्द्रियवाला कहेवाय?

इरियावही क्यारे करवानी होय छे? (प्रश्न पूछाशे नहि, समजण माटे) : (१) सामायिक बांधवानी शरूआतमां, (२) सामायिक, पौषध-आदि व्रत दरम्यान लघुनीत के वडीनीत वगेरे परठ्या बाद, (३) सामायिक, पौषध आदि व्रत दरम्यान सूईने ऊठ्या बाद, (४) सामायिक, दशमुं व्रत आदि व्रत दरम्यान गोचरी जईने आव्या बाद, (५) सामायिक, पौषध आदि व्रत दरम्यान कपडां आदि उपधिनुं प्रतिलेखन कर्या बाद, (६) व्रतमां अेक स्थानेथी बीजा स्थाने जाय त्यारे, (७) सामायिक व्रत बांध्याने २४ मिनिट थई गया पछी, प्रतिक्रमण करवुं होय ते वखते, (८) संवत्सरीने दिवसे आलोचना सांभळवानी शरूआतमां क्षेत्र विशुद्धि करती वखते इरियावहियानो काउस्सग्ग करवामां आवे छे।

पाठ : 4

उत्तरीकरण सूत्र

प्रश्न १—सामायिकनो चोथो पाठशा माटे छे?

उत्तर—सामायिकनो चोथो पाठ आत्मानी विशेष शुद्धि करवा माटे अने काउस्सग्गना आगारो जाणवा माटेनो छे।

प्रश्न २—प्रायश्चित्त अेटले शुं?

उत्तर—जेनाथी पापनो नाश थाय अथवा चित्तनी अने व्रतनी विशुद्धि थाय, तेने प्रायश्चित्त कहे छे।

प्रश्न ३—शल्य अेटले शुं? ते केटलां छे?

उत्तर—शल्य अेटले कांटो। जेनाथी पीडा (दु:ख) थाय। ते त्रण छे—(१) माया, (२) निदान, (३)मिथ्यात्व।

प्रश्न ४—आगार अेटले शुं? काउस्सग्गना आगार केटला अने कया छे?

उत्तर—आगार अेटले छूट। काउस्सग्गना आगार १२ छे। ते आ पाठना 'ऊससिअेणं... थी... सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं' सुधीना शब्दो द्वारा बतावेल छे। (कोईक १३ आगार माने छे।)

प्रश्न ५—काउस्सग्ग अेटले शुं?

उत्तर—काउस्सग्ग अेटले शरीरने स्थिर राखवुं अने शरीरना रागनो त्याग करवो।

प्रश्न ६—अभग्गो अेटले शुं?

उत्तर—अभग्गो अेटले आगारोनुं सेवन थाय तो पण काउस्सग्ग तूटी जतो नथी।

प्रश्न ७—अविराहिओ अेटले शुं?

उत्तर—अविराहिओ अेटले आगारोनां सेवनथी भगवाननी आज्ञानी विराधना थती नथी।

प्रश्न ८—काउस्सग्ग कयो शब्द बोलीने पारवामां आवे छे?

उत्तर—काउस्सग्ग 'नमो अरिहंताण' बोलीने पारवामां आवे छे।

प्रश्न ९—पावाणं कम्माणं अेटले शुं? ते केटला छे?

उत्तर—पावाणं अेटले पाप, ते १८ छे। कम्माणं अेटले कर्म, ते ८ छे।

प्रश्न १०—काउस्सग्गनी विधि तथा फळ दर्शावो।

उत्तर—काउस्सग्ग पलांठी वाळीने बेसीने अथवा ऊभा रहीने बे हाथ नीचे राखी, बंने आंखोने अर्धखुली राखी अेक पदार्थ उपर दृष्टि स्थिर करीने कराय छे।

काउस्सग्गनुं फळ—(१) आत्मा पापकर्मना बोजथी हलको थाय छे। (२) शुभ ध्यानवाळो थाय छे तथा (३) सुख समाधिमां रहे छे।

प्रश्न ११—काउस्सग्ग शा माटे करवामां आवे छे?

उत्तर—(१) पापनुं प्रायश्चित्त करवा माटे, (२) आत्माने विशेष शुद्ध करवा माटे, (३) पाप-कर्मोनो नाश करवा माटे, (४) शल्योथी रहित थवा माटे काउस्सग्ग करवामां आवे छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) आ पाठ शेनो नाश करवानुं सूचवे छे? (२) आ पाठ क्यारे बोलवामां आवे छे? (३) काउस्सग्गनी स्थिति केटली?

पाठ : 5 लोगस्स सूत्र

प्रश्न १—आ पाठनुं बीजुं नाम शुं छे?

उत्तर—आ पाठनुं बीजुं नाम चतुर्विंशति स्तव अथवा उत्कीर्तन सूत्र छे।

प्रश्न २—'चउवीसत्थो' स्तव शा माटे छे?

उत्तर—२४ तीर्थंकरोनी स्तुति करवामां आवी होवाथी लोगस्सने चतुर्विंशति स्तव अर्थात् चउवीसत्थो कहे छे।

प्रश्न ३—तीर्थंकरो कोई उपर प्रसन्न थाय छे?

उत्तर—तीर्थंकरो रागद्वेषथी रहित होवाथी कोई उपर प्रसन्न थतां नथी।

प्रश्न ४—'तित्थयरा मे पसीयंतु' अेवी प्रार्थना शा माटे करवामां आवे छे?

उत्तर—तीर्थंकर जेवा गुणो आपणामां प्रगट थाय, तेमनो उपदेश अंगीकार करवानी भावना दृढ बने अने तेनाथी आपणे मोक्षनी नजीक जईअे, तेथी आवी प्रार्थना करवामां आवे छे।

प्रश्न ५—'कित्तिय' अेटले शुं?

उत्तर—'कित्तिय' अेटले वाणीथी स्तुति करवी।

प्रश्न ६—'वंदिय' अेटले शुं?

उत्तर—'वंदिय' अेटले कायाथी पंचांग नमस्कार करवा।

प्रश्न ७—'महिया' अेटले शुं?

उत्तर—'महिया' अेटले भावथी स्मरण करवुं।

प्रश्न ८—कीर्तन, वंदन अने स्मरणथी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर—कीर्तन, वंदन अने स्मरणथी—(१) ज्ञान वधे छे, (२) श्रद्धा वधे छे, (३) नवां पापकर्मोनो बंध थतो नथी, (४) पुण्यनो बंध थाय छे, (५) जूनां पापकर्मोनो नाश थाय छे।

प्रश्न ९—तीर्थंकरने शेनी उपमा आपवामां आवी छे?

उत्तर—तीर्थंकरने चंद्र, सूर्य अने सागरनी अे त्रण उपमा आपी छे।

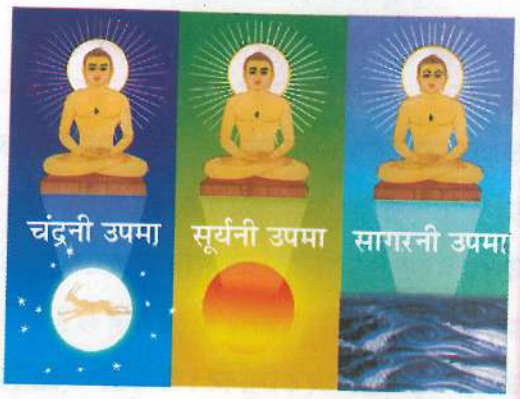

प्रश्न १०—तीर्थंकरो सूर्यथी पण अधिक प्रकाश करे कई रीते?

उत्तर—सूर्य तो मर्यादित क्षेत्रने प्रकाशित करे छे, ज्यारे तीर्थंकरो पोतानां केवळज्ञानथी बधां द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावने प्रकाशित करे छे तेथी तीर्थंकरो सूर्यथी पण अधिक प्रकाश करनारा कहेवाय छे।

प्रश्न ११—लोगस्सनो पाठ शाश्वत (सदा रहे तेवो) छे के अशाश्वत?

उत्तर—लोगस्सनो पाठ शाश्वत छे, परन्तु जे समयमां जेटला तीर्थंकरो थाय तेटला तीर्थंकरोनां नाम बदलाय छे।

प्रश्न १२—लोगस्समां केटला तीर्थंकरोनां बे नाम बतावामां आव्यां छे?

उत्तर—लोगस्समां अेक तीर्थंकरनां बे नाम बताव्यां छे। नवमा श्री सुविधिनाथ स्वामीनुं बीजुं नाम पुष्पदंतप्रभु बतावामां आवेल छे।

प्रश्न १३—लोगस्स द्वारा भगवान पासे शुं मांगवामां आवे छे?

उत्तर—लोगस्स द्वारा भगवान पासे **आरुग्ग**-आरोग्य, आत्मिक शांति, **बोहिलाभं** - बोधिलाभ, समकित, **समाहिवर मुत्तमं** - श्रेष्ठ समाधिभाव आ त्रण वस्तु मांगवामां आवे छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) आ पाठमां नेमनाथ भगवान माटे कयुं नाम आप्युं छे? (२) तीर्थंकर शेनी स्थापना करे? (३) अत्यारे कोई तीर्थंकर आपणी पासे हाजर छे? (४) सामायिकना कया पाठथी तीर्थंकरनी स्तुति थाय छे?

पाठ : 6

करेमि भंते ! सूत्र

प्रश्न १—सामायिक कोने कहे छे ?

उत्तर— १८ पापनी वृत्ति अने प्रवृत्ति छोडी समभाव प्राप्त करवो ते **सामायिक** छे।

बे घडी शांतिथी अेक स्थाने बेसीने भगवानना तथा पोतानां आत्मानां गुणोनुं चिंतन करवुं तथा भगवानना गुणो पोतानामां खीलववा प्रयास करवो ते **सामायिक** छे।

प्रश्न २—सामायिकमां शेनो त्याग करवामां आवे छे ?

उत्तर— सामायिकमां सावद्ययोगनो त्याग करवामां आवे छे।

प्रश्न ३—सावद्ययोग कोने कहे छे ?

उत्तर— १८ पापनी प्रवृत्तिने **सावद्ययोग** कहे छे।

प्रश्न ४—बे घडी (मुहूर्त्त) कोने कहे छे ?

उत्तर— **१ घडी** = २४ मिनिट। **बे घडी** = ४८ मिनिट = १ मुहूर्त।

प्रश्न ५—करण कोने कहे छे ? ते केटला छे ?

उत्तर— **करण** अेटले क्रियानुं साधन अथवा हेतु, करण त्रण छे – करवुं, करावबुं अने अनुमोदवुं।

प्रश्न ६—योग कोने कहे छे ?

उत्तर— **योग** अेटले मन, वचन अने कायानो व्यापार अथवा प्रवृत्ति।

प्रश्न ७—कोटि कोने कहे छे ? ते केटली छे ?

उत्तर— **कोटि** अेटले प्रकार, मर्यादा के छेडो। करण अने योगना गुणाकारथी कोटिनी संख्या मळे छे। जेम के ३ करण × ३ योग = ९ कोटि।

प्रश्न ८—सामायिकनो ओछामां ओछो समय केटलो ?

उत्तर— सामायिकनो ओछामां ओछो समय **बे घडीनो** छे।

प्रश्न ९—सामायिकमां केटली घडी उमेरीने वधारे समायिक करी शकाय ?

उत्तर— सामायिक बे घडीनी होय छे, तेमां बीजी २, ४, ६, ८ आदि घडी उमेरी शकाय।

प्रश्न १०—श्रावकने केटली कोटिअे सामायिकना पच्चक्खाण होय ?

उत्तर— श्रावकने **६** अथवा **८** कोटिअे सामायिकनां पच्चक्खाण होय।

प्रश्न ११—निंदामि अने गरिहामि वच्चे शुं तफावत छे?

उत्तर—'**निंदामि**' अेटले आत्मसाक्षीअे दोषोनी आलोचना। '**गरिहामि**' अेटले गुरुसाक्षीअे दोषोनी आलोचना।

प्रश्न १२—सामायिक करवाथी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर—(१) सावद्ययोगोनो त्याग थाय छे, (२) समभावनी प्राप्ति थाय छे, (३) सर्व जीवोने अभयदान मळे छे, (४) कर्मनिर्जरा थाय छे, शुभ कर्मनो बंध थाय छे, (५) सारी गतिनुं आयुष्य बंधाय अने अनुक्रमे मोक्षनी प्राप्ति थाय छे, (६) बे घडी साधु जेवुं जीवन जीवाय छे अने धर्मनुं वांचन करवानो अवसर प्राप्त थाय छे।

प्रश्न १३—सामायिकमां केवी प्रवृत्ति न करवी जोईअे?

उत्तर—(१) सामायिकमां बहेनोअे भाईओने अने भाईओअे बहेनोने अडवुं नहि, (२) कोईपण जीवने दुःख थाय तेवुं न करवुं, (३) सामायिकना ३२ दोष टाळीने सामायिक करवी, (४) सामायिकमां खुल्ले मोढे बोलवुं नहि, (५) इलेक्ट्रिक साधनो के स्विचोने अडवुं नहि के वापरवा नहि, तेम ज ते चालु-बंध करवा माटे कोईने कहेवुं नहि। आम सामायिकमां कोईपण हिंसा थाय तेवी प्रवृत्ति करवी जोईअे नहि।

प्रश्न १४—सामायिकमां केवी प्रवृत्ति करवी जोईअे?

उत्तर—(१) धार्मिक पुस्तकोनुं वांचन करवुं, (२) नवो नवो अभ्यास कंठस्थ करवो, (३) व्याख्यान सांभळवुं, प्रार्थना करवी, वांचणी सांभळवी, ध्यान धरवुं, काउस्सग्ग करवो, (४) आत्मगुणोनुं तथा बार भावनानुं चिंतन करवुं।

प्रश्न १५—सामायिकमां साधुने गोचरी वहोरावाय?

उत्तर—जेणे सामायिक न करी होय तेमनी आज्ञा लईने गोचरी वहोरावी शकाय।

प्रश्न १६—सामायिकमां साधुने गोचरीना घर बतावाय?

उत्तर—हाथमां गुच्छो लईने, नीचे जोईने, चालीने पू. संत-सतीजीनी साथे गोचरीनां घर बतावाय जई शकाय छे। पाछां आवीने इरियावहियानो काउस्सग्ग करवो जोईअे।

(समजण माटे-प्रश्न पूछाशे नहि) बे घडीनी सामायिक होय तेमां बीजी बे घडीनी सामायिक उमेरवानी विधि शुं छे?

* उत्तर—(१) प्रथम त्रण वंदना तिक्खुत्तोनो पाठ बोलीने करवी, (२) पछी सामायिकनो छट्ठो पाठ बोलवो। तेमां 'काळ थकी बे घडी उपरांत न पारुं त्यां सुधी' ते शब्दोने बदले '**काळ थकी गया काळने भेळवीने बे घडीनां पच्चक्खाण कर्यां हतां तेमा बे घडी उमेरी कुल ४ घडी उपरांत न पारुं त्यां सुधीना पच्चक्खाण**' आ प्रमाणे बोलवुं, (३) त्रण नमोत्थुणं बोली ३ नवकारनो काउस्सग्ग करवो।

प्रश्न १७—जैन साधुनी सामायिकने शुं कहेवाय?

उत्तर—जैन साधुनी सामायिकने '**दीक्षा**' कहेवाय।

प्रश्न १८—सामायिक करतां पहेलां स्नान करवुं जरूरी छे? शा माटे?

उत्तर—सामायिक के अन्य कोईपण धार्मिक क्रिया करतां पहेलां **स्नान करवुं जरूरी नथी**, परन्तु आत्म शुद्धि जरूरी छे।

पाठ : 7 नमोत्थुणं सूत्र

प्रश्न १—आ पाठना कया कया नाम छे?

उत्तर—नमोत्थुणंना नाम—(१) शक्रस्तव अने, (२) प्रणिपात सूत्र।

प्रश्न २—शक्रस्तव अने प्रणिपात सूत्र अेटले शुं?

उत्तर—शक्रेन्द्र आदि इन्द्रो जिनेश्वर देवनी स्तुति करे त्यारे आ पाठ बोले छे, माटे तेने **शक्रस्तव** कहे छे। **प्रणिपात सूत्र** - प्रणिपात अेटले विशेष नमस्कार।

प्रश्न ३—लोगस्स अने नमोत्थुणंमां शुं तफावत छे?

उत्तर—(१) लोगस्समां तीर्थंकरोनी **नाम स्तुति** छे, ज्यारे नमोत्थुणंमां अरिहंत, सिद्धनी **गुण स्तुति** अने **गुण स्मरण** छे, (२) लोगस्स काव्यमय (पद्य) छे, ज्यारे नमोत्थुणं पाठमय (गद्य) छे।

प्रश्न ४—पहेलुं नमोत्थुणं सिद्धने शा माटे करवामां आवे छे?

उत्तर—पहेलुं नमोत्थुणं सिद्धने करवामां आवे छे, कारण के अरिहंत करतां सिद्ध भगवान मोटा छे। सिद्ध भगवाने ८ कर्मक्षय कर्या छे, ज्यारे अरिहंत भगवाने ४ घातिकर्म क्षय कर्या छे अने ४ अघातिकर्म क्षय करवाना बाकी छे।

प्रश्न ५—आ पाठमां मोक्षनी विशेषता बतावता शब्दो कया छे?

उत्तर—सिव, मयल, मरूय, मणंत, मक्खय, मव्वाबाह अने मपुणरावित्ति अे ७ शब्दो द्वारा मोक्षनी विशेषता बतावेल छे।

प्रश्न ६—आपणने तीर्थंकर भगवान शुं देनारा छे?

उत्तर—तीर्थंकर भगवान आपणने आठ दानना देनारा छे—(१) अभयदान, (२) ज्ञानरूपी चक्षु, (३) मोक्ष मार्ग, (४) सर्व जीवोने शरण, (५) संयमरूपी जीवन, (६) बोधि, समकित, (७) चारित्र धर्मनुं दान, (८) धर्मनो उपदेश।

(जो प्रश्नमां पाठना शब्दो पूछे तो अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं अने धम्मदेसयाणं आ ८ शब्दो लखवा।)

अपेक्षित प्रश्नो

(१) नमोत्थुणंमां तीर्थंकरने केटली अने कई कई उपमाओ आपवामां आवी छे? (२) नमोत्थुणंमां अेकेन्द्रिय अने पंचेन्द्रिय जीवोनी उपमा बतावता शब्द क्या क्या? (३) सिद्धनी स्तुति कया पाठथी थाय?

पाठ : ४ अतिचार निवृत्ति सूत्र

प्रश्न १—सामायिकनो आठमो पाठ शेना विशेनो छे?

उत्तर—सामायिकमां जाणतां के अजाणतां लागेला दोषोनी आलोचना करी माफी मांगवा विषेनो छे।

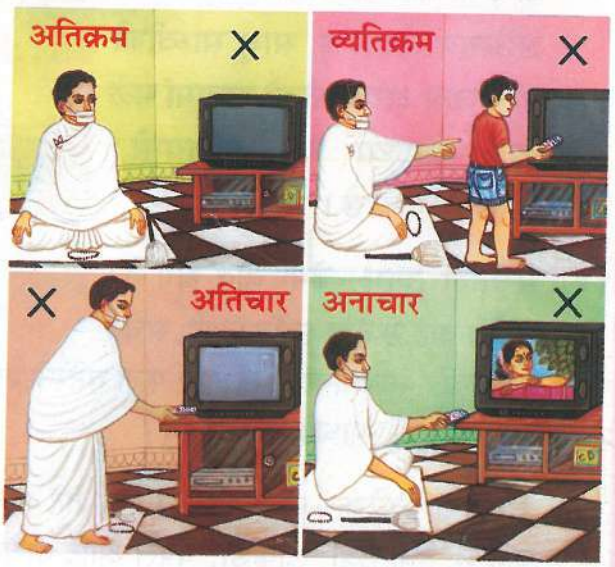

प्रश्न २—पापनां पगथियां केटलां? क्या क्या?

उत्तर—पापनां पगथियां चार छे—अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार।

प्रश्न ३—अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार अेटले शुं?

उत्तर—**अतिक्रम**—लीधेला व्रतने तोडवानी इच्छा करवी।

व्यतिक्रम—व्रतनी मर्यादा तोडवानी सामग्री अेकठी करवी।

अतिचार—व्रतभंग माटे तैयार थवुं/अंशे व्रत तूटे तेवा दोषोनुं सेवन करवुं।

अनाचार—व्रतनी मर्यादाने तोडी सर्वथा व्रत भंग करवो।

प्रश्न ४—सामायिकनां अतिचार केटला?

उत्तर—सामायिकनां पांच अतिचार छे—(१) मण दुप्पणिहाणे, (२) वय दुप्पणिहाणे, (३) काय दुप्पणिहाणे, (४) सामाइयस्स सइ अकरणया, (५) सामाइयस्स सइ अणवट्ठियस्स करणया।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) सामायिक क्यां करवी जोईअे? (२) सामायिकमां केवो वेश पहेरवो जोईअे? (३) सामायिकनां उपकरणो कया कया छे? (४) शुद्ध सामायिक केवी रीते थई शके? (५) सामायिकमां अंग मरोडाय के मेल उताराय? (६) सामायिकमां केटली कइ संज्ञाथी दूर रहेवुं जोइए? (७) सामायिकमां कई कई विकथा न कराय? (८) सामायिकनां केटला दोष?

पाठ : 1

संस्कार विभाग

पू. साधु-साध्वीजी साथे आदर्श व्यवहार

१. पू. साधु-साध्वीजी पासे जईश त्यारे पांच अभिगम साचवीश।

अभिगम अेटले पू. साधु साध्वीजी पासे जतां अथवा तेओ रस्तामां मळे त्यारे पाळवा योग्य नियमो। अभिगम पांच छे।

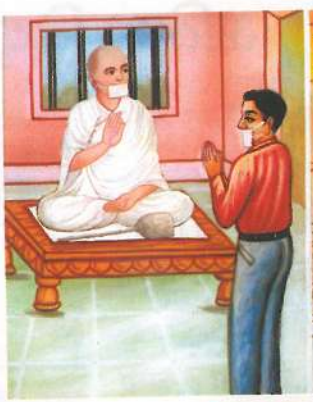

(१) सचेतनो त्याग—जेमां जीव होय तेने **सचेत** कहे छे तेवा सचेत पाणी, सचेत लीलोतरी, मुखमां पान, माथामां फूल वगेरेनो त्याग करी पू. साधु-साध्वीजी पासे जवुं।

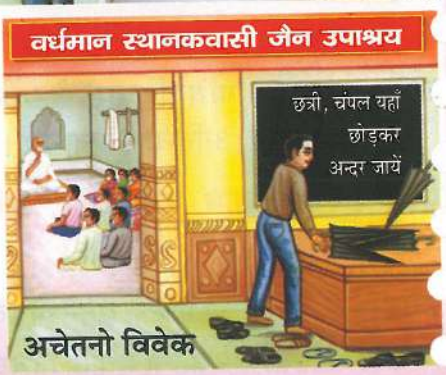

(२) अचेतनो विवेक—जेमां जीव न होय तेने **अचेत** कहे छे, तेवा छत्री, लाकडी, चंपल आदि अचेतनो त्याग करी गुरु पासे जवुं।

(३) **अंजलिकरण**—पू. साधु-साध्वीजीनां दर्शन थतां ज बे हाथ जोडी **मस्तक नमाववुं**। (मत्थअेण वंदामि कहेवुं)

(४) **उत्तरासंग** — मोढे **मुहपत्ति** बांधवी के रूमाल राखवो, खुल्लां मोढे बोलवुं नहि।

(५) **मननी अेकाग्रता**—मननी अेकाग्रताथी व्याख्यान, वांचणी सांभळवा अने स्वाध्याय करवो।

२. हुं तेओनां **दर्शन-वंदन** करवा नियमित दररोज जईश।

तेओने रोज **तिक्खुत्तोनो पाठ** बोली **त्रण वंदना** करीश।

नवुं ज्ञान शीखती वखते त्रण वंदना करीश।

३. दररोज जमतां पहेलां हुं पू. साधु-साध्वीजीने **वहोरावानी भावना भावीश।**

४. तेओ धरे गोचरी माटे पधारे त्यारे '**पधारो, पधारो**' कही अने सात-आठ डगलां आगळ जईश। तेओने **गोचरीनां घर बतावां** जईश।

५. तेओने मारा जीवनना केन्द्रमां राखी तेमनो **आदर, बहुमान, भक्तिभाव** राखीश।

६. तेओ कर्मबंधनने तोडवानो उपदेश आपे ते **रोज सांभळवा जईश।**

अपेक्षित प्रश्नो

(१) अभिगम अेटले शुं? (२) पू. साधु-साध्वीजी रस्तामां मळे त्यारे शुं करवुं? (३) सचेत अेटले शुं? (४) अचेत अेटले शुं? (५) पू. साधु-साध्वीजी केवो उपदेश आपे छे? (६) वंदना केवी रीते करवी?

पाठ : 2

शुं कायम न टके ?

जे कायम ना टकवानुं होय।
तेना पर राग ना करवानो होय।
तेना पर द्वेष ना करवानो होय।
तेना माटे पाप ना करवाना होय।

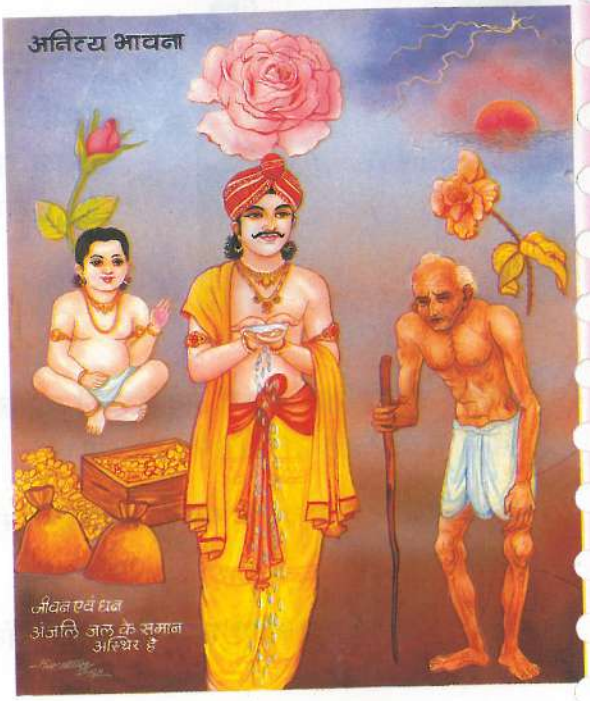

शुं शुं कायम न टके?

1. आरोग्य कायम ना टके।
2. संबंधो कायम नाटके।
3. शरीर कायम ना टके।
4. संपत्ति कायम ना टके।
5. युवानी कायम ना टके।

सुख क्षणिक छे। दु:ख क्षणिक (Temporary) छे।

आ बधुं पाणीना परपोटा (Dew drops) जेवुं नाशवंत छे।

आ बधुं संध्याना रंग जेवुं नाशवंत छे।

सुखथी फूली ना जवुं। दु:खथी डरी ना जवुं।

अनित्य...क्षणिक...नाशवंत वस्तुओ जाणी लई तेना पर ममत्व (मारापणुं) न करवुं।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) शुं शुं कायम ना टके? (२) सुखदु:ख कोना जेवुं नाशवंत छे? (३) जे कायम टकवानुं ना होय तेना पर शुं न कराय?

पाठ : 3

कोण शरण आपे ?

दु:खथी कोण बचावे ?
अशांतिथी कोण बचावे ?
जे पोते दु:खी होय ते बीजाने दु:खथी बचावी शके ?
जे पोते अशांत होय ते बीजाने शांति आपी शके ?
ना रे ना !
आ दुनिया **दु:ख, रोग, क्लेश अशांतिथी** भरेली छे।
घणी घणी **चिंताओ अने उपाधिओथी** भरेली छे।
दुनियामां आपणा आत्माने कोण बचावे ?
कोई ना बचावे, कोई न बचावे।
शत्रुओथी **सैनिको** बचावे ने ?
रोगोथी **डॉक्टरो** बचावे ने ?
तकलीफमां **सगांओ** बचावे ने ?
हा... बचावे खरा, कायम माटे नहि !
रक्षण करे खरां पण कायम माटे नहि।
शत्रुओथी पण घणां मरे छे,
रोगोथी पण घणां मरे छे।
तकलीफमां पण घणां मरे छे।
मरवाथी कोई बचावे खरा ? ना...
दरेक समये **अरिहंत** ज शरण आपे,
सिद्ध ज शरण आपे,
साधु ज शरण आपे, **धर्म** ज शरण आपे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) आ दुनिया शानाथी भरेली छे ? (२) साचुं शरण कोण आपे ? (३) दुनियामां आत्माने कोण बचावे ?

पाठ : 4 मारुं कोण ?

हुं दुनियामां जन्म्यो छुं,
हुं दुनियामां जीवुं छुं,
माटे हुं कहुं छुं के...
माता मारी छे, **पिता** मारा छे,
शरीर मारुं छे, **धन** मारुं छे।
बधां आवुं कहे छे माटे हुं कहुं छुं।
में बधांने मारां मान्या,
माटे... मने **राग** थाय छे अथवा **द्वेष** थाय छे...
तेमना माटे हुं **पाप** करुं छुं...
तेथी हुं **कर्म** बांधुं छुं।
पण भगवान कहे छे के...
दुनियामां मारुं कांई नथी!
दुनियामां मारुं कोई नथी!
हुं दुनियामां कोईनो नथी...
माटे... मारो **आत्मा ज मारो** छे अने
धर्म ज मारो छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) हुं शुं कहुं छुं?
(२) बधांने मारां मानवाथी शुं थाय छे?
(३) दुनियामां मारुं कोण छे?
(४) दुनियामां मारुं शुं नथी?

रोज रोज विचारो... पाठ : 5

नंदीषेण मुनि जेवी सेवा क्यारे करीश?
महावीरनी जेम कष्ट क्यारे सहन करीश?
शालिभद्र जेवो त्याग क्यारे करीश?
धन्नाअणगार जेवो तप क्यारे करीश?
बाल अमरकुमार जेवो श्रद्धावान क्यारे बनीश?
आनंद श्रावकनी जेम बार व्रतो क्यारे पाळीश?
पुणिया जेवी सामायिक क्यारे करीश?
गौतम जेवो विनय क्यारे करीश?
आ बधाअे पण अमारा जेवा नानामांथी मोटा थईने महान कार्यो कर्यां हतां!
अमे पण मोटा थईने अेमना जेवां महान कामो करीशुं, करीशुं करीशुं!
महान थईशुं, भाई महान थईशुं!
महान थई आत्मउद्धार करीशुं!
सारा य जगतनुं कल्याण करीशुं!

अपेक्षित प्रश्नो

(१) सेवा माटे कोने याद करीशुं?
(२) त्याग, तप माटे कोने याद करीशुं?
(३) श्रद्धा अने व्रत माटे कोने याद करीशुं?

पाठ : 6

ज्ञानवृद्धिना ११ बोल

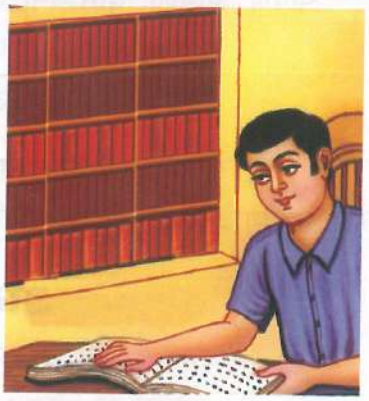

सम्यग्ज्ञाननी प्राप्ति अने वृद्धिने माटे हुं नीचेना बोलनुं ध्यान राखीश—

(१) ज्ञान शीखवा माटे **उद्यम** करवाथी ज्ञान वधे छे।
(२) **ऊंघ घटाडीने** अभ्यास करवाथी ज्ञान वधे छे।
(३) भूख करतां **ओछुं खाईने** अभ्यास करवाथी ज्ञान वधे छे।
(४) **मौन** राखीने अभ्यास करवाथी ज्ञान वधे छे।
(५) **ज्ञानी पासे अभ्यास** करवाथी ज्ञान वधे छे।
(६) **गुरुनो विनय** करीने अभ्यास करवाथी ज्ञान वधे छे।
(७) **संसारना वैराग्य** साथे ज्ञान शीखवाथी ज्ञान वधे छे।
(८) शीखेलुं ज्ञान **वारंवार** फेरववाथी ज्ञान वधे छे।
(९) **पांच इन्द्रियोने वश** करीने अभ्यास करवाथी ज्ञान वधे छे।
(१०) **ब्रह्मचर्यनुं पालन** करीने अभ्यास करवाथी ज्ञान वधे छे।
(११) **कपटरहित तप** करवाथी ज्ञान वधे छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) ज्ञान वृद्धिना बोल केटला छे? (२) शुं वश करवाथी ज्ञान वधे? (३) शेनुं पालन करवाथी ज्ञान वधे? (४) ऊंघ अने भूख घटाडवानो बोल कयो छे?

पाठ : 7

मारुं आत्मस्वरूप : अरूपी अने अमर

अरूपी

आत्मानुं कोई **रूप** नथी,
आत्माने **भार** के **वजन** नथी,
आत्मामां **सुगंध** नथी, **दुर्गंध** नथी।
आत्मामां **रस** नथी, **स्वाद** नथी।
आत्मामां **गरम** के **ठंडो** स्पर्श नथी।
आत्माने **मुलायम** के **खरबचडो** स्पर्श नथी।
आत्माने **यश** नथी, **अपयश** नथी। आत्मा
जाडो नथी, **पातळो** नथी।
आत्मा **मोटो** नथी, **नानो** नथी।
आत्मामां वर्ण, गंध, रस के स्पर्श नथी तेथी

आत्मा **अरूपी** छे।
माटे अरूपी आत्मा आंख द्वारा देखातो नथी।
आपणे आपणी चामडानी आंख द्वारा आवा शुद्ध अने सिद्ध आत्माने जोई शकता नथी।
अरिहंत अने सिद्ध भगवान आत्माने जोई शके छे।
शुद्ध आत्माने जेओ **स्वयं शुद्ध होय** तेवा ज आत्मा जोई शके छे।

माटे ज आवा आत्माने आपणे 'अरूपी' कहीओ छीओ। मोक्षमां सर्व आत्माओ **अरूपी** होय छे। माटे आत्मा देखातो नथी तेथी तेमने **सिद्ध** कहेवाय छे।

अमर

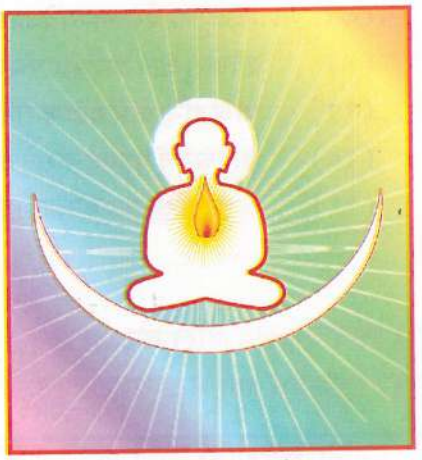

जन्म लेवानो आत्मानो स्वभाव नथी,
मरण अे आत्मानो स्वभाव नथी,
कारणके आत्मा अमर छे।
परंतु... आत्माने कर्मने कारणे जन्म लेवो पडे छे,
मरवुं पडे छे, परंतु
सिद्ध भगवान बनेला कर्मरहित आत्माने
जन्म लेवानुं दु:ख नथी,
मृत्युनी पीडा नथी,
ज्यां जन्म अने मृत्यु नथी तेने मोक्ष कहे छे,
मोक्षमां कोई ज प्रकारनुं दु:ख नथी।
मोक्षमां **आनंद ज आनंद** होय छे।
मोक्षमां आत्मा अमर बनी जाय छे,
धर्मथी आत्मा अमर बनी जाय छे,
धर्मथी आपणे पण मोक्षमां जई शकीअे छीअे।
आपणे पण अमर थई शकीअे छीअे।
मोक्षमां आत्माने **अरूपी** अने **अमर** कहेवाय।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) आत्मानुं वजन केटलुं? स्वाद केवो? स्पर्श केवो? (२) आत्माने कोण जोई शके? (३) मोक्षमां आत्माने शुं कहेवाय? (४) आत्मा केम देखातो नथी? (५) मोक्ष अेटले शुं? (६) जन्म मरण अे कोनो स्वभाव नथी? (७) मोक्षमां शुं होय छे?

कथा : 1

श्री पार्श्वनाथ भगवाननी अनुकंपा

तापसनुं गाम बहार आगमन

गामने पादरे घणां बधां लोको जतां हतां। सौने कुतूहल उत्पन्न थयुं हतुं। वात अेम बनी हती के गामने पादरे 'कमठ' नामनो तापस धूणी धखावीने बेठो हतो।

तेना माथे जटा धारेली हती अने अंगे राख चोपडेली हती। चारे बाजु सळगती धूणीओ वच्चे मात्र अेक लंगोट पहेरीने ते बेठो हतो अने अग्निनी आतापना लेतो हतो। लोको तेने जोवा जतां हतां। त्यां आवेला माणसो तेने जोईने नमन करता हता। तापस पण हाथ ऊंचा करी सौने आशीर्वाद आपतो हतो।

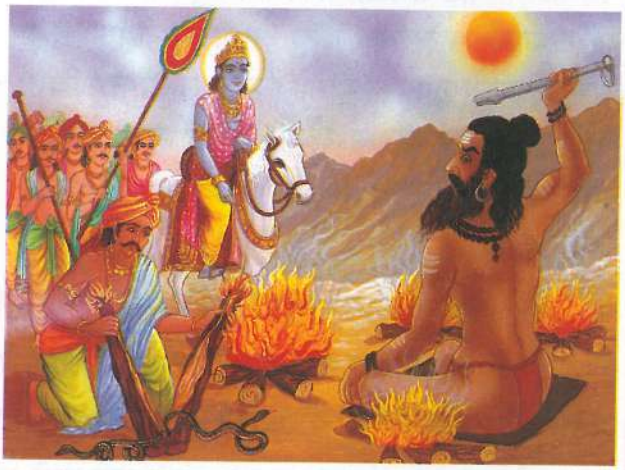

बाल पार्श्वकुमारे नागने बचाव्यो

ते समये भगवान पार्श्वनाथ पोतानी बाल्य अवस्थामां हता। तेओ जन्मथी ज मति, श्रुत अने अवधि अेम त्रण ज्ञानना धणी हता। अवधिज्ञान द्वारा त्यां जवामां उपकारनुं कारण जाणीने ते पण त्यां गया हता। बाल पार्श्वनाथनुं हृदय आ अज्ञानी तापसना तपथी दु:खी हतुं, कारण के धगधगती धूणीमां जे लाकडां होमायां हता, तेना पोलाणमां अेक नाग जीवतो जली रह्यो हतो। बाल पार्श्वकुमारे पोताना अवधि ज्ञान द्वारा आ अनर्थ जोयो। तेमना हृदयमां अनुकंपानो धोध वहेवा लाग्यो।

भगवाने ते तापस पासे जईने कह्युं, "अरे तापस! तमे आ शुं करो छो? आ तमारी धूणीमां लाकडुं नाख्युं छे, तेमां जीवतो नाग जली रह्यो छे। आ तो घोर हिंसा छे! आ तपश्चर्या साची तपश्चर्या नथी। तेनाथी तो लाभने बदले हानि ज थाय छे।"

पार्श्वकुमारनुं कहेवुं सांभळीने अने पोतानुं मानभंग थतुं जोईने तापस गुस्से थईने ताडूक्यो—"अरे छोकरा! तुं केवो बकवाट करे छे? तुं आमां शुं समजे? नाने मोढे मोटी वातो करतां तुं क्यांथी शीख्यो?"

पार्श्वकुमारे तेनी वात उपर कोई ध्यान न आप्युं अने पोताना सेवको द्वारा धूणीमांथी लाकडुं कढावीने चीराव्युं। ते लाकडामांथी अग्निने कारणे जलीने तरफडतो नाग नीकळ्यो। अे जोईने तापसनुं मोढुं फिक्कुं पडी गयुं अने गुस्साना आवेशमां तथा अपमाननो बदलो लेवानी भावना साथे ते त्यांथी भागी छूट्यो।

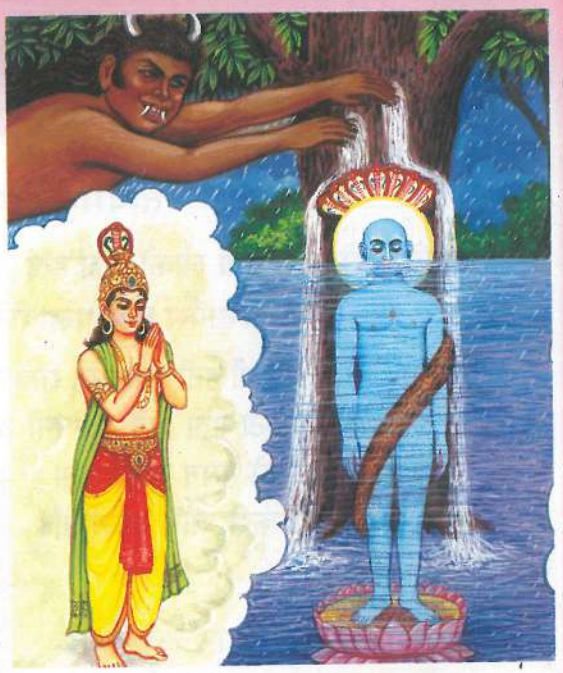

पार्श्वकुमारे दाझेलां नागनी पासे जई **नवकारनो** पाठ संभळाव्यो। आम तेनुं ध्यान नवकार सांभळवामां तल्लीन बन्युं तथा मनोमन तेणे पार्श्वकुमारनो उपकार मान्यो। मृत्यु समये तेनुं चित्त समता अने धर्मध्यानमां रहेवाथी, नाग मृत्यु पामीने **भवनपति** नामना देवोना इन्द्र '**धरणेन्द्र**' तरीके उत्पन्न थयो।

पेलो कमठ तापस आयुष्यने अंते, मरण पामी '**मेघमाळी**' नामे देव थयो।

पार्श्वकुमार मोटा थया अेटले तेमना पिताश्रीअे तेमने राज्य सोंप्युं, पण तेमणे ते स्वीकार्युं नहि, पण अेक वर्ष सुधी दान आपी दीक्षा अंगीकार करी। आ दानने '**वरसीदान**' कहे छे।

अेकवार पार्श्वनाथ भगवान काउस्सग्ग करी ध्यानमां ऊभा हता। ते वखते पेला मेघमाळी देवे (पूर्वभवनो तापस) पूर्वनुं वेर याद करीने द्वेष लावी अनेक जातनी तकलीफो तथा कष्टो आपवानां शरू कर्यां।

आकाशमां वीजळी अने भयानक गर्जनाओ साथे मुशळधार वरसाद वरसाव्यो। तेने कारणे जमीन उपर खूब जोशथी पाणी वहेवा मांड्युं। ते पाणी थोडीवारमां तो भगवानना कान सुधी पहोंची गयुं।

पण भगवान ध्यानमांथी सहेज पण चलित न थया। तेमनुं ध्यान अविचल अने अेकाग्रतापूर्ण हतुं। तेटलामां धरणेन्द्र देवनुं आसन चलायमान (शरीरनुं कोई अंग फरकवुं) थयुं अने तेणे अवधिज्ञान वडे मेघमाळीने भगवानने तकलीफ आपतो जोयो।

धरणेन्द्र शीघ्र गतिथी त्यां आव्या अने वैक्रिय रूप धारण करीने ध्यानस्थ भगवानना माथा उपर फेण मांडी छत्र कर्युं अने भगवानना पग नीचे लांबी दांडीवाळुं कमळ रची दीधुं, जेथी भगवानने पाणी अडे ज नहि। आवा बनावो बनवा छतां पण भगवान तो कोईना पर पण राग के द्वेष कर्या विना पोतानां ध्यानमां लीन रह्या।

धरणेन्द्रे मेघमाळी देवने कठोर शब्दोमां ठपको आपतां कह्युं, "अरे! ओ दुष्ट! तुं आ शुं करे छे? आ त्रण लोकनां नाथने कष्ट आपीने शा माटे तुं पाप कर्मोथी भारे बनी रह्यो छे? तुं तारी माया जलदी संकेली ले!"

मेघमाळी देवने धरणेन्द्रनो भय लाग्यो। तेणे तरत ज बधुं पाणी लइ लीधुं अने माया संकेली लीधी। पछी भगवाननी माफी मांगी, त्यांथी चाल्यो गयो।

श्री पार्श्वनाथ भगवान वर्तमान चोवीशीमां **त्रेवीशमां तीर्थंकर** थया हता। भगवान महावीर स्वामीनां मातापिता त्रिशलादेवी-सिद्धार्थराजा **भगवान पार्श्वनाथनां** ज अनुयायी हतां।

बोलो भगवान पार्श्वनाथनो जय हो!

अपेक्षित प्रश्नो

(१) धूणी धखावीने कोण बेठुं हतुं? तेनुं नाम शुं हतुं? (२) भगवान पार्श्वनाथ बाळक हतां त्यारे केटलां ज्ञान हतां? (३) तापसनुं नाम शुं हतुं? (४) पार्श्वनाथ भगवाने कोने बचाव्यो? (५) पार्श्वनाथ भगवाने नागने शुं संभळाव्युं? (६) तापस मरीने क्यां उत्पन्न थयो? (७) नाग मृत्यु पामीने क्यां उत्पन्न थयो? (८) मेघमाळीने धरणेन्द्रनो भय केम लाग्यो? (९) भगवान महावीरनां मातापिता कोना अनुयायी हतां?

कथा : 2

सती चंदनबाळा

चंपापुरी नगरीनो राजा **दधिवाहन** हतो। तेनी पत्नीनुं नाम **धारिणी** अने पुत्रीनुं नाम **वसुमती** हतुं। मातापिताओ तेने विद्या अने कळामां कुशळ अने उत्तम संस्कारी बनावी हती।

कौशांबी नगरीनो राजा **शतानीक** हतो। ते **मृगावतीने** परण्यो हतो। मृगावती अने धारिणी बे बहेनो हती... कोई अकळ कारणसर बंने राजा वच्चे वेरनां बीज रोपातां शतानीके दधिवाहन राजाने युद्ध करी खत्म करी नांख्यो।

शत्रु राजानां हाथमां पकडाई जवानी बीके धारिणी अने वसुमती त्यांथी नासी गयां। परन्तु कौशांबीना अेक सारथिअे ते बंनेने रक्षण आप्युं। पण **रस्तामां धारिणी राणीनुं स्वरूप जोई तेनी दानत ग्रगडी, त्यारे शीलनुं रक्षण करवा धारिणी मोतने भेटी गयां।** मात्र बार वरसनी नानी वसुमती निराधार बनी गई।

धारिणीनुं अकाळ मृत्यु थवाथी सारथी जरा ढीलो पडी गयो। बाळकुमारी वसुमतीने कौशांबीना बजारमां वेची देवानुं तेणे नक्की कर्युं। कर्मनी गति तो जूओ! अेक वखतनी राजकुमारी आजे **नर बजारमां** वेचाती हती! सद्भाग्ये ते ज नगरना **धनावह** श्रेष्ठि अे ज मार्गथी पसार थया। तेमणे

वसुमतीने जोई अने विचार्युं के—'आ कन्या कोई उच्च खानदाननी छे, नकामी कोई लंपटना हाथमां जशे तेना करतां मारी पत्नी **मूळा**ने अे काममां आवशे।' तेथी तेमणे वसुमतीने खरीदी लीधी अने घरे लई आव्या।

धनावह शेठे घरे आवीने मूळा शेठाणीने कह्युं, 'आने आपणी दीकरी गणीने राखजे।' आ बाळा गुणवंती छे, आपणे तेने **चंदनबाळा** कहीने बोलावीशुं। शेठाणी खुश थयां अने तेओ वसुमतीने वहाल करवा लाग्यां।

चंदनबाळा धीरे-धीरे मोटी थवा लागी अने यौवन तेना अंगेअंगमां प्रगटी रह्युं हतुं। मूळा शेठाणीने थयुं, शेठ आने दीकरीनी जेम राखे छे, पण वखत जतां तेनां यौवनमां लपटाईने तेने परणी बेसशे तो ? मारुं तो जीवतर धूळधाणी थई जशे ! आवी नकामी अने खोटी चिंतामां शेठाणी फसाई गया।

अेकवार शेठाणी पाडोशीने घेर गया हता त्यारे कोई कामथी परवारीने शेठ घरे आव्या। चंदनबाळा विनयपूर्वक तेमनां चरण धोवा लागी। ते वखते तेनो चोटलो छूटी गयो। शेठे पोतानी लाकडीथी तेना वाळ ऊंचा कर्या अने स्नेहथी तेनो चोटलो बांधी दीधो।

संजोगोवशात् ते ज वखते मूळा शेठाणी घरमां आव्यां अने आ दृश्य जोयुं, तेथी ते वधारे दु:खी थयां अने तेमनो वहेम पाको थई गयो के 'हवे शेठ आने जरूर परणी जशे।' चंदना हवे शेठाणीने खूंचवा लागी। तेने थयुं के वेलने तो वधे ते पहेलां ज मूळमांथी ऊखेडी नाखवी जोईअे, माटे ते योग्य समयनी राह जोवा लागी।

थोडा दिवस पछी धनावह शेठ त्रण-चार दिवस माटे बहारगाम गया। त्यारे मूळा शेठाणीअे चंदनबाळाने बोलावी कडवां वचनो कह्यां। तेनां माथानां वाळ मूंडावी नाख्या, पगमां बेडी नाखी अने घरनां भोंयरांमां गुप्त रीते पूरीने ताळुं दई दीधुं।

आ तरफ चंदनबाळा विचार करे छे—'मारां कर्म ज अेवां छे। रस्तामां मातानुं मृत्यु थयुं, पितानुं घ छूटी गयुं, ढोरनी जेम बजारमां वेचाणी ! पण सद्नसीबे शेठना हाथमां आवी जवाथी बची गई छुं। आजे

बहु सारुं थयुं के मने अेकांत मल्युं। हवे अहीं हुं धर्मध्यान करीश।' आम विचारती मनमां पण मूळा शेठाणी उपर द्वेष न कर्यो।

त्रण दिवस पछी बहारगामथी शेठ आव्या। चंदनबाळा न देखातां तेनी तपास करी। अनेक जग्याअे शोध कर्या बाद चंदनबाळा भोंयरांमांथी मळी आवी। तेनी आवी दयाजनक हालत जोईने शेठने दु:ख थयुं। त्रण दिवस वीत्या पण चंदनबाळाने अन्न के पाणी मळ्यां नहोतां। तेनुं गळुं अने शरीर शोषाईने कृश थई गयां हतां। मृत्यु जाणे डोकियां करतुं होय तेवुं लागतुं हतुं। छतां ते तो नवकार मंत्रनुं स्मरण करवामां लीन हती।

'आ बधुं कार्य मूळा शेठाणीनुं छे' तेवी शेठने खबर पडी गई। शेठे तरत ज चंदनबाळा माटे खावानुं शोध्युं, पण मूळा शेठाणी रसोईगृहने ताळुं मारीने बहार चाल्यां गयां हतां। दासी माटे बनेला अडदना बाकुळा अेक सूपडामां मूकीने शेठे तेने खावा आप्या। तेने घरना ऊंबरे बेसाडी तेनी बेडीओ कापवा माटे शेठ लुहारने बोलाववा गया। आवी विकट परिस्थितिमां पण चंदनबाळा विचारे छे के **'मारे आंगणे कोई संत पधारे तो तेने भोजन आपीने पछी मारुं पारणुं करुं।'**

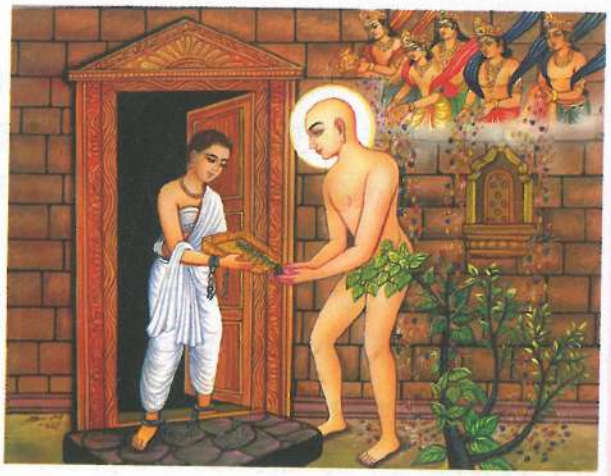

कौशांबी नगरीमां ते वखते भगवान महावीर स्वामी बिराजी रह्या हता। तेमणे कोई विकट अभिग्रह धारण कर्यो हतो। नगरजनो, भाविक श्रावक अने श्राविकाओअे भगवाननो अभिग्रह पूरो थाय तेवो प्रयत्न करवामां कोई कचाश राखी नहोती, छतां पण केमेय करीने तेमनो अभिग्रह शुं छे ते जणातुं नहोतुं अने तेओ पारणुं करता नहोता! राज्यमां राजा, राणी अने नगरजनो सहु कोई तेमना पारणांनी चिंतामां रहेतां हतां। कोण जाणे क्यारे पारणुं थशे? आमने आम पांच महिना उपर पच्चीस दिवस आजे पूरा थया हता। 'जो कोई स्त्री उंबरा पर बेठी होय, तेनो अेक पग घरनां उंबरानी अंदर ने बीजो पग उंबरानी बहार होय, कुंवारी राजकुमारी होय, पण दासीपणुं पामी होय, पगमां बेडी होय, माथे मुंडन होय, रुदन करती होय, ते मने भिक्षा वहोरावे तो पारणुं करुं।' तेवो दुष्कर अभिग्रह तेमनो हतो।

ते भगवान महावीर आजे पारणा अर्थे फरतां फरतां योगानुयोग चंदनबाळाना ऊंबरे जई चड्या। चंदनबाळा अति हर्ष पामीने तेमने वहोरावा आगळ वधी, पण... त्यां तो भगवान पाछा फर्या। 'ओह! हुं केवी अभागी? आंगणे आवेला संत पाछा जाय?' आवो विचार थतां ते जोरथी रडी पडी। तेना रुदननो अवाज जाणीने भगवाने पाछळ जोयुं अने पोतानो अभिग्रह पूरो थयो जाणी भिक्षा माटे पोताना हाथ फेलाव्या। चंदनबाळाअे अति उमंग अने भक्तिभाव साथे बाकुळा तेमने वहोराव्या।

ते ज क्षणे देवताओअे साडा बार क्रोड सोनामहोरनी वर्षा करी। चंदनबाळानी बेडीओ तूटी गई अने तेनां आभूषणो सुवर्णनां थई गयां। आकाशमां देवदुंदुभि वागी। मूळा शेठाणी पाछां आव्यां। तेमने पोतानां कृत्य माटे पस्तावो थतां तेणे चंदनबाळानी क्षमा मांगी। विशाळहृदयी चंदनबाळाअे कह्युं, **"जो आम न थयुं होत तो भगवानने आहार वहोरावावानुं सौभाग्य मने केवी रीते प्राप्त थात? तमे तो मारा पर अनंतो उपकार कर्यो।"** आवा वचनोथी चंदनबाळाअे मूळा शेठाणीनो क्षोभ आनंदमां फेरवी दीधो। धनावह शेठ पाछा आव्या, ते पण आ दृश्य जोईने अति हर्ष पाम्या।

नगरमां सहुने भगवानना पारणानी खबर पडी गई। कौशांबीना राजा शतानीक अने राणी मृगावती त्यां आव्यां। राणी तो चंदनबाळाने जोतां ज बोली ऊठ्यां, "अरे, आ तो मारी भाणेज (बहेननी दीकरी) वसुमती!" कही तेने हेतथी भेटी पड्यां, धनावह शेठनी संमति लईने तेओ चंदनबाळाने राजमहेले लई गयां।

चंदनबाळा पाछी राजमहेलमां गई, पण धनावह शेठनो उपकार भूली नहि। आटलो वैभव होवा छतां पण अेनुं मन तो धर्ममां ज लागेलुं रहेतुं।

समय जतां भगवान महावीरने केवलज्ञान थयुं। चंदनबाळाने आ वातनी जाण थतां अति हर्ष पामी। तेणे भगवाननी पासे जई चारित्र ग्रहण कर्युं। तेओ भगवाननी सर्व साध्वीओमां प्रथम साध्वी थयां अने **३६,००० साध्वीओनां अग्रणी थयां।** साध्वी तरीके आदर्श जीवन जीवीने तेओ सर्व कर्म खपावी मोक्ष पाम्यां।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) केवी परिस्थितिमां सती चंदनबाळाअे प्रभु महावीर स्वामीने भिक्षा आपी अने पछी शुं बन्युं ते टूंकमां लखो। (२) सती चंदनबाळाना मातापितानुं शुं नाम हतुं? (३) चंदनबाळानी माताअे शील बचाववा शुं कर्युं? (४) भगवान महावीरनो अभिग्रह शुं हतो? (५) मूळा शेठाणीअे चंदनबाळाने शुं शुं दुःख आप्या? (६) चंदनबाळा केटला साध्वीना गुरुणी बन्या? (७) वसुमतीने बजारमां वेंचाती जोईने धनावह शेठे शुं विचार्युं? (८) युवान वसुमतीने जोईने मूळा शेठाणीना मनमां शुं विचार आव्यो? (९) भोंयरामां बेठेली चंदनबाळा शुं विचारे छे? (१०) चंदनबाळानुं जीवन शुं शुं बोधपाठ आपे छे?

कथा : 3

सेवाभावी नंदीषेण मुनि

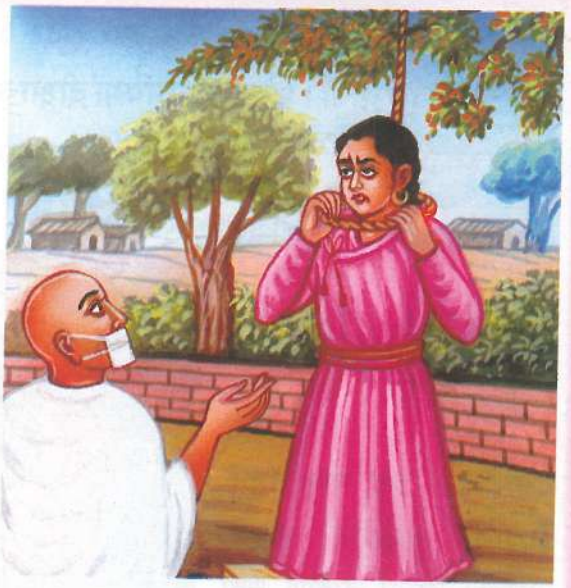

अेक छोकरो अेकांतमां ऊभो छे अने विचारो करे छे, 'कोई मने जोतुं नथी ने ?' कोई जोतुं नथी ते नक्की थया बाद ते गळे फांसो खावा जाय छे। तेवामां अेक संत मुनिराज त्यां आवी चड्या अने तेने अटकावतां बोल्या, "अरे भाई! तुं आ शुं करे छे?" छोकराअे कह्युं, "मरवानो उपाय करुं छुं।" मुनिराजे पूछ्युं, "केम भाई ?तारा पर अेवुं ते कयुं संकट आवी गयुं के तारे आवो मरवानो उपाय विचारवो पड्यो ?" छोकराअे कह्युं, **"हुं बहु दु:खी छुं, नानपणमां मारां मातापितानुं मृत्यु थयुं छे।** मारा मामा दया लावीने मने तेमनां घरे लई गया, पण मारां मामीने मारी अदेखाई आवी। हुं कदरूपो हतो, तेथी मने कोई बोलावतुं नहि अने सौ मने तिरस्कारनी नजरे जोतुं। आ स्थितिमां मारे माटे मरी जवुं ज सारुं छे।"

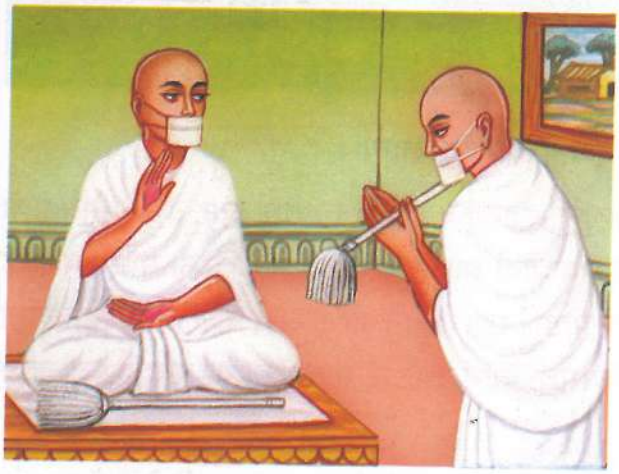

मुनिराजे ते दु:खी बाळकने प्रेमपूर्वक समजाव्यो। तेमणे कह्युं, 'आ बधां तो तारां पूर्वभवनां पापो छे, तेथी तुं दु:खी थाय छे अने ते दु:ख तो तारे भोगववां ज पडशे। आपघात करवाथी तारां पापो तो छूटशे नहि, उपरथी दु:खमां वधारो थशे। अेना करतां तुं तारां बांधेलां कर्मोने शांतिथी अने हसतां मुखे सहन करीश, तो तारुं भलुं थशे।'

छोकरो तो मुनिनां आवां लागणीसभर वचनोथी आश्वासन पाम्यो अने तेमनां चरणे पडीने विनंती करतो बोल्यो, "मने आ संसारमां कोई रस नथी, माटे मने संसारनां आवां दु:खोमांथी छूटवानो कोई मार्ग बतावो।"

मुनिअे कह्युं, "भाई! आ जगतमां केटलाय दु:खी जीवो छे तेमनी प्रेमथी सेवा कर, सेवा करवामां तारुं दु:ख भूलाई जशे। सेवा संसारमां रहीने पण करी शकाय अने साची छकाय जीवोनी दयारूप

आत्मानी सेवा साधु थईने पण करी शकाय! आ बंनेमां साधु थईने सेवा करवी अे उत्तम मार्ग छे। तारी भावना अने शक्ति होय तो साधुजीवनमां रहीने सेवा करजे।"

मुनिनां वचनोनी ते बाळक उपर सुंदर अने धारी असर थई। तेणे ते ज वखते साधु बनी जवानो निर्णय कर्यो। थोडा ज समयमां दीक्षा अंगीकार करी तेणे मुनिव्रत स्वीकार्युं।

हवे तो बाळक मुनि नंदीषेण साधु थई गया अने ते पण सेवा करवी ज तेमनो धर्म बनी गयो। घरडां, अपंग के रोगिष्ठ कोईपण मुनि होय तो तेमनी सेवा करवा तेओ आनंदथी अने उमंगथी दोडी जतां। सर्वने पोताना मानी तेओ सेवानां कार्यमां लागी गया। धीमे धीमे तेमनी सेवाभावनी कीर्ति चोमेर प्रसरी गई अने देवलोकनां इन्द्र पण तेमनी सेवानां वखाण करवा लाग्यां। तेमनां वखाण थतां जोइने बे देवोने तेमनी सेवानी परीक्षा करवानुं मन थयुं।

ते बंने देवो ज्यां मुनि नंदीषेण हतां ते गामनी बहार आव्यां। अेक देव घरडां साधु अने बीजा रोगी साधु बनी त्यां रहेवा लाग्या।

अेक दिवस नंदीषेण मुनि बे उपवासनुं (छट्ठनुं) पारणुं करवानी तैयारीमां हता, ते ज समये पेला घरडां साधु त्यां आव्यां अने बोल्या, "जोयो मोटो सेवाभावी साधु थयो छे ते! आने लोको सेवाभावी कहे छे, गामनी बहार अेक वृद्ध, अशक्त अने रोगी मुनि पीडाई रह्यां छे अने आ तो अहीं माल पाणी उडाववानी तैयारीमां लाग्यो छे। पेला मुनिराजे तो केटलांय दिवसथी खाधुं नथी, केवा अशक्त थई गया छे। जा जईने तेमनी सेवा कर।"

आवां वचनो सांभळतां ज तेमणे अेक पण अन्ननो दाणो मुखमां नांख्या वगर पात्रांने ठेकाणे मूक्यां। आवेलां साधुने कह्युं, "जल्दी मने पेला रोगी अने अशक्त साधु पासे लई जाओ, हुं यथाशक्य तेमनी सेवा चोक्कस करीश।"

बंने साधु गामनी बहार आव्या। मुनि नंदीषेणे ते साधुने नमस्कार कर्या। त्यां तो पेला साधु गुस्सामां बोल्या, "केटलीये वारथी हुं दु:खी थाउं छुं, तने क्यारनो संदेशो मोकलाव्यो छे अने तुं

केटलो मोडो आव्यो? जोई तारी सेवा भावना!" मुनि नंदीषेणे विवेकपूर्वक कह्युं, "माफ करो मुनिराज! मने आवतां जरा मोडुं थई गयुं छे, पण चालो, हुं तमने गामना उपाश्रये लई जाउं।" बीमार साधु आवुं सांभळीने क्रोधथी भभूकी ऊठ्या—"अरे मूर्ख! हुं सहेजे पण हरीफरी शकतो नथी, त्यां तुं मने चालीने जवानी वात करे छे! आवुं कहेतां तने शरम नथी आवती?"

"प्रभु! मारी भूल थई गई, आप चिंता न करो, हुं आपने मारां खभा उपर बेसाडीने लई जईश।" अेम कही तेमणे रोगी मुनिने टेको आपी बेसाडीने, हळवेथी उपाडीने पोताना खभा उपर बेसाडी अने गाम तरफ चालवा लाग्या।

अचानक ते रोगी मुनिनुं वजन भारे ने भारे थवा लाग्युं। तपस्या करनार मुनि नंदीषेणनुं शरीर अशक्त थई गयेलुं हतुं, तेथी उपर बेठेला साधुने उपाडीने तेओ महामहेनते चालता हता। "अरे! युवान थईने तने चालतां पण नथी आवडतुं? चालतां चालतां आम लथडियां केम खाय छे? धूजे छे केम?" साथे चालतां साधु कठोरताथी बोल्या।

आटलुं ओछुं होय तेम खभा उपर बेठेला संत बराड्या, "अल्या तें तो मारुं शरीर साव खोंखरुं करी नाख्युं! चालवामां जराक तो भान राख, आवी रीते सेवा कराती हशे?" अपमान अने क्रूरताभर्यां आवां वचनो बोलायां छतां नंदीषेण मुनि शांतिथी बोल्या, **"मुनिराज! मारी भूल माटे क्षमा मांगुं छुं, हवे हुं वधारे साचवीने चालीश।"**

रोगी मुनिने आटलाथी संतोष न थयो, तेथी तेमणे कह्युं, "मारे कुदरती हाजते जीवुं छे, माटे मने नीचे उतार।" मुनि नंदीषेण तेमने नीचे उतारवा जाय छे, त्यां तो मुनिअे झाडो करी नाख्यो। मुनि नंदिषेणनां कपडां मळमूत्रवाळां थई गयां। तेमनुं शरीर पण गंदुं थई गयुं। चारे बाजु खराब वास आववा मांडी। छतां पण तेमने मनथी पण पेला रोगी मुनि पर द्वेषभाव न कर्यो। परन्तु तेमने मनमां चिंतन थयुं के 'आ रोगी मुनिने केटलुं कष्ट थतुं हशे? अेमने हुं जल्दीथी उपाश्रय लई जउं अने अेवी सारवार करुं के तेओ जलदी सारा अने निरोगी थई जाय।'

थोडीवारमां चालतां चालतां तेओ उपाश्रये पहोंच्या। रोगी मुनिने नीचे उतारी मुनि नंदीषेण मळमूत्र साफ करवानी तैयारी माटे ओरडीमां गया। थोडीवारे बहार आवी जोयुं तो न हता रोगी मुनि के न हता वृद्ध मुनि! तेमनी नजरमां बे देव आव्या।

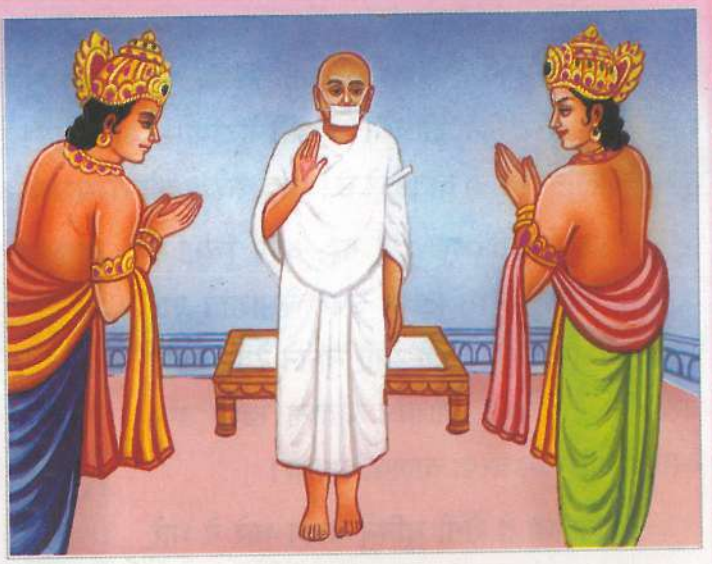

ते देवोओ कह्युं, "धन्य छे तमने मुनि नंदीषेण! तमारी सेवा खरेखर अद्‌भुत अने अनन्य छे। अमे जेवुं जाण्युं हतुं, तेनाथी पण विशेष भक्तिभावथी तमे सेवा करो छो। तमारी प्रशंसा अमे इन्द्र महाराजना मुखेथी जाणी हती, तेथी अमे मुनिवेशे तमारी परीक्षा करवा आव्या। तमने अपमानजनक, गुस्साभरेलां अने कडवां वचनो कह्यां, तमारुं शरीर अशुचिथी गंदु कर्युं, छतां पण तमे श्रद्धा अने करुणाथी सेवा करवामां लीन रह्यां। तमे अमारी कसोटीमांथी पार ऊतर्या छो।"

मुनि नंदीषेणे कह्युं, "हे देव! आ जगतमां वीतरागनो धर्म अने तेनां संतो सिवाय बीजुं शुं महान छे? हुं तो मात्र मारो धर्म, मारी फरज बजावुं छुं, ते सिवाय कांई नथी करतो। अेम करवामां हुं कोईना उपर उपकार पण नथी करतो। मने सेवानां कामथी खूब ज आनंद अने संतोष प्राप्त थाय छे।" आ वात करीने बंने देवो तेमने वंदन करीने, प्रसन्न थईने पाछां चाल्या गया।

धन्य छे सेवापरायण मुनि नंदीषेणने...! युवानो, तमे पण आवी रीते मातापिता तथा वडीलोनी खूब प्रेमथी सेवा करजो।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) दुःखथी पीडित, आपघात करवा तैयार थयेल छोकराने मुनिअे शुं समजाव्युं? (२) दीक्षा लीधा बाद नंदीषेण मुनिना वखाण कोण करवा लाग्युं? तेमनी परीक्षा करवा कोण आव्युं? (३) नंदीषेण मुनि बे उपवासनुं पारणुं करवा बेसता हता त्यारे कोण आव्युं? तेणे तेमने शुं कह्युं? (४) देवोअे नंदीषेण मुनिनी केवी रीते परीक्षा करी? (५) देवोअे नंदीषेण मुनिनी शुं प्रशंसा करी? (६) नंदीषेण मुनिना जीवन परथी आपणे शुं बोधपाठ लेवो जोईअे? (७) मुनि नंदीषेणे देवोने शुं जवाब आप्यो?

१. ओ प्रभु ! तारां चरणकमलमां...

ओ प्रभु! तारा चरणकमलमां, मुज जीवन कुरबान छे
मारा तनने मनथी झंखु, सदा तमारुं ध्यान छे...
मारा जीवननी नौका केरुं, तुज हाथे सुकान छे
चाहे डुबाडे के तुं तारे, परवश मारा प्राण छे...
लोको कहेतां आगळ ना वधशो, सागरमां तुफान छे
पण मुजने तुं साचवनारो, जगनो तात महान छे...
आंधी आवे तूफान आवे, मारुं तो तुजमां ध्यान छे
ज्यां लई जा त्यां जावुं मारे, तुं मारुं निशान छे...
मोक्ष अभिलाषी आ जीवडो, विनवे तुजने आज रे
शरणे आव्यां तारा अमे सहु, तारामां विश्वास छे...

२. उपकार कर्या मुज पर...!

(राग—संसार हे इक नदियां...)

उपकार कर्या मुज पर, अेना गुण हुं विसारुं छुं।
केवो बदलो में वाळयो, हुं अे ज विचारुं छुं... उपकार
परमात्मा उपकारी, मने मंझील दर्शावी;
मारा दुर्गुण ना देख्या, बस करुणा वर्षावी (२)
अेनी आज्ञा धरवामां, हुं हीणपत मानुं छुं... केवो...१
संतोअे समजाव्या, ईश्वरना आदेशो;
उद्धार करे अेवा, मने आप्या उपदेशो (२)
अेना मोंघा वचनोनी, हुं हांसी उडावुं छुं... केवो...२
मने विद्या देनारा, गुरुने में शुं आप्युं;
दक्षिणा देवानुं, में याद नथी राख्युं (२)
कदी भेटो थई जातां, हुं मों संताडुं छुं... केवो...३
मा-बाप मने खूंचे, मने जन्म दीधो जेणे;
मारां पालन पोषणमां, घणो भोग दीधो जेणे (२)
अेनी वृद्धावस्थामां, मारुं घर हुं छोडावुं छुं... केवो...४

३. हे परमात्मा !

(*राग*—हम ना रहेंगे तुम ना रहोगे.....)

हे! परमात्मा तमे जे दीधी छे ते, आज्ञा हंमेशां अमे पाळवाना,
जीवन आखुं तमोअे कहेलां, विचारो प्रमाणे अमे गाळवाना।
हे परमात्मा...(१)

दु:ख पहोंचे ना कोईना दिलने, वर्तन अेवुं रहेशे अमारुं,
मैत्री करीशुं सर्व जीवोनी, इच्छीशुं सौनुं दिलथी सारुं,
वेर भभूके (२) अमारां जो दिलमां, तो प्रेमथी अेने अमे खाळवाना।
हे परमात्मा...(२)

जे सुख पाम्या कर्म प्रतापे, झाझुं गणीने रहीशुं सुखेथी,
यत्न करीशुं पण न फळे तो, मांगणी कोई ना करीशुं मुखेथी,
लई लेवानी (२) जो दानत जागे, तो दानवृत्तिमां अमे वाळवाना।
हे परमात्मा...(३)

देह मळ्यो छे भव तरवाने, धर्म करीशुं अेना सहारे,
खावापीवाना शोख भूलीने, फरवा जईशुं तो द्वार तमारे,
कष्ट दईने (२) तनने तपावी, कचरो करमनो अमे बाळवाना।
हे परमात्मा...(४)

४. पंच परमेष्ठी छे सार...

पंच परमेष्ठी छे सार, बीजुं बधुं असार छे,
अरिहंत देवो सर्व जाणे छे, राग-द्वेषना जीतनार... बीजुं...
सिद्ध परमात्मा मोक्षमां बिराजे, तेमनुं सुख छे अपार... बीजुं...
आचार्य देवो नेता समान छे, पाळे पळावे आचार... बीजुं...
उपाध्यायजी भणे भणावे, ज्ञान बगीचे रमनार... बीजुं...
साधुओ सत्तावीश गुणोथी शोभतां, सद्‌गुणोना भंडार... बीजुं...
संसारना सुखो सर्व क्षणिक छे, धर्ममां शांति अपार... बीजुं...
नमस्कार हो अेवा प्रभुने, तेमनां विना नहि उद्धार... बीजुं...

बीजी श्रेणी अभ्यासक्रम समाप्त।

अभ्यासक्रम : श्रेणी 3

पृ. नं.

सूत्र विभाग (मार्क-55)

1. सामायिक, प्रतिक्रमण सूत्र संपूर्ण विधि सहित (मार्क २५) —
2. प्रतिक्रमण १, २, ३ पाठनां अर्थ, ९९ अतिचारना अर्थ अने सामायिकना अर्थनुं पुनरावर्तन (मार्क २३) —
3. प्रतिक्रमण प्रारंभिक प्रश्नोत्तर १, २, ३ पाठनां प्रश्नोत्तर (मार्क ७) 60

तत्त्व विभाग/संस्कार विभाग (मार्क 25)

1. छकायना बोल सम्पूर्ण तथा छकायनी दया तथा छकायनो कोठो 60
2. कंदमूळना त्यागथी थता लाभो 73
3. जैन धार्मिक पर्वतिथिओ 73
4. मारुं आत्मस्वरूप 74
5. रागनुं स्वरूप (लोभ, माया) 75

कथा विभाग (मार्क 10)

1. नेम-राजुल 76
2. गजसुकुमाळ मुनि 79
3. आनंद श्रावक 81

काव्य विभाग (मार्क 10)

1. रत्नाकर पच्चीसी (1 थी 12 कडी) 83
2. मैत्री भावनुं पवित्र झरणुं 84
3. दया ते सुखनी वेलडी 85

कुल गुण 100

प्रतिक्रमण प्रश्नोत्तर

रोज घरमांथी कचरो न काढो तो ?
घर मलिन बनी जाय।
आत्माने लागेलो पापनो कचरो रोज काढो।
आत्माने रोजरोज साफ करवा प्रतिक्रमण करो।
पापने धोवानी क्रिया '**प्रतिक्रमण**' कहेवाय।
रोज आत्माने पाप लागे छे माटे
रोज प्रतिक्रमण करवुं जोईअे।
रात्रे पाप लागे छे माटे सवारे प्रतिक्रमण करवानुं।
दिवसे पाप लागे छे माटे सांजे प्रतिक्रमण करवानुं।
प्रतिक्रमण करवामां कंटाळो करवो नहि।
नहितर आत्मा खराब थई जशे।

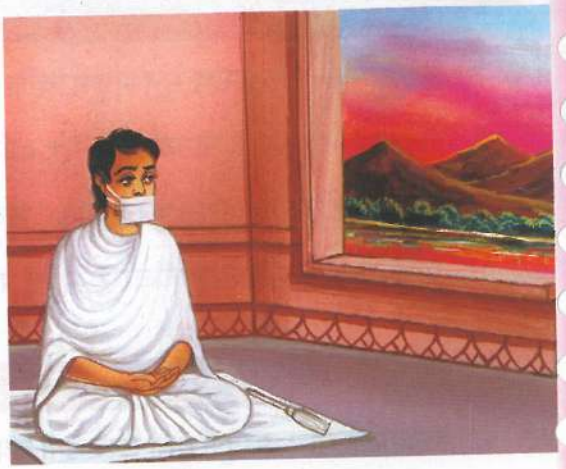

प्रश्न १—प्रतिक्रमण कोने कहेवाय छे ?

उत्तर—प्रतिक्रमण अेटले पापोथी पाछा फरवुं। पापोनी आलोचना करवी। व्रतोमां लागेला अतिचारोथी पाछा फरीने आचारमां आववुं, तेने प्रतिक्रमण कहे छे।

प्रश्न २—प्रतिक्रमणनुं बीजुं नाम शुं छे ?

उत्तर—प्रतिक्रमणनुं बीजुं नाम '**आवश्यक**' सूत्र छे।

प्रश्न ३—आवश्यक सूत्र कोने कहे छे ?

उत्तर—जे सूत्र चतुर्विध संघने माटे सौथी पहेलां जाणवुं अने उभयकाळ-सवार-सांज करवुं जरूरी होय छे, तेने आवश्यक सूत्र कहे छे।

प्रश्न ४—आ आवश्यक सूत्रना केटला आवश्यक छे ?

उत्तर—आ आवश्यक सूत्रना छ आवश्यक (अध्ययन) छे। (१) सामायिक, (२) चउवीसत्थो, (३) वंदना, (४) प्रतिक्रमण, (५) काउस्सग्ग, (६) पच्चक्खाण।

प्रश्न ५—प्रतिक्रमण आवश्यक क्यारे करवामां आवे छे ?

उत्तर—नियमित रूपे सूर्यास्त पछी बे घडी सुधीमां अने सवारे सूर्योदय पहेलां बे घडीनी अंदर अेम बे वखत प्रतिक्रमण करवानी भगवाननी आज्ञा छे।

प्रश्न ६—दररोज बे वखत प्रतिक्रमण (आवश्यक) करवाथी शुं लाभ थाय ?

उत्तर—व्रतोमां लागेला दोषोनुं निवारण थाय छे अने व्रतोनी शुद्धि थाय छे। उत्कृष्ट रस आवे तो तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन करे छे।

प्रश्न ७—काळनी अपेक्षाअे प्रतिक्रमण केटला प्रकारना छे ? कया कया ?

उत्तर—काळनी अपेक्षाअे प्रतिक्रमणनां पांच भेद छे—

(१) **देवसिय प्रतिक्रमण**– दिवस दरम्यान लागेलां पापोनी आलोचना करवा माटे दररोज सांजे सूर्यास्त पछी बे घडी सुधी कराय छे।

(२) **राइय प्रतिक्रमण**– रात्री दरमियान लागेलां पापोनी आलोचना करवा माटे रात्रीना अंतिम भागमां सूर्योदय पहेलां बे घडीनी अंदर कराय छे।

(३) **पक्खिय प्रतिक्रमण**– १५ दिवसमां लागेलां पापोनी आलोचना करवा माटे महिनामां बे वार सांजे, पाक्खी (अमास अने पूनम) पर्वना दिवसे कराय छे।

(४) **चउम्मासिय प्रतिक्रमण**– चार महिनामां लागेलां पापोनी आलोचना करवा माटे कारतक पूर्णिमा, फागण पूर्णिमा तथा अषाढ महिनानी पूर्णिमाना दिवसे सांजे कराय छे।

(५) **संवच्छरिय प्रतिक्रमण**– वर्ष दरम्यान लागेलां पापोनी आलोचना करवा माटे दर वर्षे भादरवा सुद पांचम - संवत्सरीने दिवसे कराय छे।

प्रश्न ८–प्रतिक्रमण शेनुं करवामां आवे छे?

उत्तर– मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय अने अशुभयोगनुं प्रतिक्रमण करवामां आवे छे।

प्रश्न ९–रोज सवार सांज प्रतिक्रमण करवामां आवतुं होवा छतां पाक्खी आदि प्रतिक्रमणनुं महत्त्व शा माटे छे?

उत्तर– जे रीते आपणे आपणा घरमां दररोज सफाई करीअे छीअे। तो पण तहेवारो तथा खास प्रसंगोनां समये वधारे ध्यानथी सफाई करीअे छीअे। तेम नियमित बंने समय प्रतिक्रमण करवा छतां पण पर्वना दिवसोमां आत्मानी शुद्धि माटे पक्खी, चोमासी के संवत्सरी वगेरे प्रतिक्रमण करवामां आवे छे।

पाठ : 1 इच्छामि णं भंते! (प्रतिक्रमण प्रतिज्ञा सूत्र)

प्रश्न १–प्रतिक्रमणनी आज्ञा लेवानो पाठ कयो छे?

उत्तर– **'इच्छामिणं भंते!'** नो पाठ अे प्रतिक्रमणनी आज्ञा लेवानो पाठ छे।

प्रश्न २–आ पाठमां शेनी प्रतिज्ञा करवामां आवे छे?

उत्तर– आ पाठमां प्रतिक्रमण करवानी अने ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तपमां लागेला अतिचारोनुं चिंतन करवा माटे **काउस्सग्ग** करवानी प्रतिज्ञा करवामां आवे छे।

प्रश्न ३–'ज्ञान' अेटले शुं?

उत्तर– **'ज्ञान'** अेटले वस्तुने विशेष स्वरूपे जाणवुं ते।

प्रश्न ४–'दर्शन' अेटले शुं?

उत्तर– **'दर्शन'** अेटले नवतत्त्व पर श्रद्धा राखवी। **दर्शन** अेटले वस्तुनो सामान्य बोध– आ कांईक छे अेटली ज जाणकारी अे दर्शन।

प्रश्न ५–'चरित्ताचरित्ते' नो अर्थ शुं छे?

उत्तर– पापोनो सर्वथा त्याग करवो, तेने **'चारित्र'** कहे छे। परन्तु श्रावक मिथ्यात्वनो सम्पूर्णपणे अने बाकीनां पापोनो आंशिक (शक्ति प्रमाणे) त्याग करे, तेथी श्रावकनां व्रतोने **'चरित्ताचरित्ते'** कहे छे।

प्रश्न ६—'तप' कोने कहे छे?

उत्तर—जे क्रियाथी आत्मा साथे जोडायेलां कर्मनो नाश थाय छे, तेने '**तप**' कहे छे। जेम अग्निमां तपवाथी सोनुं स्वच्छ थाय छे, तेम तप करवाथी कर्म दूर थवाथी आत्मा शुद्ध थाय छे।

प्रश्न ७—अतिचार कोने कहे छे?

उत्तर—व्रतोमां लागवावाळा दोषोने '**अतिचार**' कहे छे।

प्रश्न ८—अतिचार अने अनाचारमां शुं फरक छे?

उत्तर—व्रतनो **अेकांशे** भंग 'अतिचार' अने **सर्वांशे** भंग 'अनाचार' कहेवाय छे। अेटले के पच्चक्खाण भूली जवाथी के तेमां शंका उत्पन्न थवाथी व्रतमां जे दोष लागे ते अतिचार अने व्रतने तोडवुं ते अनाचार छे।

पाठ : 2 'इच्छामि ठामि' नो पाठ

प्रश्न १—प्रतिक्रमणनो टूंकमां सार बतावतो पाठ कयो छे?

उत्तर—प्रतिक्रमणनो सार बतावतो पाठ '**इच्छामि ठामि**' नो पाठ छे।

प्रश्न २—'इच्छामि ठामि' ने सार-पाठ शा माटे कहे छे?

उत्तर—तेमां ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपनी प्राप्ति माटे चार कषायोनो त्याग तथा पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत, चार शिक्षाव्रतरूपी श्रावकधर्ममां लागेला अतिचारोनुं मिच्छामि दुक्कडं देवामां आवे छे, माटे ते सार-पाठ छे।

प्रश्न ३—अणुव्रत कोने कहे छे? ते केटलां छे? कया कया?

उत्तर—जे व्रतोमां हिंसा आदि पापोनो मर्यादित (आंशिक) त्याग करवामां आवे छे, तेने '**अणुव्रत**' कहे छे। महाव्रतनी अपेक्षाअे नाना होवाथी पण अणुव्रत कहेवाय छे। ते अणुव्रत पांच छे—

(१) स्थूल (मोटी) हिंसानो त्याग, (२) स्थूल जूठनो त्याग, (३) स्थूल चोरीनो त्याग, (४) स्वस्त्री संतोष अने परस्त्री सेवननो त्याग, (५) स्थूल परिग्रहनी मर्यादा करवी।

प्रश्न ४—महाव्रत अेटले शुं?

उत्तर—'**महाव्रत**' अेटले जेमां हिंसा, जूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह आदि पापोनो **सम्पूर्ण त्याग** करवामां आवे छे।

प्रश्न ५—अणुव्रत अने महाव्रतनुं पालन जीवनमां कोण करे छे?

उत्तर—अणुव्रतनुं पालन '**श्रावक**' अने महाव्रतनुं पालन '**जैन साधु**' करे छे।

प्रश्न ६—गुणव्रत कोने कहे छे? ते केटलां छे? कया कया?

उत्तर—जे अणुव्रतोना गुणोमां वधारो करनार छे, तेवा व्रतने **गुणव्रत** कहे छे। गुणव्रत त्रण छे—(१) दिशा-परिमाण व्रत, (२) उपभोग परिमाणव्रत, (३) अनर्थदंड विरमण व्रत, (६-७-८मुं व्रत)

प्रश्न ७—शिक्षाव्रत कोने कहे छे? ते केटलां छे? कया कया?

उत्तर—मोक्षप्राप्ति माटे कर्मक्षयनो नियमित अभ्यास करावती क्रियाओनुं शिक्षण आपनार व्रतोने **शिक्षाव्रत**

कहे छे। शिक्षाव्रत चार छे–(१) सामायिक व्रत, (२) देशावगासिक व्रत, (३) पौषध व्रत, (४) अतिथि संविभाग व्रत, (९ थी १२ व्रत)

प्रश्न ८–अकल्पनीय अने अकरणीयमां शो फरक छे?

उत्तर–पोते धारेला नियमथी विरुद्ध आचरण करवुं ते '**अकल्पनीय**' छ। अयोग्य पापकारी आचरण करवुं ते '**अकरणीय**' छे।

प्रश्न ९–खंडियं अने विराहियं मां शो फरक छे?

उत्तर–व्रतनो अेकांशे भंग अेटले **खंडियं** अने सर्वांशे भंग अेटले **विराहियं** छे।

प्रश्न १०–आ पाठमां सौथी मोटुं अेक पाप छुपायुं छे ते कयुं? ने बतावतो शब्द कयो?

उत्तर–'**उस्सुत्तो**'-सूत्र विरुद्ध कर्युं होय। ते सौथी मोटुं पाप छे।

पाठ : 3 'इच्छामि खमासमणो' नो पाठ

प्रश्न १–'इच्छामि खमासमणो' नो पाठशा माटे बोलवामां आवे छे?

उत्तर–**गुरुने वंदन** करवा माटे आ पाठ बोलाय छे।

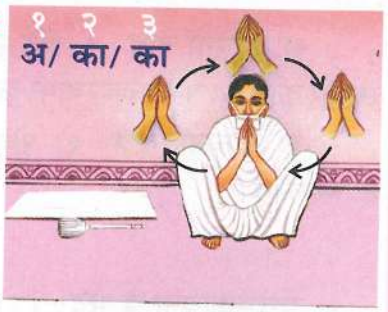

प्रश्न २–आ पाठनुं बीजुं नाम शुं छे?

उत्तर–उत्कृष्ट वंदनानो पाठ अथवा **द्वादशावर्त्त** (बार आवर्त्त) गुरुवंदननो पाठ।

प्रश्न ३–बार आवर्त्तन कया कया छे?

उत्तर–**अहो, कायं, काय, जत्ताभे, जवणि, ज्जं च भे।** आ छ आवर्त्तन अने बीजी वखत आ पाठ बोलाय त्यारे छ आवर्त्तन। अेम १२ आवर्त्तन थाय।

प्रश्न ४–आ पाठ कया आसने बेसीने बोलाय छे?

उत्तर–**उकडु** के **गोदुह** आसने बेसीने बोलाय छे।

प्रश्न ५–खमासमणो अेटले शुं?

उत्तर–खमासमणो अेटले **क्षमाश्रमण**। जे क्षमापूर्वक तप करे ते।

प्रश्न ६–सर्वकाळनी आशातना शब्दनो अर्थ शुं छे?

उत्तर–सर्वकाळनी आशातना अेटले भूतकाळ, भविष्यकाळ अने वर्तमानकाळ, अेम **त्रणे काळनी** बधी आशातनाओ।

प्रश्न ७–'सव्व धम्माइक्कमणाअे' नो अर्थ शुं छे?

उत्तर–'सव्वधम्माइक्कमणाअे' अेटले बधां ज धर्म अनुष्ठानोनुं/नियमोनुं उल्लंघन के विराधनारूप आशातना।

प्रश्न ८–आ पाठथी करातो वंदनाने शा माटे उत्कृष्ट वंदना कहे छे?

उत्तर–आ पाठथी करवामां आवती वंदना शब्द अने क्रिया बंनेमां चडियाती छे माटे।

छ कायनां बोल

आ जगतमां मुख्य बे तत्त्वो छे : जीव अने अजीव।

जे सुखदु:खनो अनुभव करी शके, जेमां जाणवानी अने जोवानी शक्ति होय, तेने **जीव** कहेवाय छे।

जेमां सुखदु:खनो अनुभव करवानी शक्ति नथी, जेनामां जाणवानी अने जोवानी शक्ति नथी, तेने **अजीव** कहे छे। **घडियाळ, छत्री, बूट, चप्पु, तडको, छांयो, अंधारुं** वगेरे अजीव छे।

जीवना मुख्य बे विभाग छे : त्रस अने स्थावर।

त्रस अेटले जे पोतानी मेळे हाली-चाली शके। जे जीव तडकेथी छांये जाय ने छांयेथी तडके जाय। **बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय, पंचेन्द्रियना जीवो त्रस छे।**

स्थावर अेटले जे जीवो पोतानी मेळे हलनचलन न करी शके। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय **अे पांच अेकेन्द्रियना जीवो स्थावर** छे।

छ कायनां बोल

छ कायनां नाम—१. इंदि स्थावर काय*, २. बंभी स्थावर काय, ३. सप्पि स्थावर काय, ४. सुमति स्थावर काय, ५. पयावच्च स्थावर काय, ६. जंगम काय।

छ कायना गोत्र—१. पृथ्वीकाय, २. अप्काय, ३. तेउकाय, ४. वाउकाय, ५. वनस्पतिकाय, ६. त्रसकाय।

प्रथम पृथ्वीकायनो विस्तार

पृथ्वीकायना बे भेद—(१) सूक्ष्म, (२) बादर। ते बंनेना (१) अपर्याप्ता अने (२) पर्याप्ता। अेम कुल चार भेद।

सूक्ष्म ते आखा लोकमां भर्या छे। हण्या हणाय नहि, मार्या मरे नहि, अग्निमां बळे नहि, पाणीमां डूबे नहि, नजरे देखाय नहि, बे भाग थाय नहि, फक्त ज्ञानी ज जाणे अने देखे, तेने सूक्ष्म कहीअे।

बादर ते लोकना देश (अमुक) भागमां भर्या छे। हण्या हणाय, मार्या मरे, अग्निमां बळे, पाणीमां डूबे, नजरे देखाय अथवा न पण देखाय, बे भाग थाय, तेने बादर कहीअे।

---

* काय अेटले समूह अथवा शरीर। अेक ज प्रकारना जीवोना समूहने काय कहे छे।

१. इंदि स्थावर काय—जेना अधिपति (मालिक) इन्द्र छे ते पृथ्वी।
२. बंभी स्थावर काय—जेमां प्रतिबिंब पडे छे ते पाणी। जेनां मालिक ब्रह्मा नामनां देव छे।
३. सप्पि स्थावर काय—जेमां घी (सप्पि) प्रमुख ओगळी जाय ते अग्नि। जेनां मालिक शिल्प नामनां देव छे।
४. सुमति स्थावर काय—जेना वावाथी मति सारी थाय ते वायु। जेनां मालिक सुमति नामनां देव छे।
५. पयावच्च स्थावर काय—जेमांथी दूध (पय) रस नीकळे छे ते वनस्पति। जेनां मालिक प्रजापति नामनां देव छे।
६. जंगम काय—जे पोतानी मेळे हाले चाले तेने त्रस जीवो कहे छे। जेनां मालिक जंगम नामनां देव छे।

बादर पृथ्वीनां नाम–(१) काळी, पीळी, लाल वगेरे रंगनी माटीनी जात, (२) मीठुं, (३) रूपा, सोनानी खाण, (४) अबरख, लोढुं, हीरानी खाण, (५) पारो, (६) पथ्थर, शिला, (७) गेरु, चंदन, स्फटिक आदि रत्न इत्यादि घणी जातनी पृथ्वीकाय छे। ते पृथ्वीकायना अेक कटकामां असंख्याता जीव श्री भगवंते कह्या छे। (असत् कल्पनाथी) ते पृथ्वीकायमांथी जुवार तथा पीलुं जेटली पृथ्वीकाय लईअे अने तेमांथी अेक अेक जीव नीकळी **पारेवा जेवडी काया** करे, तो अेक लाख योजननो जम्बूद्वीप छे, तेमां ते जीवो समाय नहि। अेक पर्याप्तानी नेश्राअे असंख्याता* जीवो अपर्याप्त छे। पृथ्वीकायनुं (पृथ्वीकायना अेक जीवनुं) आयुष्य **जघन्य अंतर्मुहूर्तनुं अने उत्कृष्ट २२,००० वर्षनुं छे। कुळ १२ लाख क्रोड छे। तेनुं संस्थान (आकार) मसुरनी दाळ** जेवुं छे। **वर्ण पीळो** छे। तेनी दया पाळीअे तो मोक्षनां अनंता सुख पामीअे।

बीजो अप्कायनो विस्तार

अप्काय (पाणी)ना बे भेद–सूक्ष्म अने बादर। ते बंनेना (१) अपर्याप्ता अने (२) पर्याप्ता अेम कुल चार भेद।

बादर पाणीनां नाम–(१) वरसाद अने करानां पाणी, (२) झाकळ अने धुम्मसनां पाणी, (३) कूवा, नदी अने तळावनां पाणी, (४) दरिया अने झरणांनां पाणी, (५) खारां अने खाटां पाणी, (६) मीठां अने मोळां पाणी इत्यादि घणी जातनां पाणी छे। तेनां अेक अेक बिंदुमां असंख्याता जीव श्री भगवंते कह्या छे। तेमांथी अेक अेक जीव नीकळीने **सरसवना दाणा जेवडी काया** करे तो अेक लाख योजननो जम्बूद्वीप छे, तेमां ते जीवो समाय नहि। अेक पर्याप्तनी नेश्राअे असंख्याता अपर्याप्ता छे। तेनुं आयुष्य **जघन्य अंतर्मुहूर्तनुं उत्कृष्ट ७,००० वर्षनुं छे। तेनां कुळ ७ लाख क्रोड छे। तेनुं संस्थान (आकार) पाणीना परपोटा जेवुं छे। वर्ण सफेद छे।** तेनी दया पाळीअे तो मोक्षनां अनंता सुख पामीअे।

त्रीजो तेउकायनो विस्तार

तेउकाय (अग्नि) ना बे भेद–सूक्ष्म अने बादर। ते बंनेनां (१) अपर्याप्ता अने (२) पर्याप्ता अेम कुल चार भेद। बादर तेउकाय फक्त अढीद्वीपमां छे।

बादर अग्निनां नाम–(१) चूला अने भट्ठीनो अग्नि, (२) धूमाडी अने तापणीनो अग्नि, (३) चकमक अने वीजळीनो अग्नि, (४) दीवा अने उमाडानो अग्नि, (५) धगधगता लोढानो अग्नि अने अरणीनो अग्नि, (६) दावानळ अने नींभाडानो अग्नि ते उपरांत अग्निना घणा भेद छे। ते अग्निना

* अेक जीव पर्याप्तो थाय त्यारे त्यां ज बीजा साथे उत्पन्न थयेला असंख्याता जीव अपर्याप्त अवस्थामां ज मरे।

अेक तणखामां असंख्याता जीव श्री भगवंते कह्या छे। तेमांथी अेकेको जीव नीकळीने **खसखसना दाणा जेवडी काया** करे तो अेक लाख योजननो जंबूद्वीप छे तेमां पण ते जीवो समाय नहि। अेक पर्याप्तनी नेश्राअे असंख्याता अपर्याप्ता छे। तेनुं आयुष्य **जघन्य अंतर्मुहूर्तनुं उत्कृष्ट त्रण अहोरात्रीनुं छे। तेना कुळ ३ लाख क्रोड छे। तेनुं संस्थान (आकार) सोयना भारा जेवुं छे। वर्ण लाल छे।** तेनी दया पाळीअे तो मोक्षनां अनंता सुख पामीअे।

(समजण माटे अर्थ—(१) अरणीनो अग्नि—अरणी नामनुं लाकडुं घसवाथी उत्पन्न थता अग्नि, (२) दावानळ—जंगलमां झाड घसावाथी उत्पन्न थतो अग्नि। (३) नींभाडानो अग्नि—ज्यां कुंभार माटलांने पकाववा अग्नि करे ते।)

चोथो वाउकायनो विस्तार

वाउकायना बे भेद—सूक्ष्म अने बादर। ते बंनेना—(१) अपर्याप्ता अने (२) पर्याप्ता अेम कुल **चार भेद।**

बादर ते लोकना देश (अमुक) भागमां भर्या छे। हण्या हणाय, मार्या मरे, अग्निमां बळे, पाणीमां डूबे, नजरे देखाय अथवा न पण देखाय, बे भाग थाय, तेने बादर कहीअे।

बादर वायरानां नाम—(१) पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशानो वायरो, (२) ऊंची, नीची अने तिरछी दिशानो वायरो, (३) पूर्वनो अने पश्चिमनो वायरो, (४) वंटोळियो अने मंडलियो वायरो, (५) घन अने तन (पातळो) वायरो, (६) गुंज अने शुद्ध वायरो। अे उपरांत वायुकायना घणां भेद छे। ते वायुकायना अेक वखत फरकवामां असंख्याता जीव श्री भगवंते कह्यां छे। तेमांथी अेक अेक जीव नीकळीने **वडना बीज जेवडी काया** करे तो अेक लाख योजननो जंबूद्वीप छे, तेमां ते जीवो समाय नहि। अेक पर्याप्तानी नेश्राअे असंख्याता अपर्याप्ता छे।

ते बादर वायरो शा थकी हणाय छे? उघाडे मोढे बोलवाथी, चपटी वगाडवाथी, सूपडुं के कपडुं झाटकवाथी, रेंटियो कांतवाथी, वींझणे (हाथ पंखो) वींझवाथी ताळी वगाडवाथी, पंखानी हवाथी, हिंचकें हिंचकवाथी, वाजिंत्र वगाडवाथी, फूंक मारवाथी अे आदि लईने घणी जातनां शस्त्रे करी वायरो हणाय छे। अेकवार उघाडे मोढे बोलवाथी वायरानां असंख्याता जीव हणाय छे। (हिंसा थाय छे)

तेनुं आयुष्य **जघन्य अंतर्मुहूर्तनुं उत्कृष्ट ३००० वर्षनुं** छे। तेनां **कुळ ७ लाख क्रोड** छे। तेनुं **संस्थान ध्वजा पताका** जेवुं छे। **वर्ण नीलो छे।** तेनी दया पाळीअे तो मोक्षनां अनंता सुख पामीअे।

पांचमो वनस्पतिकायनो विस्तार

वनस्पतिकायना बे भेद सूक्ष्म अने बादर। तेमां बादर वनस्पतिना बे भेद प्रत्येक अने साधारण। सूक्ष्म प्रत्येक अने साधारण अे त्रणेनां अपर्याप्ता अने पर्याप्ता मळी वनस्पतिकायना **६ भेद।**

जे वनस्पतिमां अेक शरीरे अेक जीव होय, तेने **प्रत्येक वनस्पति** कहेवाय छे। **प्रत्येक वनस्पतिनां नाम**—(१) आमळा, केरी (आंबो) अने जांबु वगेरे **अेक बीजवाळा**, तथा जामफळ, दाडम वगेरे **घणां बीजवाळा**, (२) रींगणां, तुलसी वगेरे **नीचा गोळ झाड**, (३) गुलाब, जूई, केतकी वगेरे **फूल**, (४) अशोकलता अने पद्मलता वगेरे **लता**, (५) दूधी, तूरिया, कारेला वगेरेना **वेला**, (६) शेरडी, नेतर, वांस वगेरे **गांठवाळां झाड**, (७) कडवाणी वगेरेनां **घास**, (८) सोपारी, खारेक, नाळियेरी, केळां वगेरे **ऊंचां गोळ झाड**, (९) मेथी, तांदळजो, सुवा वगेरेनी **भाजी**, (१०) घउं, जुवार, बाजरी वगेरे **धान्य** (अनाज) तथा मग, मठ, चणा वगेरे **कठोळ**, (११) शिंगोडा, कमळकाकडी, कमल वगेरे **जलवृक्ष**, (१२) बिलाडीना **टोप** अे आदि लईने घणी जातनी प्रत्येक वनस्पति छे।

साधारण अेटले जे वनस्पतिमां अेक शरीरे अनंता जीव होय ते।

साधारण वनस्पतिनां नाम—(१) डुंगळी, (२) लसण, (३) बटेटा, (४) आदु, (५) लीली हळदर, (६) गाजर, (७) मूळा, (८) शक्करिया, (९) सूरण, (१०) बीट, (११) गरमर। अे आदि साधारण वनस्पतिना घणा भेद छे। अेक कंदमूळना कटकामां श्री भगवंते अनंता जीव कह्या छे। **प्रत्येक वनस्पतिनुं आयुष्य जघन्य अंतर्मुहूर्तनुं, उत्कृष्ट १०,००० वर्षनुं छे। साधारण वनस्पतिनुं आयुष्य जघन्य अंतर्मुहूर्तनुं, उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनुं छे। वनस्पतिकायनां कुळ २८ लाख क्रोड छे। तेनुं संस्थान विविध प्रकारनुं छे। वर्ण विविध छे।** तेनी दया पाळीअे तो मोक्षनां अनंता सुख पामीअे।

प्रत्येक वनस्पतिनां वृक्ष १० बोले करी शोभे छे। (१) मूळ, (२) कंद, (३) स्कंध (थड), (४) त्वचा (छाल), (५) शाखा (डाळी), (६) प्रवाल (कुणुं पांदडुं-कुंपण), (७) पत्र (पांदडां), (८) फूल, (९) फळ, (१०) बीज। ते दशेमां पोतपोतानो अेक जीव होय छे अने तेने आश्रये त्रण प्रकारना जीव भगवाने कह्यां छे। संख्याता, असंख्याता अने अनंता। **ते प्रत्येक वनस्पतिनां ऊगतां, कूणां अंकुरामां, (१) चक्र पडे तेमां, (२) जेनुं शरीर भांगतां समान भंग थाय, (३) जेमां तांतणां के रेसां न होय त्यां अनंता जीव होय छे तथा साधारण वनस्पतिमां पण अनंता जीवो होय छे।**

काचुं, ज्यां ज्यां लीलाश छे तेमां (कोथमीरनां पान, फणसी आदि शाकनी छाल वगेरे) असंख्याता जीव होय छे।

पाकी वनस्पतिमां संख्याता जीव होय छे। जेनुं शरीर भांगतां समान भंग न थाय तथा जेमां तांतणा के रेसा होय ते प्रत्येक वनस्पति छे तेमां संख्याता के असंख्याता जीव होय छे।

छट्ठो त्रसकायनो विस्तार

त्रसकाय नां चार भेद–१. बेइन्द्रिय, २. तेइन्द्रिय, ३. चौरेन्द्रिय, ४. पंचेन्द्रिय।

१. बेइन्द्रिय नां बे भेद-अपर्याप्ता अने पर्याप्ता।

बेइन्द्रिय कोने कहीओ? जेने स्पर्शेन्द्रिय (काया) अने रसेन्द्रिय (जीभ) होय, तेने बेइन्द्रिय कहीओ। तेनां नाम–(१) जळो, (२) कीडा, (३) पोरा, (४) करमियां, (५) सरमियां, (६) मामणमुंडा, (७) अळसियां, (८) वांतरां, (९) शंख, (१०) छीप, (११) कोडां, (१२) इयळ अे आदि लईने घणी जातना बेइन्द्रिय जीव छे। तेनुं **आयुष्य जघन्य अंतर्मुहूर्तनुं, उत्कृष्ट बार वर्षनुं।** तेनां **कुळ सात लाख क्रोड।** तेनी दया पाळीअे तो मोक्षनां अनंत सुख पामीअे।

२. तेइन्द्रिय– तेनां बे भेद–अपर्याप्ता अने पर्याप्ता।

तेइन्द्रिय कोने कहीओ? जेने स्पर्शेन्द्रिय (काया), रसेन्द्रिय (जीभ), घ्राणेन्द्रिय (नाक) होय, तेने तेइन्द्रिय कहीअे। तेना नाम–(१) जू, (२) लीख, (३) चांचड, (४) मांकड, (५) कीडी (६) कंथवा, (७) माटलां, (८) धनेडां, (९) जुवा, (१०) इतरडी, (११) कानखजूरा, (१२) धीमेल, (१३) गधैया, (१४) मंकोडा, (१५) उधई अे आदि घणी जातना तेइन्द्रिय जीव छे। तेनुं **आयुष्य जघन्य अंतर्मुहूर्तनुं, उत्कृष्ट ४९ दिवसनुं** छे। तेनां **कुळ आठ लाख क्रोड** छे। तेनी दया पाळीअे तो मोक्षनां अनंत सुख पामीअे।

३. चौरेन्द्रिय– तेनां बे भेद–अपर्याप्ता अने पर्याप्ता।

चौरेन्द्रिय कोने कहीअे? जेने स्पर्शेन्द्रिय (काया), रसेन्द्रिय (जीभ), घ्राणेन्द्रिय (नाक), चक्षुइन्द्रिय (आंख) होय, तेने चौरेन्द्रिय कहीअे। तेनां नाम–(१) माखी, (२) मसलां, (३) डांस, (४) मच्छर, (५) भमरा, (६) तीड, (७) पतंग, (८) करोळियां, (९) कंसारी, (१०) खडमांकडी, (११) वींछी, (१२) बगां, (१३) फुदा अे आदि घणी जातना चौरेन्द्रिय जीव छे। तेनुं आयुष्य **जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनुं, उत्कृष्ट छ मासनुं। तेनां कुळ नव लाख क्रोड** छे। तेनी दया पाळीअे तो मोक्षनां अनंत सुख पामीअे।

४. पंचेन्द्रिय– तेनां चार भेद–१. नारकी, २. तिर्यंच पंचेन्द्रिय, ३. मनुष्य, ४. देव।

पंचेन्द्रिय कोने कहीअे? जेने स्पर्शेन्द्रिय (काया), रसेन्द्रिय (जीभ), घ्राणेन्द्रिय (नाक), चक्षुइन्द्रिय (आंख), श्रोत्रेन्द्रिय (कान) होय, तेने पंचेन्द्रिय कहीअे। तेनां नाम–

१. नारकी–नारकीना सात भेद। ते सात नरकनां नाम–(१) घमा, (२) वंशा, (३) शिला, (४) अंजना, (५) रिष्टा, (६)मघा, (७) माघवती।

आ सात नरकनां गोत्र–(१) रत्नप्रभा, (२) शर्कराप्रभा, (३) वालुकाप्रभा, (४) पंकप्रभा, (५) धूमप्रभा, (६) तमस्प्रभा, (७) तम:तमस्प्रभा। अे सात नरकना अपर्याप्ता अने पर्याप्ता मळीने नारकीना कुल १४ भेद थाय। **नारकीनी स्थिति जघन्य १०,००० वर्षनी, उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनी। तेनां कुळ पच्चीस लाख क्रोड।**

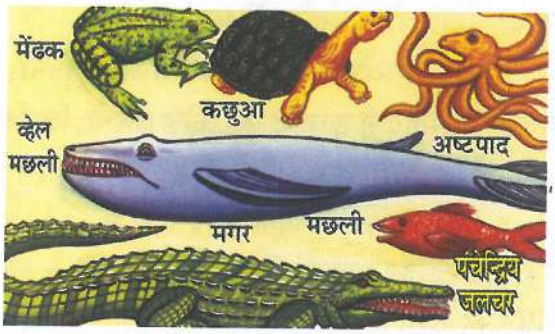

२. तिर्यंच – तिर्यंच पंचेन्द्रियना २० भेद – (१) जळचर, (२) स्थळचर, (३) उरपरिसर्प, (४) भुजपरिसर्प, (५) खेचर। ते पांचेना बे बे भेद छे। १. गर्भज,* २. संमूर्च्छिम, अेम कुल १० भेद। ते १०ना अपर्याप्ता अने पर्याप्ता मळी कुल २० भेद।

(१) जळचर – जे जळमां (पाणीमां) चाले तेने जळचर कहे छे। ते मगरमच्छ, काचबां, देडकां वगेरे जळचरना घणा भेद छे।

---

* **गर्भज** अेटले के जे जीवो स्त्री-पुरुषना संयोग वडे गर्भमां उत्पन्न थाय छे। तेने पांच इन्द्रियो अने मन होय छे। मन होय ते जीवोने **संज्ञी** जीव कहे छे। ते मात्र पंचेन्द्रिय ज होय छे। **सम्मूर्च्छिम** अेटले जे जीवो स्त्री-पुरुषोना संयोग वगर, स्वयं पोतानी मेळे ज उत्पन्न थाय छे, ते जीवोने मन होतुं नथी, तेथी तेओ **असंज्ञी** पण कहेवाय छे। तेमां विकलेन्द्रिय अने पंचेन्द्रिय होय छे।

(२)स्थळचर—जमीन पर चाले तेने स्थळचर कहे छे। ते घोडां, गधेडां, गाय, भेंस, हाथी, गेंडा, वाघ, सिंह वगेरे स्थळचरनां घणां भेद छे।

(३) उरपरिसर्प—जे हैयाभर चाले, पेटे चाले, तेने उरपरिसर्प कहे छे। ते साप, अजगर, अशालियो वगेरे घणां भेद छे।

(४) भुजपरिसर्प—जे भुजाओ करी चाले, तेने भुजपरिसर्प कहे छे। ते उंदर, खिसकोली, गरोळी वगेरे घणां भेद छे।

(५) खेचर—जे जीव आकाशे ऊडे, तेने खेचर कहे छे। ते चामाचीडियां, मोर, कबूतर, चकलां, समुद्ग पंखी, वीतत पंखी वगेरे घणां भेद छे।

गर्भज तिर्यंचनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्तनी, उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी। संमूर्च्छिम तिर्यंचनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्षनी, तिर्यंचना कुळ ५३।। (साडा त्रेपन) लाख क्रोड छे।

३. मनुष्य—तेना बे भेद—(१) गर्भज, (२) संमूर्च्छिम।

(१) गर्भज मनुष्यना २०२ भेद ते—(१) १५ कर्मभूमिना मनुष्य, (२) ३० अकर्मभूमिना मनुष्य, (३) ५६ अंतरद्वीपना मनुष्य अेम १०१ भेद। तेना अपर्याप्ता अने पर्याप्ता मळी कुल २०२ भेद।

(२) संमूर्च्छिम मनुष्य—उपरना १०१ मनुष्यना क्षेत्रमां मनुष्यनी १४ प्रकारनी अशुचिमां उत्पन्न थाय ते १०१ संमुर्च्छिम मनुष्यना अपर्याप्ता। अेम कुल ३०३ भेद थाय।

गर्भज मनुष्यनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्तनी, उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी। संमूर्च्छिम मनुष्यनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्तनी, उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनी। मनुष्यनां **कुळ बार लाख क्रोड।** (संमूर्च्छिम मनुष्य अपर्याप्त अवस्थामां ज मृत्यु पामे छे)

४. देवना मुख्य चार भेद—(१) भवनपति, (२) वाणव्यंतर, (३) ज्योतिषी, (४) वैमानिक। तेमां भवनपतिनां २५, वाणव्यंतरना २६, ज्योतिषीना १०, वैमानिकना ३८ भेद अेम ९९ भेद छे। ते ९९ना अपर्याप्ता अने पर्याप्ता अेम कुल देवना १९८ भेद थाय। **देवनी स्थिति जघन्य १०,००० वर्षनी उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनी। तेनां कुळ २९ लाख क्रोड छे।**

छ कायना जीवोनी दया पाळीअे तो आ भव अने परभवने विषे परमसुखने पामीअे।

छ कायना बोलना आधारे **नारकीना १४, तिर्यंचना ४८, मनुष्यना ३०३ अने देवताना १९८** अेम कुल मळीने **५६३** भेद थाय छे। तेनो विस्तार नीचे कोठा द्वारा बतावामां आव्यो छे।

१. नरक गति : ७ नरकना अपर्याप्ता अने पर्याप्ता अेम कुल	**१४**
२. तिर्यंचना कुल भेद २२+६+२०=	**४८**
तिर्यंच गति : अेकेन्द्रिय (स्थावर) तिर्यंचना २२ भेद	
१. पृथ्वीकायना सूक्ष्म, बादर, तेना अपर्याप्ता, पर्याप्ता	४
२. अप्कायना सूक्ष्म, बादर, तेना अपर्याप्ता, पर्याप्ता	+ ४
३. तेउकायना सूक्ष्म, बादर, तेना अपर्याप्ता, पर्याप्ता	+ ४
४. वाउकायना सूक्ष्म, बादर, तेना अपर्याप्ता, पर्याप्ता	+ ४
५. वनस्पतिकायना सूक्ष्म, प्रत्येक, साधारण अे त्रणेनां अपर्याप्ता, पर्याप्ता	+ ६
विकलेन्द्रिय तिर्यंचना ६ भेद	
१. बेइन्द्रिय, २. तेइन्द्रिय, ३. चौरेन्द्रिय अे त्रणेनां अपर्याप्ता, पर्याप्ता मळीने विकलेन्द्रिय तिर्यंचना ३ × २ भेद	+ ६
तिर्यंच पंचेन्द्रियना २० भेद	
१. जळचरना गर्भज, संमूर्च्छिम तेना अपर्याप्ता, पर्याप्ता	+ ४
२. स्थळचरना गर्भज, संमूर्च्छिम तेना अपर्याप्ता, पर्याप्ता	+ ४
३. उरपरिसर्पना गर्भज, संमूर्च्छिम तेना अपर्याप्ता, पर्याप्ता	+ ४
४. भुजपरिसर्पना गर्भज, संमूर्च्छिम तेना अपर्याप्ता, पर्याप्ता	+ ४
५. खेचरना गर्भज, संमूर्च्छिम तेना अपर्याप्ता, पर्याप्ता	+ ४

३. मनुष्य गति : मनुष्यना कुल ३०३ भेद	**३०३**
१५ कर्मभूमि, ३० अकर्मभूमि, ५६ अंतरद्वीप ते १०१ क्षेत्रना गर्भज-अपर्याप्ता मनुष्य-	१०१
१५ कर्मभूमि, ३० अकर्मभूमि, ५६ अंतरद्वीप ते १०१ क्षेत्रना गर्भज-पर्याप्ता मनुष्य-	+ १०१
ते १०१ क्षेत्रना संमूर्च्छिम अपर्याप्ता मनुष्य	+ १०१

४. देवगति : देवना कुल १९८ भेद	**१९८**
१. भवनपति - २५ना अपर्याप्ता, पर्याप्ता	५०
२. वाणव्यंतर - २६ना अपर्याप्ता, पर्याप्ता	+ ५२
३. ज्योतिषी - १०ना अपर्याप्ता, पर्याप्ता	+ २०
४. वैमानिक - ३८ना अपर्याप्ता, पर्याप्ता	+ ७६

जीवना कुल भेद १४+४८+३०३+१९८ = ५६३

पाठ : 1

छ कायनी दया

छ कायना जीवोनी व्यावहारिक जीवनमां नीचे प्रमाणे दया पाळी शकाय छे।

पृथ्वीकायनी दया– (१) रस्तामां खोदकाम थयुं होय त्यां खोदेली माटी उपर चालवुं नहीं, (२) रमत रमवा के झाडपान वाववा जमीन खोदवी नहीं, (३) भोजनमां उपरथी काचुं मीठुं लेवुं नहीं।

अपकायनी दया– (१) वरसादमां नहावुं नहीं, (२) होळी, धूळेटी रमवी नहि तथा काचां पाणी भरेलां फुग्गा फोडवा नहीं, (३) पर्वतिथिअे नहावानां पाणीनी मर्यादा करवी, (४) अणगण अने काचुं पाणी पीवुं नहीं, (५) नदी, तलाव के तरणहोज (स्विमिंग पुल)मां नहावुं नहीं।

तेउकायनी दया– (१) ठंडीथी बचवा लाकडां के कागज जलाववा नहीं, (२) गैस, स्टव, चूला वगर कारणे चालु राखवा नहीं, (३) वगर कारणे इलेक्ट्रिक स्विचो चालु-बंध करवी नहीं। (४) दीवा, दिवेट, कोडियां पेटाववां नहीं, (५) होळी प्रगटाववी नहि, होळी जोवा जवुं नहीं, (६) गरम वस्तुओ खावानो आग्रह राखवो नहीं, (७) टी. वी. जोवुं नहीं, (८) फटाकडा फोडवा नहीं।

वाउकायनी दया– (१) उघाडे मुखे बोलवुं नही। साधुसंतो साथे जतना राखीने वातचीत करवी, (२) ताली पाडवी नहीं, (३) हिंचका खावा नहीं, (४) दांडिया, रास, गरबा रमवा नहीं, (५) कपडां जोर जोरथी झापटवां नहीं।

वनस्पतिकायनी दया– (१) लीलां घास, पांदडां वगेरे पर बेसवुं नहीं, चालवुं के दोडवुं नहीं, (२) झाड परथी फल, फूल के पांदडां तोडवां नहीं, (३) गजरा, वेणी, फूल माथामां नांखवां नहीं, (४) काचां शाकभाजी खावां नहीं, (५) कंदमूळनो त्याग करवो तथा पर्वतिथिअे लीलोतरीनो त्याग करवो, (६) पान खावा नहीं।

त्रसकायनी दया– (१) घरमां करोळियानां झाळां, वांदा, मांकड, मंकोडा थाय नहीं तेवी स्वच्छता जाळववी अने जो थाय तो जतनापूर्वक घरमांथी दूर करवा, (२) गैस, चूला जोईने, पूंजीने चालु करवा, (३) नीचे जोईने चालवुं के बोलवुं। दोडादोडी न करवी, (४) गरम वस्तु खुल्ली मूकवी नहीं तेम ज सीधी जमीन पर न मूकतां स्टॅन्ड पर मूकवी, (५) जंतुनाशक दवा वापरवी नहीं।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) छकायनां आयुष्य, कुळ लखो। (२) तेउकायनो विस्तार लखो। (३) ७ नरकनां कुळ अने गोत्र लखो। (४) अेकेन्द्रिय, बेइ, पंचे ना भेद केटला? (५) गर्भज मनुष्यना भेद केटला? (६) वनस्पतिकायनी दया तमारा व्यावहारिक जीवनमां केवी रीते पाळशो? (७) वायरो केवी रीते हणाय छे ते लखो।

पाठ : 2 कंदमूळना त्यागथी थता लाभो

सोयना अग्रभाग पर रहे तेटलां **कंदमूळमां** श्री भगवंते **अनंता** जीवो कह्या छे। आखी जिंदगी सुधी कोई व्यक्ति लीलां शाकभाजी खाय अने पाप लागे तेनां करतां पण अेक वखत अेक कंदमूळनो टुकडो खाय तेनुं पाप वधी जाय छे। माटे मोक्षनी अभिलाषावालाअे कंदमूळनो त्याग करवो जोईअे।

(१) कंदमूळ न खावाथी अनंता जीवोनी दयानुं पालन थाय छे।

(२) **अरिहंत भगवाननी** आज्ञानुं पालन थाय छे।

(३) स्वभाव **तामसी** के **उग्र** न थाय, ठंडो रहे छे।

(४) शांति, शीतलता, सभ्यता, सहिष्णुता वधे छे।

(५) रसनेन्द्रिय उपर विजय थाय छे।

(६) जे कंदमूळ खाय तेने भविष्यमां **कंदमूळमां जन्मीने अनंत काळ रहेवुं पडे छे। त्यां वारंवार छेदाय, भेदाय, विंधाय, शेकाय, तळाय अने वारंवार कंदमूळमां ज जन्ममरण थाय।** कंदमूळ छोडे तो तेवां दु:खोथी बची शकाय छे।

(७) सद्गतिमां जवाय छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) कंदमूळमां केटलां जीवो होय छे? (२) कंदमूळ न खावाथी कोनी आज्ञानुं पालन थाय? (३) कंदमूळ खानार क्यां जाय? केवुं दु:ख भोगवे? (४) कंदमूळ खावाथी अने न खावाथी स्वभाव केवो थाय छे?

पाठ : 3 जैन धार्मिक पर्व तिथिओ

जैनधर्म अे **लोकोत्तर** धर्म छे। आ धर्मना तहेवारो **पर्व** कहेवाय छे।

अज्ञानी जीवो पर्वनां दिवसनुं महत्त्व न समजतां होवाथी खावुं, पीवुं, हरवुं, फरवुं वगेरे कार्यो करी पोतानो समय वेडफे छे। परन्तु आपणे धार्मिक पर्वना दिवसो दरम्यान आरंभ परिग्रह, मोजशोख घटाडीने तप, त्याग, ज्ञान, ध्याननी आराधना करवी जोईअे। कारण के प्राय: करीने **तिथिनां दिवसे मनुष्य, तिर्यंचनां जीवोनां परभवनां आयुष्यनो बंध पडे छे।**

आपणां मुख्य पर्वनां नाम तथा तिथिओ नीचे प्रमाणे छे—

पर्वनुं नाम	तिथि
१. संवत्सरी महापर्व	भादरवा सुद पांचम
२. चोमासी पाखी	१. अषाड सुद पूनम
	२. कारतक सुद पूनम
	३. फागण सुद पूनम

३.	पर्युषण पर्व प्रारम्भ	श्रावण वद १३ (तेरस)
४.	चातुर्मास प्रारम्भ	अषाड सुद पूनम (१५)
५.	चातुर्मास पूर्णाहुति	कारतक सुद पूनम
६.	अखात्रीज (वरसीतप पारणा)	वैशाख सुद त्रीज
७.	महावीर जन्म कल्याणक	चैत्र सुद तेरस
८.	महावीर निर्वाण (दिवाळी)	आसो वद अमास
९.	चैत्री आयंबिल ओळी	चैत्र सुद सातमथी पूनम
१०.	आसो आयंबिल ओळी	आसो सुद सातमथी पूनम

अपेक्षित प्रश्नो

(१) पर्युषण कई तिथिअे शरू थाय? (२) आसो वद अमासे कयुं पर्व आवे? (३) तिथिना दिवसे शा माटे धर्म आराधना करवी जोईअे? (४) चोमासी पाखी केटली छे? कई कई?

पाठ : 4 मारुं आत्म स्वरूप

(१) हुं आत्मा छुं, शरीरथी जुदो छुं।

(२) **ज्ञान अने दर्शन** (जोवुं अने जाणवुं) अे मारो स्वभाव छे।

(३) हुं नित्य छुं। अनादिकाळथी हतो, अनंतकाळ सुधी रहीश। मने बनावनार कोई नथी। मारा कर्मनो कर्ता हुं ज छुं।

(४) राग अने द्वेष अे बे कर्मबंधनां मुख्य कारण छे। मारां बांधेलां कर्मो मारे अेकलाअे ज सुख अने दु:ख रूपे भोगववां पडे छे, तेथी हुं ज कर्मनो भोक्ता छुं।

(५) विविध कर्मना बंध अने उदयने कारणे आ संसारमां हुं जन्म-मरण पामुं छुं।

(६) शाश्वता सुखनुं स्थान मोक्ष छे। मोक्षमां अनंता सिद्ध भगवान बिराजे छे, तेमने कर्म होतां नथी। ते आत्मानुं शुद्ध स्वरूप छे।

(७) **सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यग् चारित्र अने सम्यग् तप** अे कर्म निर्जरा करी मोक्ष प्राप्तिनो उपाय छे।

(८) जन्म-मरणनां दु:खोमांथी छूटवा हुं पण मोक्षमार्गनी आराधना करी **मोक्ष प्राप्त करीश** अे मारुं जीवन लक्ष्य छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) मारो स्वभाव केवो छे? (२) मोक्षप्राप्तिनो शुं उपाय छे? (३) 'मारुं आत्म स्वरूप' कोईपण त्रण मुद्दा जणावो। (४) मारुं जीवन लक्ष्य शुं छे?

पाठ : 5 रागनुं स्वरूप—१. लोभ, २. माया

जेनाथी संसारनो लाभ वधे छे ते कषाय। (कष् = संसार, **आय** = लाभ) कषाय चार छे—क्रोध-मान-माया-लोभ।

लोभ

लोभ अेटले लालच, असंतोष

लोभी लालचने लीधे पोतानुं स्वमान गुमावे छे।

लोभी पोतानो स्वार्थ साधवा खुशामत करतो फरे छे।

मोटा भागना पापनुं मूळ लोभमां होय छे।

* तमने कोई चीज-वस्तु-संजोगो गमता होय अने ते प्रामाणिक रीते महेनत करीने मेळवो, ते योग्य छे।
* पुण्यनो समय चालतो होय त्यारे तमारा प्रयत्नमां तमने सफलता मळे छे, तेथी मनगमती चीज-वस्तु-संजोगो तमने मळे छे।
* परन्तु पापनो समय चालतो होय त्यारे महेनत करवा छतां मनगमती चीज-वस्तु-संजोगो मळतां नथी।
* ज्यारे पापनो समय पूरो थई जशे, पुण्यनो समय आवशे, त्यारे मनगमती-वस्तु-संजोगो तमने मळशे ज।
* लालच जरूर न होय छतां य चीज-वस्तुओनो संग्रह करावे छे। आ लालच ज पाप करावे छे।
* माटे लालच न थई जाय ते माटे **'संतोष'** राखीने हुं **'लोभ'** नो नाश करीश।
* लालचने काबूमां राखवाथी पापनी शरूआत थती रोकी शकाय छे।
* पाप थई जाय तेनां करतां थई जतां पापने रोकवा ते डहापणनुं काम छे।
* संतोष राखीने धीरजथी प्रामाणिक रीते महेनत करता रहीअे तो ज आवा 'लोभ' थी बची शकाय छे। कहेवत छे के **'संतोषी नर सदा सुखी'**।

माया

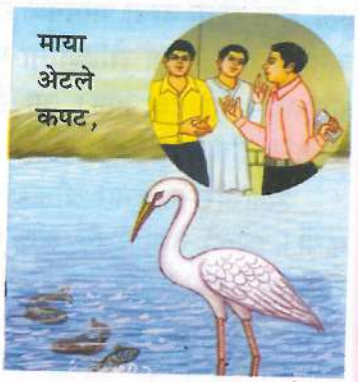

माया अेटले कपट, छेतरपिंडी। अंदर जुदुं बहार जुदुं

कपटी कपट करीने लोकोमां पोतानी आबरू गुमावे छे

छेतरपिंडी करनारनो कोई विश्वास करतुं नथी।

कपटी अेक जूठ छूपाववा सो जूठ बोलतो होय छे,

तेथी कपटीथी लोको दूर भागे छे।

* ज्यारे प्रामाणिक रीते प्रयत्न करवा छतां य मनगमती चीज-वस्तुओ-संजोगो न मणे त्यारे, आ वस्तुओ जलदीथी मळी जाय तेवी लालच थई जाय छे।
* आवी लालच थाय त्यारे जूठुं बोली, चोरी करी, छेतरपिंडी-कपट करीने टूंका रस्ते मनपसंद चीज-वस्तु-संजोगो मेळववानुं मन थई जाय छे।

* आवा टूंका रस्ते मनपसंद चीज-वस्तु मेळववानी लालच पाप करावे छे।
* लालचथी ज पापनी शरूआत थाय छे। अने छेतरपिंडी वगेरेथी पाप वधतां जाय छे।
* क्यारेक पुण्यनो समय चालतो होय त्यारे आवा टूंका रस्ते पण मनपसंद चीज-वस्तु मळी जाय छे।
* साथे साथे नवां पाप पण बंधातां जाय छे।
* आपणे बांधेलां पाप आपणे ज भोगववां पडे छे।
* आ पापनो समय आवे त्यारे आवेली मनपसंद चीज-वस्तु-संजोगो चाल्या जाय छे, अने ना गमे तेवा संजोगो आवे छे। **छेतरपिंडीने** ज धर्मनी भाषामां 'माया' पण कहे छे।
* लालच अने छेतरपिंडी अेटले के 'लोभ' अने 'माया' बंने 'राग' थी थाय छे।
* सत्य बोलवुं, चोरी-छेतरपिंडी न करवी ते सरलता छे।
* सरळता राखवाथी जूठ, चोरी-छेतरपिंडी, कपटथी थतां 'माया' नां पापथी बची शकाय छे। तेथी **'सरळता'** राखी हुं **'माया'** नो नाश करीश।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) लोभ अेटले शुं? (२) माया अेटले शुं? (३) लोभनो नाश केवी रीते थाय? (४) मायानो नाश केवी रीते थाय? (५) लोभथी बचवा शुं करवुं? (६) कषाय अेटले शुं? (७) रागना बे भाग क्या क्या? (८) कपटीथी लोको केम दूर भागे छे? (९) डहापण शेमां छे?

कथा : 1

नेम-राजुल

कथा विभाग

बावीशमा तीर्थंकर श्री नेमनाथ भगवान शौर्यपुर नगरना महान ऋद्धिवाळा **समुद्रविजय** राजाना महायशस्वी, बळवान, तेजस्वी **पुत्र** हता। तेमनी **माता शिवादेवी** अने **नाना भाई रहनेमि** हता।

समुद्रविजय राजाने तेमनाथी नाना बीजा ९ (नव) भाईओ हता, तेमां सौथी **नाना भाईनुं** नाम **वसुदेव** हतुं। वसुदेव राजाने बे पत्नीओ हती। तेमां **रोहिणीना पुत्र बळदेव** अने **देवकीना पुत्र श्रीकृष्ण वासुदेव** हता। आ रीते श्रीकृष्ण अने नेमनाथ बंने काकाना दीकराओ थाय।

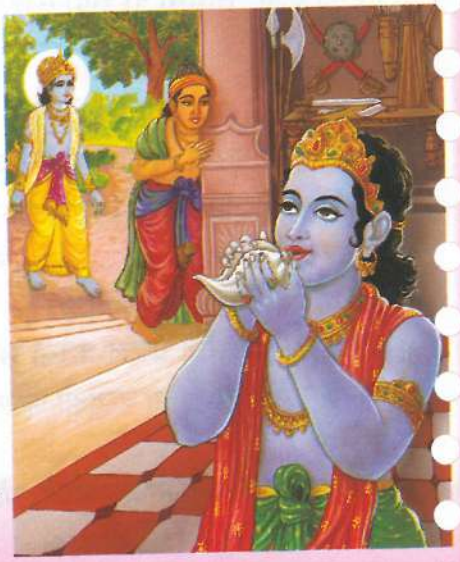

अेकवार नेमकुमारे श्रीकृष्ण वासुदेवना पंचजन्य शंखनो नाद कर्यो। लोको तथा स्वयं श्रीकृष्ण विचारमां पडी गया के आ शंखनाद कोणे कर्यो? आ शंख तो श्रीकृष्ण सिवाय कोई उठावी पण न शके, त्यां वगाडवानी तो वात ज क्यां? परन्तु शंखरक्षके समाचार आप्या के 'आ तो नेमनाथ राजकुमारे शंख वगाड्यो!' नेमनाथने मन तो आ रमत वात हती! कारण के तेओ तीर्थंकर हता। नेमकुमारना बळनी आथी ठेर ठेर प्रशंसा थवा मांडी। जेवा ते बळवान हता तेवा ज ते सुंदर हता।

नेमनाथ हजु कुंवारा हता। युवान नेमनाथ संसारमां वैराग्य भाव साथे रहेता। तेमनां माता-पिताने तेमने परणाववानी बहु ज इच्छा हती। श्रीकृष्ण वासुदेवे शौर्यपुर नगरमां ज वसता उग्रसेन राजानी कुंवरी **राजेमती** (राजुल) साथे नेमकुमारना लग्न नक्की कर्यां।

राजेमतिनी सुंदरतानुं वर्णन करतां तो सरस्वती पण थाकी जाय। स्त्रीओना सर्व शुभ लक्षणोथी सम्पन्न, सुंदर दृष्टिवाळी, उत्तम जीवन जीववावाळी, धार्मिक संस्कारो वाळी कन्या अेटले राजेमति।

लग्न माटे शुभ मुहूर्त जोवामां आव्युं अने ते दिवस पण आवी गयो। शौर्यपुर नगरमां आनंद आनंद छवाई गयो हतो। नेमकुमारने लईने लग्ननी जान उग्रसेन राजाना नगरमां महेल पासे विशाळ मंडप बनाववामां आव्यो हतो, ते तरफ चालवा लागी। रथमां बेसीने आवता नेमकुमार सोहामणा लागता हता। जान महेल पासे आवी पहोंची। राजेमति सोले शणगार सजीने बेठी हती।

लग्न मंडपमां पहोंचतां ज अचानक नेमकुमारे वाडामां बांधेलां पशुओ अने पिंजरांमां पूरायेलां पक्षीओने जोयां। नेमकुमारे पोतानां रथना सारथिने पूछ्युं, "आ सर्व पशु-पक्षीओने शा माटे अहीं लाववामां आव्या छे?" सारथि बोल्यो, "मांसभक्षण करवावाळा जानैयाओ माटे तेमने अहीं लाव्यां छे।" नेमकुमारे विचार्युं के 'आटलां बधां जीवोनी हिंसा मारा लग्न निमित्ते थाय तो ते परलोकमां अहितकर अने अकल्याणकारी छे। आवा लग्नथी मने शो फायदो थशे? जेमां जीवोनी हिंसा होय!' तेमणे तेमना सारथि द्वारा ते सर्व पशु-पंखीओने मुक्त कराव्या अने तेमनी मुक्तिनो आनंद जोतां तेओ चिंतन करवा लाग्या—

'मारी शक्तिनो उपयोग आत्मकल्याण माटे करवो जोईअे। **संसारनां कामो माटे मारी शक्ति वापरवा करतां दीक्षा लईने साधना करुं अे ज परम हितकारी छे!**' आ प्रमाणे चिंतन करी तेमणे सारथिने रथ पोताना नगर तरफ पाछो वाळवा कह्युं। नेमकुमार राजुलना पति थवाने बदले दीक्षा लेवा तैयार थई गया!

अचानक... नेमकुमारनो रथ पाछो फर्यो अने रंगमां भंग पड्यो। राजुल अने सखीओ विचारमां पडी गयां के 'शुं थयुं?' वहेती वहेती वात आवी के 'नेमकुमार पशुओनो पोकार सांभळीने तेमने पांजरांमांथी छोडावी पाछा फर्या, हवे तेओ नहि परणे!'

राजुल तो आ समाचार मळतां ज हास्यरहित, आनंदरहित थईने शोकग्रस्त बनी गई। राजेमति पोते विचार करवा लागी, 'खरेखर धिक्कार छे मने के नेमनाथ द्वारा हुं त्यागी देवामां आवी! पण आ भवमां **मारे हवे बीजो वर न जोईअे।** हवे मारा माटे पण श्रेष्ठ अे छे के हुं पण तेमना पगले चालीने दीक्षा लउं।' आम विचारीने तेओ कुंवारा रह्यां अने योग्य समये दीक्षा लेवा माटे तत्पर थयां। धन्य छे तेमनी समजणने! तेमना वैराग्यने!

त्यारबाद नेमनाथ अेक वर्ष सुधी वरसीदान आपे छे, पछी दीक्षा लईने जैन साधु बने छे। द्वारका नगरी पासेना रैवतक (गिरनार) पर्वत पर तेओ चाल्या जाय छे। उघाडा पगे चाले छे। लूखुं-सूकुं गोचरीमां जे भोजन मळे, तेनाथी चलावे छे। जगतना सर्व जीवोने पोताना आत्मा समान गणे छे। सत्य बोले छे, ब्रह्मचर्य पाळे छे,

ध्यानमां लीन रहे छे। आम, आदर्श साधुपणुं पाळतां तेमने ५४ दिवस पछी केवलज्ञान थाय छे। तेओ साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका अेम चार तीर्थनी स्थापना करीने **तीर्थंकर बने छे।**

आ तरफ.....राजुल पण तेमनो ज मार्ग स्वीकारी भगवान नेमनाथ पासे दीक्षा ले छे। श्रीकृष्ण वासुदेव, बलदेव, समुद्रविजय राजा वगेरे तेने आशीर्वाद आपे छे के '**तमे शीघ्र आ संसारसागरने पार करीने मोक्षसुख प्राप्त करो।**' राजेमति साथे द्वारका नगरीमां घणां बहेनो पण दीक्षा लेवा तैयार थया।

✦ ✦ ✦ ✦

अेकवार राजुल साध्वी अनेक साध्वीजीओ साथे भगवान नेमनाथनां दर्शन करवा गिरनार पर्वत पर जाय छे। तेवामां वरसाद वरसे छे। अने तेओ साथी साध्वीओथी छूटां पडी जाय छे। तेमनां भींजायेलां वस्त्रने कोरां करवा अेक गुफानो आश्रय ले छे। त्यां तेमनां वस्त्रो सूकववां मूके छे।

संयोगोवशात् ते ज गुफामां नेमनाथना नाना भाई रहनेमि मुनि ध्यानमां बेठा हता। गुफामां रहेला अंधकारने कारणे साध्वी राजुल तेमने जोई शक्यां नहि, पण रहनेमि राजेमतिनां रूप, लावण्यने जोई मोहित थई गया अने बोल्या, "राजेमति! शा माटे तमे युवानी वेडफी रह्यां छो? मनुष्यनो भव मळवो घणो ज दुर्लभ छे, माटे आवो पहेलां भोग भोगवीअे, पछी जिनेन्द्र भगवानना मार्गनुं अनुसरण करीशुं।"

राजेमति साध्वी पोताना व्रत, नियम पालनमां स्थिर हतां। शीलनी रक्षा करतां तेमणे जवाब आप्यो। "तमे जो देव जेवा अथवा इन्द्र जेवा स्वरूपवान हो, तो पण हुं तमने इच्छती नथी। तमे तो नेमनाथ भगवानना नाना भाई छो अने हुं तेमना द्वारा त्यागी देवायेली राजेमति छुं। तमे तमारा भाईनुं वमेलुं शा माटे भोगववा इच्छो छो? तमने धिक्कार छे के तमे असंयमरूप जीवन जीववानी इच्छा करो छो! **आना करतां तो तमारा माटे मृत्यु श्रेष्ठ छे।**"

आगळ वधतां तेमणे कह्युं, "हे रहनेमि, आपणुं बंनेनुं कुळ, खानदान खूब ऊंचुं छे। आपणने आवुं विचारवुं पण न शोभे! आ कायामां मळ, मूत्र अने दुर्गंध भरेला छे। आपणे तो आत्मवैभवने मेळववा संत बन्यां छीअे। मुनिराज! आवो झेरी विचार अने वचनो तमारा पवित्र मगजमां क्यांथी आव्या? तमे संयममां स्थिर थाओ।"

राजेमतिनां आवां मर्मवेधी वचनोथी रहनेमि जागृत थया। तेओ पतनना मार्गे जता बच्या। पोतानी भूल माटे राजेमति साध्वी पासे लज्जापूर्वक, अंतरना भावथी माफी मांगी। राजेमतिनो उपकार मानतां बोल्या, "धन्य छे तमने! तमे मने साचा मार्गे लावीने उगारी लीधो।"

संयम, तप अने त्यागने मार्गे आदर्श जीवन जीवी भगवान नेमनाथ, मुनि रहनेमि अने साध्वी राजेमति आ त्रणे महान आत्मा मोक्ष पाम्या।

धन्य छे नेमनाथ भगवानने... धन्य छे राजुलने...!!

अपेक्षित प्रश्नो

(१) मुनि रहनेमि, सती राजुल पासे शेनी मागणी करे छे? सती राजुल शो उत्तर आपे छे? (२) नेम-राजुल वार्तानो टूंक सार लखो। (३) नेमनाथ भगवाननां मातापिता, भाईनुं नाम लखो। (४) नेमनाथ अने सारथि वच्चे शुं वार्तालाप थयो? (५) नेमनाथ जीवदया-प्रेमी हता, ते बतावतो प्रसंग वर्णवो। (६) नेमनाथ दीक्षा लई लेतां राजेमतिअे शुं विचार कर्यो? (७) राजेमतिने कोणे कोणे अने शुं आशीर्वाद आप्या? (८) राजेमतिअे रहनेमिने कई रीते संयममां स्थिर कर्या? वर्णन करो। (९) नेमनाथ दीक्षा लईने केवुं जीवन जीवे छे? (१०) आ कथा परथी तमने शुं बोधपाठ मळे छे?

कथा : 2

गजसुकुमाल मुनि

द्वारिका नगरीनां राजा **श्रीकृष्ण वासुदेव** हतां। तेमनी **मातानुं नाम देवकी** अने **पितानुं नाम वसुदेव** हतुं। तेमना सौथी नाना अने लाडीला भाईनुं नाम हतुं **गजसुकुमाल। तेमनुं शरीर हाथीना ताळवा जेवुं सुकोमल** हतुं, तेथी तेमनुं नाम **'गजसुकुमाल'** पाडवामां आव्युं हतुं। माताना लालनपालनमां रहीने गजसुकुमाल धीमे धीमे यौवन अवस्थाने प्राप्त थया।

अेकवार, भगवान नेमिनाथ (बावीसमा अरिष्टनेमि) विचरण करतां करतां द्वारिका नगरीनी बहार उद्यानमां पधार्या। श्रीकृष्ण वासुदेव तेमनां दर्शन करवा नगरमांथी बहार नीकळता हता, त्यारे तेमणे द्वारिका नगरीना मार्ग ऊपर अेक सुंदर कन्या **'सोमा'** ने जोई।

सोमानुं रूप अने लावण्य अेटलुं सुंदर हतुं के **श्रीकृष्णने** ते गजसुकुमाल साथे विवाह करवा योग्य लागी। आथी श्रीकृष्णे सोमाना पिता सोमिल ब्राह्मणनी आज्ञा लईने सोमाने राणीओना महेलमां अंगरक्षको साथे मोकली दीधी। श्रीकृष्ण महाराजा, राणीओ, गजसुकुमाल तथा बीजा अनेक नगरजनो नेमनाथ भगवाननां दर्शन करवा अने तेमनी वाणी सांभळवा माटे आव्यां हतां।

भगवाननो उपदेश सांभळीने गजसुकुमालने वैराग्य उत्पन्न थयो अने तेणे भगवानने कह्युं, "हुं मारां मातापितानी आज्ञा मेळवीने पाछो आवीने आपनी पासे दीक्षा लईश।" गजसुकुमालने तेमनां मातापिता तथा श्रीकृष्णे अनेक रीते संसारमां रोकाई जवा समजाव्या, पण तेमनो वैराग्य अनेरो हतो। तेमने आ दु:खमय संसारमां हवे रोकावुं न हतुं। वडीलोना अत्यंत आग्रहने कारणे बीजा दिवसे सवारे तेमनो राज्याभिषेक करवामां आव्यो। तेमना राजा बनवा पर तेमने पूछ्युं के "राजन्! आप शुं इच्छो छो?" त्यारे तेमणे जवाब आप्यो, "मारे दीक्षा लेवी छे!" मातापितानी अनुमति मेळवीने ते ज दिवसे बपोरे माथे मुंडन करीने **भगवान नेमिनाथ पासे दीक्षा अंगीकार करी।**

ते ज दिवसे सांजे तेओअे भगवानने सविनय वंदन नमस्कार करीने कह्युं, "भगवान! आपनी आज्ञा होय तो, मारी अेवी इच्छा छे के महाकाल श्मशानमां जईने हुं अेक रात्रीनी भिक्षु प्रतिमा स्वीकार करुं अर्थात् **सम्पूर्ण रात्री ध्यान करीने ऊभो रहुं।"** भगवाने तेमने प्रेमपूर्वक कह्युं, "आत्मध्यानमां लीन रहेवा हुं तमने आज्ञा आपुं छुं, पण तमने गमे तेटला दु:खो, कष्टो आवे तो पण तमे पर्वतनी जेम अडग अने स्थिर ऊभा रहेजो।"

भगवाननी आज्ञा मेळवीने गजसुकुमाल महाकाल श्मशानमां आव्या। त्यां निर्दोष भूमि जोईने तेओ अेक पुद्गल पर दृष्टि करीने अेक रात्रीनी महाप्रतिमा स्वीकारीने ध्यानमां ऊभा रही गया।

ते ज दिवसे सोमिल ब्राह्मण हवन माटे लाकडां, घास आदि सामान लेवा द्वारिका नगरीनी बहार गयो हतो। ते पोताने जरूरी सामान लईने सांजे घरे पाछो फरी रह्यो हतो। त्यारे महाकाल श्मशानमां काउस्सग्ग करीने ध्यानमां ऊभेलां गजसुकुमाल मुनिने तेणे जोया।

तेमने जोतां ज तेना हृदयमां पूर्वभवनुं वेर जागृत थयुं, ते स्वगत बोल्यो, 'अरे! आ तो पेलो निर्लज्ज, मृत्युने ईच्छवावाळो गजसुकुमाल छे। ते पुण्यहीन अने दुर्लक्षणवाळो छे। मारी निर्दोष दीकरी सोमा जे युवान छे, तेने विना कारणे ज छोडीने आ साधु बनी गयो छे।'

आथी सोमिल ब्राह्मणे विचार्युं के '**मारा वेरनो बदलो लउं।**' तेणे चारे दिशामां जोयुं के कोई आवतुं-जतुं तो नथी ने? (कारण पापनां कार्यो प्रायः अेकांतमां अथवा अंधारांमां ज करवामां आवे छे) अंधारुं थई गयुं होवाथी लोकोनी अवरजवर नहोती। नजीकमां रहेला तळावमांथी तेणे भीनी माटी लीधी अने गजसुकुमालना माथा पर पाळी बांधी दीधी। श्मशानमां बळी रहेली अेक चितामांथी बळी गयेला लाकडानां अंगारा लईने तेणे अेक तूटेला वासणमां भर्या। ते बळबळतां अंगारा तेणे गजसुकुमाल मुनिना माथा पर मूकी दीधा। पछी तेने कोई जोई न जाय तेवा भयथी ते त्यांथी भागी गयो।

गजसुकुमाल मुनिनां **शरीरमां असह्य महावेदना** उत्पन्न थई। ते वेदना अत्यंत दुःखमय, भयंकर अने असह्य हती। अेक तो सुकुमार शरीर अने ताजो लोच करेलो अेटले वाळ वगरनुं माथुं। चामडी तडतड तूटी अने खोपरी फाटी, वेदनानो पार न रह्यो। छतां पण गजसुकुमाल मुनि सोमिल ब्राह्मण पर लेशमात्र पण द्वेष न करतां समभावपूर्वक वेदना सहन करवा लाग्या।

'आत्मा नित्य छे अने शरीर अनित्य छे, क्षमा अे आत्मानो गुण छे अने क्रोध करवो ते विभाव छे। मारां अशुभ कर्मोनुं फळ हुं भोगवी रह्यो छुं।' तेवुं चिंतन तेओ करता रह्या। तेमना शुभ परिणाम तथा शुभ अध्यवसायोथी आत्माना गुणोनो घात करवावाळा कर्मोनो नाश थयो। तेमने केवलज्ञान अने केवलदर्शन प्राप्त थयुं। त्यारबाद सर्व कर्म क्षय थई जवाने कारणे तेओ मोक्ष पाम्या।

धन्य छे गजसुकुमालने, तेमनी क्षमाने, ध्यानने अने तेमना वैराग्यने।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) गजसुकुमालनां मातापिता अने भाईनुं नाम शुं हतुं? तेओनुं नाम गजसुकुमाल केम पड्युं? (२) गजसुकुमाल ज्यारे मातापिता पासे दीक्षानी आज्ञा लेवा गया त्यारे शुं थयुं? (३) गजसुकुमालना विवाह कोणे कोनी साथे नक्की कर्या हता? (४) गजसुकुमालना गुरु कोण हता? तेमणे गजसुकुमालने शुं शिखामण आपी? (५) दीक्षा लईने गजसुकुमाले भगवान पासे शेनी आज्ञा मांगी? (६) गजसुकुमाल ध्यानमां ऊभा रहेतां पहेलां शुं कर्युं? (७) सोमिले गजसुकुमालने शेनो उपसर्ग आप्यो? (८) सोमिल ब्राह्मण मुनि गजसुकुमाल पासे आवे छे त्यारनी बंनेनी स्थितिनुं टूंकमां वर्णन करो। (९) गजसुकुमाल आयुष्य पूर्ण करी क्यां गया? (१०) आ वार्ता परथी शुं बोधपाठ मळे छे?

कथा : 3

आनंद श्रावक

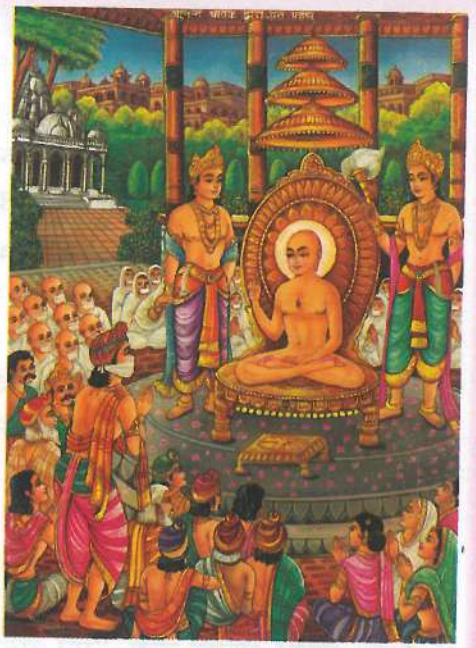

वाणिज्यग्राम नगरमां 'जितशत्रु' नामे राजा राज्य करतो हतो। ते नगरमां आनंद नामे अेक महान ऋद्धिवान गृहस्थ रहेतां हतां। तेमनी पत्नीनुं नाम 'शिवानन्दा' हतुं। जे स्वरूपवान अने गुणसम्पन्न हती।

आनंद श्रावकनी ऋद्धि : आनंद पासे चार करोड सुवर्णमुद्रानो भंडार हतो, चार करोड सुवर्णमुद्रा वेपारमां लगाडेली हती अने चार करोड सुवर्णमुद्रा धन तथा घरनी वस्तुओमां वापरेली हती। तेनी पासे ४०,००० गायोना चार गोकुळ हता। पांचसो गाडीओ तो वेपारनी वस्तुओ लाववामां तथा पांचसो गाडीओ गोकुळनुं घास तथा अन्य सामान फेरववामां वपराती हती। चार जहाज विदेशोमां व्यापारना काममां आवतां हतां।

जेवा ते वैभवशाळी हता तेवां ज ते बुद्धिमान, उदार अने लोकोमां विश्वासपात्र हता। राजा, प्रधान, सेनापति, ठाकुर, जागीरदार अने सामान्य लोकोनां महत्वपूर्ण कार्योमां, लोकोनी तकलीफोमां अने गुप्त मंत्रणाओमां पण तेमनी सलाह लेवामां आवती हती। ते सहुने साची सलाह आपता, सर्वनो तेमना पर विश्वास हतो।

आनंद श्रावकने समकित प्राप्ति— अेकवार भगवान महावीर वाणिज्य ग्राम नगरना द्युतिपलाश उद्यानमां पधार्या। राजा आदिनी जेम आनंद पण तेमनां दर्शन अने वंदन करवा गया। भगवाननो वैराग्यसभर उपदेश सांभळीने तेमने समकित (साची समजण) प्राप्त थयुं अने तेमणे श्रावकनां १२ व्रत धार्यां। तेमणे पच्चक्खाण कर्यां, **'हुं जैन सिवायना अन्य धर्मीओने के देवने वंदन नहि करुं, तेमनी साथे वात नहि करुं, तेमनो सम्पर्क नहि राखुं, तेमने धर्म बुद्धिथी आहार-पाणी नहि आपुं, कारण के साचा जैन श्रावके तेवुं न करवुं जोइअे। हुं जैन साधुसंतोने भक्तिभावथी आहार आदि वहोरावीने धन्य बनीश।'**

आनंद अने शिवानंदा बन्ने बन्या १२ व्रतधारी— आनंद श्रावक भगवानने वंदन करी घर तरफ चाल्या। आजे तेमने साची समजण प्राप्त थई, तेथी तेओ आनंदमां हता। तेओ पोताने धन्य मानता अने आवा महालाभथी पत्नीने पण धर्म पमाडवा घरे पहोंची गया। घरे जई पत्नीने कह्युं, 'आजनो दिवस आपणा माटे परम कल्याणकारी छे, आवो लाभ फरी नहि मळे। आपणा नगर बहार भगवान महावीर पधार्या छे। तेमनी पावन वाणीथी प्रेरणा पामीने में श्रावकनां १२ व्रत धारण कर्यां छे। तमे पण त्यां जई भगवानने वंदन नमस्कार करीने व्रत धारी, श्राविका बनी, मानवजन्मने सफळ करी लो।' शिवानंदा पत्नी आनंद श्रावकनां वचनो सांभळी आनंदित थयां। तेओ पण प्रभु पासे जई १२ व्रतधारी श्राविका बनी गयां।

आनंद श्रावके धारी ११ पडिमा— आनंद श्रावके १२ व्रत धारण कर्यां पछी १५मुं वर्ष चालतुं हतुं। तेओ पोताना मोटा पुत्रने सर्व कारोबार सोंपी अने धर्मध्यानमां लागी गया हता। तेओ कोल्लाक सन्निवेशनी पौषधशाळामां श्रावकनी ११ पडिमा (विशेष नियमो) धारीने रहेवा लाग्या। आ ११ पडिमानी आराधना करतां

तेमने पांच वर्ष लाग्यां। तेमनुं शरीर तप-त्यागने कारणे दुर्बळ अने लोहीमांस विना सूकुं थई गयुं। तेमनां शरीरमांथी हाडकां अने नसो देखावा लागी तथा तेमनाथी ऊठवुं-बेसवुं थतुं नहि।

आनंद श्रावकनो संथारो—अेक राते धर्मचिंतन करतां तेमने विचार आव्यो के 'हुं हवे घणो दुर्बळ थई गयो छुं, पण मारा आत्मामां अने शरीरमां हजी शक्ति छे, तो ज्यां सुधी मारा धर्मगुरु, धर्माचार्य महावीर प्रभु सदेहे पृथ्वी पर विचरी रह्यां छे, त्यां सुधीमां हुं मारी अंतिम साधना करी लउं।' तेमणे संथारो लईने आहार-पाणीनो सर्वथा त्याग करी लीधो अने आत्माना शुभ भावोमां रहेवा लाग्या। शुभभाव, सुंदर परिणाम तथा लेश्यानी शुद्धिथी तेमने अवधिज्ञान (विशिष्ट ज्ञान) उत्पन्न थयुं।

गौतम गणधरनुं आगमन—ते समये भगवान महावीर स्वामी तेमना नगरमां पधार्या। गणधर गौतम छट्ठना पारणा माटे प्रभुनी आज्ञा लई नगरमां गया। त्यां लोको आनंद श्रावकना संथारानी वातो करता हता, ते सांभळी तेमने आनंद श्रावकने जोवानी भावना थई। तेओ आनंद श्रावकनी पौषधशाळा पासे गया। तेमने जोतां ज आनंद श्रावके आनंदित थई सूतां सूतां ज तेमने वंदन नमस्कार कर्या अने कह्युं। "आप मारी पासे आवो। हुं आपना चरणमां वंदन करुं। कारण मारामां अेटली शक्ति नथी के हुं तमारी पासे आवुं।"

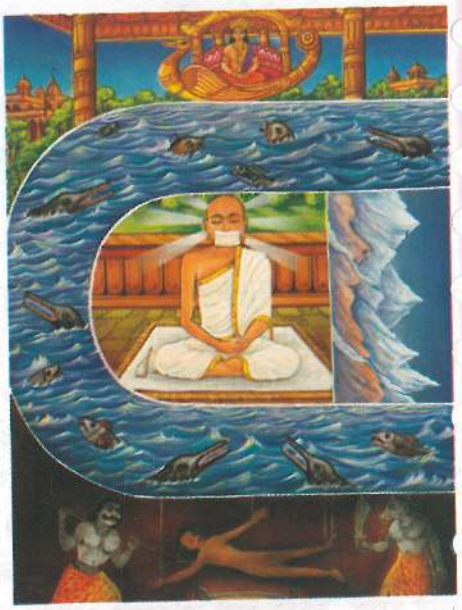

गौतम गणधर पासे आवतां ज आनंद श्रावके वंदन नमस्कार करीने पूछ्युं, "शुं श्रावकने अवधिज्ञान थई शके?" गौतम गणधरे हा कही। आनंद श्रावके कह्युं, "मने अवधिज्ञान थयुं छे अने हुं **लवणसमुद्रमां ५०० योजन** सुधी अने नीचे **पहेली नरकना 'लोलुप्यायुत' नरकावास** सुधी जोई शकुं छुं।"

गौतम स्वामीअे कह्युं के, "श्रावकने आटलुं विशाळ अवधिज्ञान थाय नहि। माटे तमे खोटुं बोल्या छो, तेनी आलोचना करो।" आनंद श्रावके विस्मय पामी कह्युं, "शुं साचुं बोलवावाळाअे आलोचना करवी पडे? आलोचना आप करो।"

गणधर गौतम आनंद श्रावकनी वात सांभळीने भगवान महावीर पासे आव्या। ईरियावहिया तथा बीजा श्रमणसूत्रनो काउस्सग्ग कर्यो। भगवानने वंदन नमस्कार कर्या अने आनंद श्रावके आलोचना करवी के पोते ते पूछी लीधुं। भगवाने कह्युं, "आनंद श्रावक साचुं बोले छे, माटे तमे तेमनी पासे जईने माफी मांगी लो।" गौतम स्वामी तरत पाछा नगरमां जई आनंद श्रावकने खमावी आव्या। चार ज्ञानना धारक, भगवानना प्रथम शिष्यनो विनय केवो छे...तेमना विनयने धन्य धन्य हो...!

आनंद श्रावके **२० वर्ष सुधी श्रावकधर्मनी** आराधना करी, **अेक महिनानो संथारो** करी मृत्यु पार्म **पहेलां देवलोकमां** देव तरीके जन्म लीधो। त्यांथी आयुष्य पूर्ण करी मनुष्य थई, दीक्षा लई मोक्षने प्राप्त करशे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) आनंद पासे केटली संपत्ति हती? (२) आनंद श्रावके भगवान पासे शुं पच्चक्खाण कर्या? (३) आनंद श्रावकने शुं विचार आव्यो? (४) आनंद श्रावकने केटलुं अवधिज्ञान थयुं हतुं? (५) आनंद श्रावके केटला वर्ष श्रावकधर्मनी आराधना करी?

काव्य विभाग

१. रत्नाकर पच्चीसी (कडी १ थी १२)

(राग : हरिगीत)

मंदिर छो मुक्तितणां, मांगल्य क्रीडाना प्रभु!
ने इन्द्र नर ने देवता, सेवा करे तारी विभु!
सर्वज्ञ छो स्वामी वळी, शिरदार अतिशय सर्वना,
घणुं जीव तुं! घणुं जीव तुं! भंडार ज्ञान कळा तणां... १

त्रण जगतना आधार ने, अवतार हे! करुणा तणां,
वळी वैद्य हे! दुर्वार आ, संसारनां दु:खो तणां।
वीतराग वल्लभ विश्वनां, तुज पास अरजी उच्चरुं,
जाणो छतां पण कही अने, आ हृदय हुं खाली करुं... २

शुं बाळको माबाप पासे, बाळ क्रीडा नव करे?
ने मुखमांथी जेम आवे, तेम शुं नव उच्चरे?
तेम ज तमारी पास तारक! आज भोळा भावथी,
जेवुं बन्युं तेवुं कहुं, तेमां कशुं खोटुं नथी... ३

में दान तो दीधुं नहि ने, शियळ पण पाल्युं नहि,
तपथी दमी काया नहि, शुभ भाव पण भाव्यो नहि।
अे चार भेदे धर्ममांथी, कांई पण प्रभु न कर्युं,
मारुं भ्रमण भवसागरे, निष्फळ गयुं! निष्फळ गयुं!... ४

हुं क्रोध अग्निथी बल्यो, वळी लोभ सर्प डस्यो मने,
गल्यो मानरूपी अजगरे, हुं केम करी ध्यावुं तने?
मन मारुं माया जाळमां, मोहन! महा मूंझाय छे,
चडी चार चोरो हाथमां, चेतन घणो चगदाय छे... ५

में परभवे के आ भवे, पण हित कांई कर्युं नहि,
तेथी करी संसारमां, सुख अल्प पण पाम्यो नहि!
जन्मो अमारा जिनजी! भव पूर्ण करवाने थया।
आवेल बाजी हाथमां, अज्ञानथी हारी गया... ६

अमृत झरे तुज मुखरूपी, चंद्रथी तो पण प्रभु,
भींजाय नहि मुज मन अरे रे! शुं करुं हुं तो विभु?
पथ्थर थकी पण कठण मारुं मन खरे कयांथी द्रवे?
मर्कट समा आ मन थकी, हुं तो प्रभु हार्यो हवे... ७

भमतां महा भवसागरे, पाम्यो पसाये आपनां,
जे ज्ञान दर्शन चरणरूपी, रत्नत्रय दुष्कर घणां।
ते पण गया प्रमादना वशथी प्रभु! कहुं छुं खरुं,
कोनी कने किरतार! आ पोकार जईने हुं करुं... ८

ठगवा विभु! आ विश्वने वैराग्यना रंगो धर्या,
ने धर्मनो उपदेश रंजन लोकने करवा कर्या।
विद्या भण्यो हुं वाद माटे केटली कथनी कहुं,
साधु थईने बहारथी दांभिक अंदरथी रहुं... ९

में मुखने मेलुं कर्युं दोषो पराया गाईने,
ने नेत्रने निंदीत कर्यां परनारीमां लपटाईने।
वळी चित्तने दोषित कर्युं चिंतवी नठारुं पर तणुं,
हे नाथ! मारुं शुं थशे?चालाक थई चूक्यो घणुं... १०

करे काळजाने कतल पीडा कामनी बिहामणी,
अे विषयमां बनी अंध हुं विटंबणा पाम्यो घणी।
ते पण प्रकाश्युं आज लावी लाज आप तणी कने,
जाणो सहु तेथी कहुं कर माफ मारा वांकने... ११

नवकार मंत्र विनाश कीधो अन्य मंत्रो जाणीने,
कुशास्त्रोनां वाक्यो वडे हणी आगमोनी वाणीने।
कुदेवनी संगत थकी कर्मो नठारां आचर्यां,
मति भ्रम थकी रत्नो गुमावी काच कटकां में ग्रह्यां... १२

रत्नाकर पच्चीसी कडी १ थी १२ पूर्ण....काव्य अपूर्ण

२. मैत्रीभावनुं पवित्र झरणुं

मैत्रीभावनुं पवित्र झरणुं, मुज हैयामां वह्यां करे।
शुभ थाओ आ सकळ विश्वनुं, अेवी भावना नित्य रहे।।१।।
गुणथी भरेला गुणीजन देखी, हैयुं मारुं नृत्य करे।
अे संतोना चरणकमळमां, मुज जीवननुं अर्घ्य रहे।।२।।
दीन, क्रूर ने धर्मविहोणा, देखी दिलमां दर्द रहे।
करुणाभीनी आंखोमांथी, अश्रुनो शुभ स्रोत वहे।।३।।
मार्ग भूलेला जीवन पथिकने, मार्ग चींधवा ऊभो रहुं।
करे उपेक्षा अे मारगनी, तो ये समता चित्त धरुं।।४।।
'चंद्रप्रभ'नी धर्मभावना, हैये सहु मानव लावे।
वेरझेरनां पाप तजीने, मंगल गीतो अे गावे।।५।।

३. दया ते सुखनी वेलडी

दया ते सुखनी वेलडी, दया ते सुखनी खाण।
अनंता जीव मोक्षे गया, दया तणां फळ जाण।।१।।
हिंसा दु:खनी वेलडी, हिंसा दु:खनी खाण।
अनंता जीव नरके गया, हिंसा तणां फळ जाण।।२।।
जीवडा जीवनुं जतन करजे, ओळखजे आचार।
दोह्यली वेळाअे जाणजे, धर्म सखायो थाय।।३।।
धर्म वाडीअे न नीपजे, धर्म हाटे न वेंचाय।
धर्म विवेके नीपजे, जो करीअे तो थाय।।४।।
रात्री गुमावी सूईने, दिवस गुमाव्यो खाय।
हीरा जेवो मनुष्य भव, कोडी बदले जाय।।५।।
दान, शियळ, तप, भावना, धर्मना चार प्रकार।
करो आराधो भावथी, तो पामो भवपार।।६।।
करो दलाली धर्मनी, दीपे अधिकी ज्योत।
कृष्ण वासुदेव जाणवा, जेणे बांध्युं तीर्थंकर गोत्र।।७।।

।।श्रेणी ३ अभ्यासक्रम समाप्त।।

अभ्यासक्रम : श्रेणी 4

पृ. नं.

सूत्र विभाग (मार्क-50)

1. संपूर्ण सामायिक, प्रतिक्रमण सूत्र पुनरावर्तन (मार्क २०) —
2. प्रतिक्रमण पाठ ४थी १२ व्रतना अर्थ तथा श्रेणी १, २, ३ मां शीखेला अर्थनुं अने प्रश्नोनुं पुनरावर्तन (मार्क १५) —
3. प्रतिक्रमण पाठ ४ थी १२ व्रतना प्रश्नोत्तर (मार्क १०) 87
4. धर्मध्याननो काउस्सग्ग (मार्क ५)

तत्त्व विभाग/संस्कार विभाग (मार्क 30)

1. ३५ बोलनो थोकडो समजण साथे 101
2. फटाकडा – समय, शक्ति अने संपत्तिनो व्यय 111
3. टी.वी. अेक दूषण 112
4. जैनधर्म अे ज श्रेष्ठ धर्म 113
5. द्वेषनुं स्वरूप (मान, क्रोध) 115

कथा विभाग (मार्क 10)

1. महाराजा मेघरथ 117
2. रोहिणेय चोर 119
3. शालिभद्र 123
4. धर्मरुचि अणगार 126

काव्य विभाग (मार्क 10)

1. रत्नाकर पच्चीसी (सम्पूर्ण) 129
2. साधु वंदना (1 थी 15 कडी) 131

कुल गुण 100

सूत्र विभाग

(प्रतिक्रमण पाठ ४ थी १२मा व्रत सुधीना प्रश्नोत्तर)

पाठ : 4

ज्ञानातिचार सूत्र

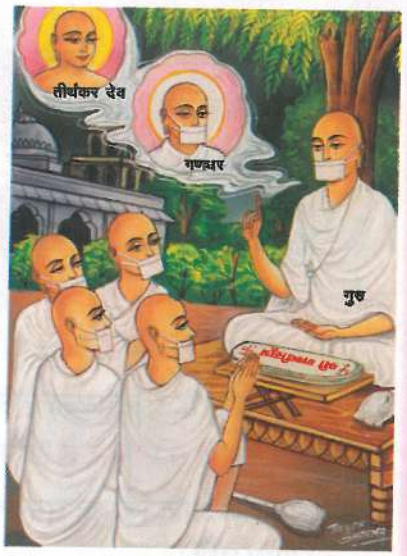

प्रश्न १—आगम (सिद्धांत) कोने कहे छे?

उत्तर—जेनाथी तीर्थंकरे प्ररूपेल छ द्रव्य, जीवादि नव तत्त्वोमां छोडवा योग्य, जाणवा योग्य अने आदरवा योग्य तत्त्वोनुं सम्यग्ज्ञान थाय, तेने आगम कहे छे।

प्रश्न २—आगम केटलां प्रकारना ज्ञाननां पाठमां बताव्या छे? कया कया?

उत्तर—आगमना त्रण प्रकार छे—**(१) सुत्तागमे**—सूत्ररुप आगम, **(२) अत्थागमे**—अर्थरूप आगम अने, **(३) तदुभयागमे**—सूत्र अने अर्थरूप आगम।

प्रश्न ३—सूत्र आगम कोने कहे छे?

उत्तर—तीर्थंकरोना मुखेथी सांभळेली वाणीने गणधर वगेरेअे जे आचारांग आदि आगम रूपे गूंथीने जेनी सूत्र रूपे रचना करी छे, तेने सूत्र आगम कहे छे।

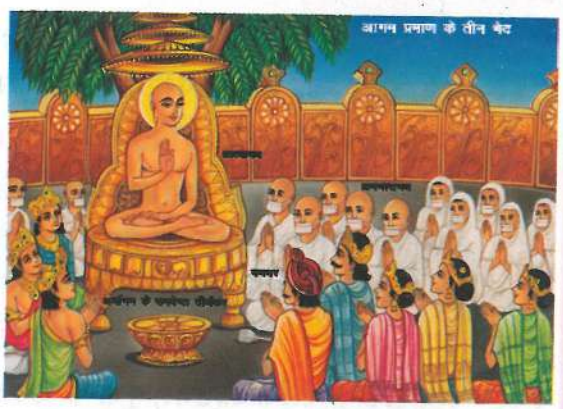

प्रश्न ४—अर्थ आगम कोने कहे छे?

उत्तर—तीर्थंकरोअे पोताना श्री मुखे जे भाव प्रगट कर्या छे, ते अर्थरूप आगमोने, अर्थ आगम कहे छे। सूत्रोना अनुवाद - भाषांतरने पण अर्थ आगम कहे छे।

प्रश्न ५—उच्चार शुद्धि माटे कई वातोनुं ध्यान राखवुं जोइअे?

उत्तर—पाठनो कानो, मात्रा, मींडुं, पद, अक्षर वगेरे ध्यानथी वांचवुं, बोलवुं जोईअे। जेम के 'चेइयं' शब्दनी जग्याअे 'चेवयं' शब्द बोले, तो दोष लागे छे। शुद्धि जाळववा माटे नियमित पाठ फेरववा (परियट्टणा) जोईअे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) प्रतिक्रमणनो चोथो पाठशेना विशेनो छे? (२) ज्ञानना पाठना अतिचार केटला छे? कया कया?

पाठ : 5 दर्शन सम्यक्त्वनो पाठ

प्रश्न १—प्रतिक्रमणना पांचमां पाठमां शेनुं स्वरूप बताव्युं छे?

उत्तर—समकितनुं।

प्रश्न २—समकित अेटले शुं?

उत्तर—सुदेव, सुगुरु अने तेमना द्वारा प्ररूपित नव तत्त्व आदि सुधर्म प्रत्ये यथार्थ श्रद्धा करवी ते समकित छे।

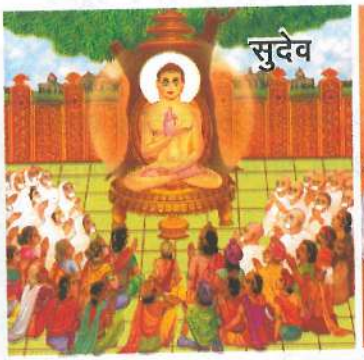

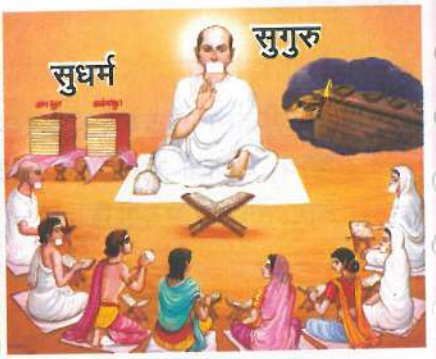

प्रश्न ३—आपणो जैन धर्म कोणे बतावेलो छे?

उत्तर—राग-द्वेष रहित, केवळज्ञानी जिनेश्वर भगवंतोअे जैन धर्म बतावेलो छे।

प्रश्न ४—परमार्थ कोने कहे छे? 'परपाखंड' अेटले शुं?

उत्तर—नवतत्त्व आदि विस्तृत समजणने परमार्थ कहे छे। 'परपाखंड' अेटले जिनेश्वरे बतावेला धर्म सिवायना अन्य धर्मो।

प्रश्न ५—परमार्थने जाणवावाळाओना परिचयथी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर—(१) नवुं ज्ञान प्राप्त थाय छे। (२) शंकाओनुं निवारण थाय छे। (३) अतिचार शुद्धि थाय छे। (४) ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप निर्मळ तथा दृढ बने छे।

प्रश्न ६—जिन वचनमां शंका कराय? कारण आपो।

उत्तर—ना, न कराय, कारण के शंका ज्ञानावरणीय कर्म तथा मोहनीय कर्मना उदये बुद्धिनी अल्पताथी थाय छे। ज्यारे जिन वचन तो जेओ राग-द्वेष रहित छे तेवा केवळज्ञानी जिनेश्वरे कहेल छे, ते ज यथार्थ छे, ते सत्य छे। माटे जिनवचनमां श्रद्धा करी पोतानी शंका दूर करवी।

प्रश्न ७—परपाखंडीनी प्रशंसा के परिचय शा माटे न करवो?

उत्तर—परपाखंडीना धर्ममां आडंबर, पूजा के चमत्कारमां छकाय जीवोनी हिंसा थाय छे। ज्यां हिंसा होय त्यां धर्म होई शके नहि। जीवहिंसा द्वारा जीवने दुर्गति अने अशाता ज मळे छे। माटे मोक्षप्राप्तिनी इच्छावाळाओअे परपांखडीनी प्रशंसा के परिचय न करवो।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) प्रतिक्रमणनो पांचमो पाठशेना विशेनो छे? (२) समकितना अतिचार केटला? कया कया?

पाठ : 6

1. अहिंसा अणुव्रत

प्रश्न १—व्रत अेटले शुं?

उत्तर—व्रत अेटले विरति-नियम-मर्यादामां आववुं।

प्रश्न २—प्रथम व्रतने प्राणातिपात शा माटे कहे छे? जीवोनी हिंसा संबन्धी होवाथी जीवातिपात केम नथी कहेवातुं?

उत्तर—त्रस के स्थावर जीवोना दस प्राणमांथी आयुष्य प्राणनो नाश (हिंसा) करवो तेने प्राणातिपात कहे छे। जीव तो अजर अमर छे। तेनो नाश करी शकातो नथी माटे आ व्रतने प्राणातिपात कहे छे।

त्रस जीवनी रक्षा (अहिंसा अणुव्रत)

प्रश्न ३—सूक्ष्म अेकेन्द्रियने हणवाना पच्चक्खाण शा माटे करवामां आवे छे?

उत्तर—ते जीवो आपणाथी मार्या मरता नथी, बाल्या बळता नथी, पण तेमनी हिंसाना पच्चक्खाण न करेल होय, तो अपच्चक्खाणनी क्रिया द्वारा पाप लागे छे माटे।

प्रश्न ४—प्रथम अणुव्रत शेना विशेनुं छे?

उत्तर—बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय आदि त्रस जीवोनी हिंसाथी निवर्तवानुं (त्यागनुं) छे।

प्रश्न ५—श्रावक त्रस जीवोनी हिंसानो त्याग शा माटे करे छे?

उत्तर—श्रावकने पृथ्वीकाय आदि पांच स्थावर जीवोनी हिंसानो त्याग करवानी इच्छा होवा छतां पण ते हिंसा सम्पूर्ण छोडी शकतो नथी। ज्यारे त्रसजीवोमां स्थावर जीवो करतां इन्द्रिय, योग, प्राण वगेरे वधारे होय छे, तेथी तेने मारवाथी वधु दुःख थाय छे। तेथी तेमनी हिंसाथी वधु पाप लागे छे। माटे श्रावक त्रस जीवोनी हिंसाथी बचवानो प्रयत्न करे छे।

प्रश्न ६—शरीरने पीडाकारीनां उदाहरण आपो?

उत्तर—कृमि, वाळो, जू, लींख वगेरे।

प्रश्न ७—आकुट्टि हणवा निमित्ते हणवाना पच्चक्खाण अेटले शुं?

उत्तर—कषायवश, निर्दयतापूर्वक प्राणरहित करवां, मारवानी इच्छाथी मारवुं, तेने आकुट्टिथी मारवुं कहेवाय छे, तेना पच्चक्खाण श्रावक करे छे।

प्रश्न ८—जीवने मारवावाळाने पाप शा माटे लागे छे?

उत्तर—मारवानी दुष्ट भावना अने दुष्ट प्रवृत्तिथी जीवने मारनारने पाप लागे छे। माटे दरेक कार्य जतनापूर्वक (उपयोगथी) हिंसा न थाय ते रीते करवा।

प्रश्न ९—अहिंसा व्रतना पालनथी, कया गुणो प्राप्त थाय छे?

उत्तर—करुणा, क्षमा, दया, कोमळता, मैत्री आदि अनेक गुणो प्राप्त थाय छे।

प्रश्न १०—पहेलां व्रतनी कोटि केटली?

उत्तर—पहेलुं व्रत २ करण अने ३ योगथी (दुविहं तिविहेणं) पच्चक्खाण लई करी शकाय छे। २ करण × ३ योग = ६ कोटि छे।

प्रश्न ११—प्रथम व्रतना अतिचार केटला? कया कया?

उत्तर—प्रथम व्रतना अतिचार पांच छे। बंधेथी भत्तपाणवोच्छेअे सुधी।

प्रश्न १२—प्रथम अणुव्रत केटला समयनुं छे?

उत्तर—प्रथम अणुव्रत जावज्जीव - जीवुं त्यां सुधीनुं छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) जैनोनी कुळ देवी कई? (२) पहेला व्रतनी कोटि केटली? (३) प्रथम व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (४) प्रथम अणुव्रत केटला समयनुं छे?

पाठ : 7

2. सत्य अणुव्रत

प्रश्न १—बीजुं अणुव्रत शेना विशेनुं छे?

उत्तर—मोटा जूठथी निवृत्त थवानुं छे।

प्रश्न २—मोटा जूठ केटला प्रकारना छे? कया कया?

उत्तर—मोटां जूठ पांच प्रकारनां छे—कन्नालिक, गोवालिक, भोमालिक, थापणमोसो, मोटकी कूडी शाख।

प्रश्न ३—बीजा अणुव्रतमां आवता इत्यादि शब्दथी कयुं जूठ समजवुं जोइअे?

उत्तर—खोटो आरोप लगाववो, विश्वासघात करवो, भगवानना खोटा सोगंद खावा, खोटो उपदेश आपवो, राजकीय मोटुं जूठ बोलवुं वगेरे।

मोटा जूठनो त्याग (सत्य अणुव्रत)

प्रश्न ४—सत्य व्रतना पालनथी कया गुणो प्राप्त थाय?

उत्तर—नीडरता, बीजानो विश्वास प्राप्त थाय, लोकोमां प्रिय बने, आदेय नामकर्मनी प्राप्ति थाय आदि अनेक लाभ थाय छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) बीजा व्रतनी कोटि केटली? (२) बीजा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) बीजुं अणुव्रत केटला समयनुं छे?

पाठ : 8

3. अचौर्य अणुव्रत

प्रश्न १—अदत्तादान अेटले शुं?

उत्तर—कोईपण वस्तुने तेना मालिकनी आज्ञा विना लेवी ते अदत्तादान अेटले के चोरी छे।

प्रश्न २—त्रीजा व्रतमां केटला प्रकारनी चोरीनो त्याग छे?

उत्तर—त्रीजा व्रतमां मुख्य चार प्रकारनी मोटी चोरीनो त्याग छे—(१) खातर पाडी – दिवालमां बाकोरुं पाडी घरमां घूसवुं अथवा शस्त्रथी के बळथी मुसाफरोने के घरने लूंटवा। (२) खिस्सां कापवां। (३) ताळां तोडवां। (४) कोईनी पडी गयेली वस्तु उठावीने पोते लई लेवी।

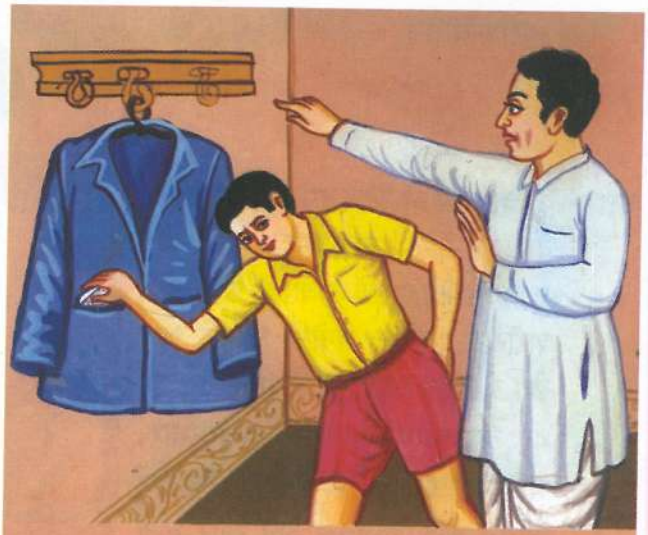

मोटी चोरीनो त्याग (अस्तेय अणुव्रत)

प्रश्न ३—त्रीजा व्रतमां सगां सम्बन्धीने स्थान शा माटे आपवामां आव्युं छे?

उत्तर—सगां सम्बन्धीनी साथे ओळखाणने कारणे जरूर पडये रोजनी वपराशनी वस्तुओ तेमने पूछ्या विना लेवी, ताळुं खोलवुं वगेरे करवामां आवे छे। आवुं कार्य चोरी कहेवातुं नथी। माटे तेनो आगार राखवामां आव्यो छे।

प्रश्न ४—मोटी चोरी कोने कहे छे? नानी चोरी शुं छे?

उत्तर—पूछ्या विना कोईनी अेवी चीज लेवी के जेनाथी तेने दु:ख थाय, लोकनिंदा थाय, राजदंड मळे, तेने **मोटी चोरी** कहे छे। चोरीनी भावना वगर पोताना उपयोग माटे आज्ञा विना कागळ, पेन्सिल जेवी सामान्य के तुच्छ वस्तु लेवी, ते **नानी चोरी** छे।

प्रश्न ५—अचौर्य व्रतनां पालनथी कया गुणो प्राप्त थाय?

उत्तर—लोकोने विश्वासपात्र थाय, स्नेहीजन नो प्रेम मळे, यशकीर्ति मळे, निर्भयता आदि गुणो मळे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) त्रीजा व्रतनी कोटि केटली? (२) त्रीजा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) त्रीजुं अणुव्रत केटला समयनुं छे?

पाठ : 9

4. ब्रह्मचर्य अणुव्रत

प्रश्न १—स्वस्त्री संतोष केटला प्रकारनो होय छे?

उत्तर—अनेक प्रकारनो होय छे। जेम के 1. अेक विवाह पछी बीजानी साथे विवाह नहि करुं। 2. पत्नीना स्वर्गवास पछी अन्य साथे विवाह नहि करतां पूर्ण ब्रह्मचर्यनुं पालन करीश। 3. अमुक तिथिओ, पर्वो अने श्रावण महिनामां ब्रह्मचर्यनुं पालन करीश वगेरे।

कामुकतानो त्याग (ब्रह्मचर्य अणुव्रत)

प्रश्न २—ब्रह्मचर्यना पालन माटे शी रीते चिंतन करवुं जोईअे?

उत्तर—1. ब्रह्मचर्य अे श्रेष्ठ तप छे। ब्रह्मचारीने देवता पण नमस्कार करे छे। 2. कामभोग झेर जेवां घातक छे, तेनाथी शरीरमां भयंकर रोगोनी उत्पत्ति थाय छे। 3. नरक आदि दुर्गति प्राप्त थाय छे। 4. ब्रह्मचर्यना पालक **जम्बूकुमार, मल्लिनाथजी, राजेमति** विगेरेनुं जीवन केवुं उज्जवळ अने सुंदर बन्युं हतुं! तेवुं चिंतन करवुं जोईअे।

प्रश्न ३—ब्रह्मचर्यनु पालन करवा शुं करवू जोइये?

उत्तर—1. सिनेमा, टी.वी. न जोता अभ्यास करवो जोइये। 2. मर्यादा वाला वस्त्रो पहरवा जोइये। 3. महापुरुषोना जीवननी वार्ताना पुस्तको वाचवा जोइये।

प्रश्न ४—ब्रह्मचर्यना पालनथी शुं लाभ थाय?

उत्तर—ब्रह्मचर्यना पालनथी 1. शरीर निरोगी, 2. हृदय बळवान, 3. इन्द्रियो सतेज, 4. बुद्धि तीक्ष्ण, 5. चित्त स्वस्थ रहे छे। 6. कषायोनी अने विकारोनी उपशांतता, 7. मोहभावमां घटाडो, 8. व्रत नियम-संयमनी वृद्धि, 9. भौतिक अने आत्मिक अनेक लाभो थाय छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) चोथा व्रतनी कोटि केटली? (२) चोथा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) चोथुं अणुव्रत केटला समयनुं छे?

पाठ :10

5. अपरिग्रह अणुव्रत

प्रश्न १—पांचमुं अणुव्रत शेना विषे छे?

उत्तर—वर्तमान समये पोतानी पासे जेटलो परिग्रह छे, तेटलो के तेनाथी वधु के ओछा **परिग्रहनी मर्यादा** करवा विषेनुं छे।

प्रश्न २—परिग्रह अेटले शुं?

उत्तर—परिग्रह अेटले **मूर्च्छा** (आसक्ति), **ममत्व** (मारापणुं)।

प्रश्न ३—परिग्रह केटला? कया कया?

उत्तर—ते ९ छे, खेत्त, वत्थु, हिरण्ण, सुवण्ण, धन, धान्य, दुपद, चउप्पद, कुविय।

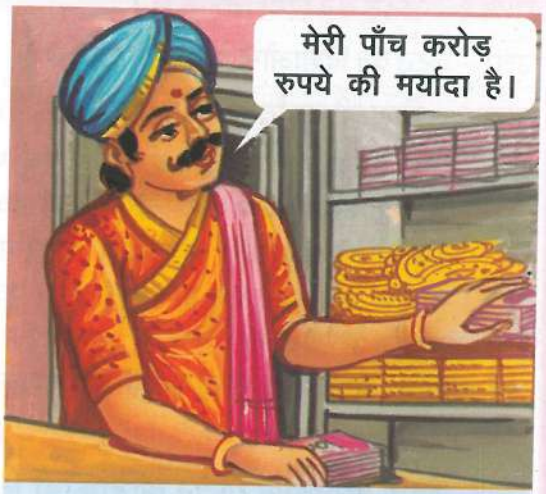

परिग्रहनी मर्यादा (अपरिग्रह अणुव्रत)

प्रश्न ४—परिग्रहनी मर्यादा केवी रीते करशो?

उत्तर—पोतानी रोजिंदी के वार्षिक जरूरियातनी वस्तुओ करतां थोडीक वधारे छूट राखीने परिग्रहनी मर्यादा करवी। जेम के वर्षमां १० जोडी कपडां वापरतां होय तो १३ जोडथी वधारे राखवा नहि तेवी मर्यादा करवी। (आम तो पोतानी जरूरियात घटाडवानी भावना राखवी जोईअे। परन्तु ज्यां सुधी तेम न करी शके त्यां सुधी उपर प्रमाणे मर्यादाओ करी लेवी।)

प्रश्न ५—अपरिग्रहव्रतनुं पालन करवाथी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर—परिग्रह अे पापनुं कारण छे, तेने माटे जीव-हिंसा, साचुं-खोटुं, कावादावा, चोरी वगेरे करी जीव पाप वधारे छे, माटे अपरिग्रहव्रतनुं पालन करवुं जोईअे। तेनाथी (१) खराब विचारोथी मुक्ति मळे छे। (२) वस्तुओमां आसक्ति ओछी थाय छे। (३) जीव संतोषी बने छे। (४) कावादावा, झघडा वगेरे मटे छे। (५) धीरे धीरे सम्पूर्ण अपरिग्रही पण बनी शकाय छे।

प्रश्न ६—आ व्रतमां अतिचार अने अनाचार केवी रीते लागे?

उत्तर—जे जे बोलनी जेटली मर्यादा करी होय, तेनुं बेकाळजीथी, अजाण्यो हिसाब-किताब नहि मेळववाथी उल्लंघन थयुं होय, तो आ बधी मर्यादाओ ते अतिचार छे। लोभ आदिने कारणे जाणी जोईने धारेली मर्यादानुं पालन न करवुं ते अनाचार छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) पांचमां व्रतनी कोटि केटली? (२) पांचमा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) पांचमुं अणुव्रत केटला समयनुं छे?

पाठ :11

6. दिशा परिमाण व्रत

प्रश्न १—छट्ठुं व्रत शेना विशेनुं छे?

उत्तर—छट्ठुं व्रत दिशाओनी मर्यादा करवानुं छे?

प्रश्न २—दिशानी मर्यादा केटला प्रकारे कराय छे?

उत्तर—दिशाओ छ छे। जे दिशामां जेटलुं जवुं पडे तेम होय तेटली मर्यादा करवी। जेम के ऊंचा पर्वत के हवाई जहाजथी अमुक कि.मी.थी वधु ऊंचे जवुं नहि। भोंयरांमां के ऊंडी खाणमां अमुक कि.मी.थी वधु नीचे जवुं नहि। पूर्व, पश्चिम, उत्तर के दक्षिण दिशाओमां (तिर्च्छुं) अमुक कि.मी.थी आगळ जवुं नहि। आम ऊंची, नीची अने तिर्च्छी दिशानी मर्यादा कराय छे।

दिशाओनी मर्यादा (दिशा अणुव्रत)

प्रश्न ३—दिशा परिमाण (मर्यादा) थी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर—**लोक असंख्यात योजन क्रोडाक्रोडी** विस्तारवाळो छे। दिशाओनी मर्यादा करवाथी मर्यादानी बहार जवानो त्याग थवाथी ते जग्याओ थती हिंसा आदि पापोनो मोटो कर्मबंध अटके छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) छट्ठा व्रतनी कोटि केटली? (२) छट्ठा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) छट्ठुं अणुव्रत केटला समयनुं छे? (४) प्रथम गुणव्रत कयुं छे?

पाठ :12

7. उपभोग-परिभोग परिमाणव्रत

प्रश्न १—उपभोग-परिभोग कोने कहे छे?

उत्तर—जे पदार्थ फक्त अेक ज वखत वापरी शकाय छे, ते **उपभोग** कहेवाय छे। जेमके अनाज, पाणी वगेरे। जे वारंवार वापरी शकाय तेवा पदार्थने **परिभोग** कहेवाय छे। जेम के वस्त्र, आभूषण, शय्या वगेरे।

प्रश्न २—उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत अेटले शुं?

उत्तर—उपभोग-परिभोग योग्य वस्तुओनी मर्यादा करवी। सातमा व्रतमां बतावेल २६ बोलोनी मर्यादा करवी तथा १५ कर्मादाननो त्याग करवो।

प्रश्न ३—सचेत त्यागथी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर—(१) स्वाद पर जीत। (२) ज्यां अचेत वस्तु खावानी सुविधा न होय त्यां संतोष। (३) पू. साधु-साध्वीओने सूझतां निर्दोष, अचेत आहार पाणी वहोरावी शकाय। (४) तिथि अने पर्वना दिवसोमा घरमां लीलोतरी आदिनो आरम्भ न थाय। (5) जीवो प्रत्ये विशेष अनुकंपा वधे।

प्रश्न ४—कर्मादान कोने कहे छे?

उत्तर—जे धंधा अने कार्योमां विशेष हिंसा आदि कारणोथी कर्मोनो विशेष बंध थाय छे, तेने **कर्मादान** कहे छे।

प्रश्न ५—पांचमुं अने सातमुं व्रत अेक करण अने त्रण योगथी शा माटे ग्रहण कराय छे?

उत्तर—श्रावक पांचमा अने सातमा व्रतनी मर्यादा पोतानी जरूरियात जेटली ज करी शकतो होवाथी पोते मन, वचन, कायाथी करुं नहि तेवा पच्चक्खाण लई शके छे। पण परिवार आदिनी जवाबदारीने कारणे परिग्रह आदि मन, वचन, कायाथी करावुं नहि, अनुमोदुं नहि तेवा पच्चक्खाण ले तो व्रत भंग थवानी शक्यता रहेली होय छे। माटे अेक करण त्रण योगथी पच्चक्खाण ले छे।

प्रश्न ६—रात्रिभोजननो त्याग कया व्रतमां आवे छे?

उत्तर—रात्रिभोजननो त्याग अपेक्षाथी सातमा व्रतमां रहेलो छे। उपभोग अने परिभोगनी काळ आश्रित (रात्रीनी) मर्यादा करे, तो ते पालन थई शके।

प्रश्न ७—उपभोग-परिभोगनी वस्तुओनी मर्यादाथी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर—1. इच्छा ओछी थाय छे, आवश्यकताओ घटे छे। 2. जीवन संतोषी अने त्यागी बने छे। 3. धर्म आचरण माटे वधु समय मळे छे। 4. घणो मोटो कर्मबंध अटके छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) सातमा व्रतनी कोटि केटली? (२) भोजन सम्बन्धी अतिचार कया कया केटला? (३) सातमुं अणुव्रत केटला समयनुं छे? (४) बीजुं गुणव्रत कयुं छे?

पाठ :13

8. अनर्थ दंड विरमण व्रत

प्रश्न १—दंड कोने कहे छे? अनर्थ दंड अेटले शुं?

उत्तर—मन, वचन, कायानी अशुभ प्रवृत्ति के जेनाथी आत्मा दंडाय, तेने **दंड** कहे छे।

जे कार्य पोताना के परिवारना कोई हितनुं न होय, जेनुं कोई प्रयोजन न होय अने जेना कारणे व्यर्थ हिंसा थवाथी आत्मा पापोथी दंडित थाय, तेने **अनर्थदंड** कहे छे।

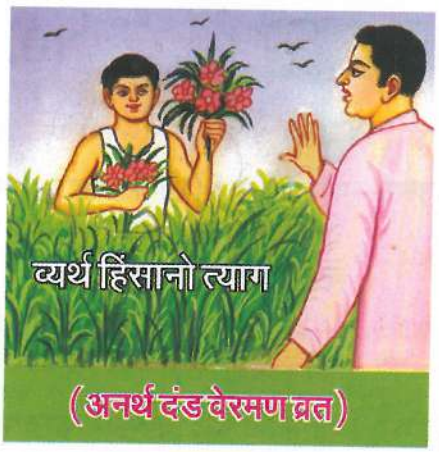

प्रश्न २—आत्माने अनर्थदंडनुं पाप लागे तेवां कार्यो जणावो।

उत्तर—जेम के विकथा करवी, खराब के खोटो उपदेश आपवो, पाणीना नळ खुल्लां मूकवां, जरूर विना वस्तुओनी खरीदी करवी वगेरे प्रवृत्तिओ **अनर्थ दंड** कहेवाय छे।

प्रश्न ३—अनर्थ दंड केटला प्रकारना छे? कया कया?

उत्तर—अनर्थ दंड चार प्रकारना छे। (१) अवज्झाणाचरियं, (२) पमायाचरियं, (३) हिंसप्पयाणं, (४) पावकम्मोवअेसं।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) आठमा व्रतनी कोटि केटली? (२) आठमा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) आठमुं अणुव्रत केटला समयनुं छे? (४) त्रीजुं गुणव्रत कयुं छे?

पाठ :14

९. सामायिक व्रत

प्रश्न १—साधुनी अने श्रावकनी सामायिकमां शो फेर छे?

उत्तर—(१) साधुनी सामायिक जावज्जीवनी होय छे। श्रावकनी अमुक समयनी (बे घडी, चार घडी वगेरे) होय छे। (२) साधुनी सामायिक ३ करण अने ३ योगथी अेम ९ कोटिथी लेवामां आवे छे। श्रावकनी सामायिक सामान्य रीते बे करण अने त्रण योगथी अेम ६ कोटिथी अथवा ८ कोटिथी लेवामां आवे छे। (८ कोटिनो पाठ - करतं पि अन्नं न समणुजाणामि, वयसा कायसा, शब्दो बोलवामां आवे छे)

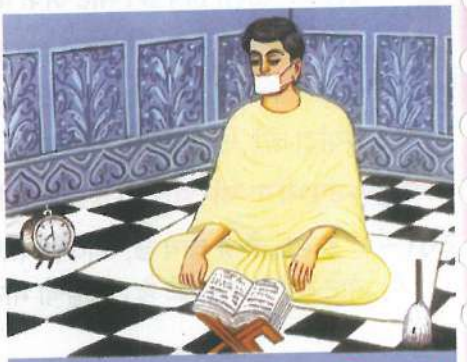

प्रतिदिन शुद्ध सामायिक (सामायिक व्रत)

अपेक्षित प्रश्नो

(१) सावद्य योग कोने कहे छे? (२) नवमा व्रतना अतिचार केटला? कया कया ? (३) सामायिक केवडी? (४) प्रथम शिक्षाव्रत कयुं छे?

पाठ :15

10. देशावगासिक व्रत

प्रश्न १—देशावगासिक व्रत कोने कहे छे?

उत्तर—पहेलानां बधां व्रतोमां मर्यादाओ आजीवन माटे करी हती, तेने टूंकावी हजी पण वधु मर्यादा प्रतिदिन माटे करवी, ते देशावगासिक व्रत छे।

प्रश्न २—वर्तमानमां आ व्रत संक्षेपमां शी रीते करवामां आवे छे?

उत्तर—वर्तमानमां चौद नियमोथी करवामां आवे छे—

(१) सचेत मर्यादा — खावा पीवानी सचेत वस्तुनी मर्यादा।
(२) द्रव्य — खावा-पीवानां कुल द्रव्योनी मर्यादा।
(३) विगय — दूध, दहीं, घी, तेल, गोळ, खांडनी मर्यादा।

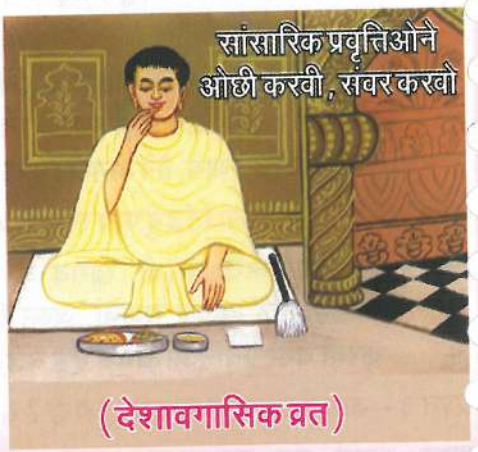

(देशावगासिक व्रत)

(४) स्नान — स्नाननी संख्या तथा तेमां पाणीनी मर्यादा।
(५) पगरखां — बूट-चंपलनी संख्यानी मर्यादा।
(६) दिशा — रहेठाणनी चारे दिशामां जवानी मर्यादा।
(७) शयन — सूवा-बेसवाना पलंग, सोफा, खुरशी वगेरेनी मर्यादा।
(८) ब्रह्मचर्य — यथाशक्ति ब्रह्मचर्य पाळवुं।
(९) कुसुम — फूल तथा सुगंधी द्रव्योनी मर्यादा।
(१०) विलेपन — शरीरे लगाववाना क्रीम, पाउडर, तेल वगेरेनी मर्यादा।
(११) वाहन — वाहननी संख्यानी मर्यादा
(१२) वस्त्र — रोजना पहेरवानां/वापरवानां वस्त्रोनी मर्यादा।
(१३) भोजन — दिवसमां केटलीवार तथा केटलो आहार वापरवो तेनी मर्यादा।
(१४) मुखवास — मुखवास केटली जातना अने केटला वापरवा तेनी मर्यादा।

उपरोक्त धारणा प्रमाणे पच्चक्खाण एगविहं, तिविहेणं, न करेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

प्रश्न ३—छट्ठा व्रत अने दशमा व्रतमां शुं फरक छे?

उत्तर—छट्ठा व्रतमां दिशानी मर्यादाना जावज्जीवना पच्चक्खाण करवामां आवे छे। दशमा व्रतमां अेक दिवस-अेक रात्री माटे दिशा अने भोग-उपभोगनी मर्यादा करवामां आवे छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) दशमा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (२) दशमुं व्रत केटली कोटिथी ग्रहण करवामां आवे छे? (३) अेक अहोरात्री अेटले केटलो समय? (४) मुनिजीवननां सेम्पलनुं व्रत कयुं? (५) दशमुं व्रत लेवानी तथा पारवानी विधि शुं? (प्रतिक्रमणना पुस्तकना आधारे तैयारी करवी।) (६) बीजुं शिक्षाव्रत कयुं छे?

पाठ :16 11. परिपूर्ण पौषधव्रत

प्रश्न १—पौषधव्रत अेटले शुं?

उत्तर—ज्ञान, दर्शन अने चारित्र वडे आत्माने पोषण आपवुं ते।

प्रश्न २—प्रतिलेखन, प्रमार्जन अेटले शुं?

उत्तर—वस्त्र आदि उपयोगमां आवनार बधां उपकरणोमां कोई जीव छे के नहि, तेनुं निरीक्षण (जोवुं) करवुं, ते **प्रतिलेखन** छे। जीव आदि देखाय तो तेने जतनापूर्वक हळवा हाथे पूंजणी के रजोहरणथी सुरक्षित स्थाने मूकवुं, ते **प्रमार्जन** छे।

प्रश्न ३—पौषधमां के दशमा व्रतमां प्रतिलेखन के प्रमार्जन शेनुं शेनुं करवुं जोइअे?

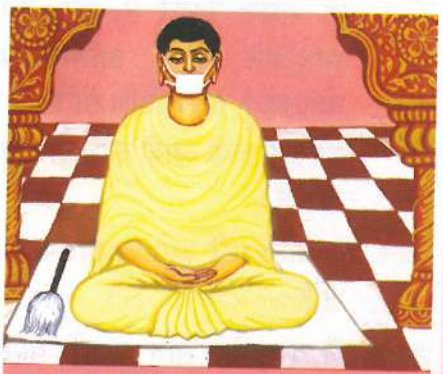

कोई पण सांसारिक प्रवृत्ति न करवी (पौषध व्रत)

उत्तर– पौषधमां के दशमा व्रतमां पहेलां 1. मुहपत्ति, 2. पछी गुच्छो, 3. रजोहरण, 4. वस्त्र, (आटलुं क्रमथी) 5. संथारियुं, 6. पौषधशाळा, 7. परठवानी भूमि, 8. गोचरीना पात्र अने 9. पुस्तक आदि उपयोगमां लेवाती/लीधेली दरेक वस्तुओनुं प्रतिलेखन करवुं जोईअे।

प्रश्न ४–पौषधव्रतमां शेना पच्चक्खाण करवामां आवे छे?

उत्तर– 1. चारे आहारनां, 2. अब्रह्म न सेववानां, 3. झवेरात अने सुवर्ण साथे न राखवाना, 4. फूलनी माळा न पहेरवाना, 5. चंदन आदिनुं विलेपन नहि करवाना, 6. शस्त्र, सांबेलां वगेरेथी थतां १८ प्रकारनां पापकारी कार्य नहि करवाना पच्चक्खाण करवामां आवे छे।

(पौषधव्रत ग्रहण करवानी तथा पारवानी विधि प्रतिक्रमणना पुस्तकना आधारे तैयार करवी।)

प्रश्न ५–प्रहर अेटले शुं? पौषध केटला प्रहरनो कराय छे?

उत्तर– **प्रहर** अेटले दिवस के रात्रीनो चोथो भाग। (अंदाजे पोणा त्रणथी त्रण कलाक) तेने **पोरसी** पण कहे छे। संपूर्ण पौषध आठ प्रहरनो थाय छे। मात्र रात्रीनो पौषध ग्रहण करवो होय, तो चार प्रहरनो रात्रिपौषध ग्रहण करी शकाय छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) ११मुं व्रत केटली कोटिथी ग्रहण करवामां आवे छे? (२) अगियारमा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) अगियारमुं व्रत केटला समय माटे (अथवा प्रहर माटे) ग्रहण करवामां आवे छे? (४) त्रीजुं शिक्षाव्रत कयुं छे?

पाठ :17

12. अतिथि संविभाग व्रत

प्रश्न १–अतिथि संविभाग व्रत अेटले शुं?

उत्तर– गृहस्थीना पोताना उपयोगमां लेवाता होय तेवा आहार आदि १४ प्रकारनी वस्तुओ जेना आववानी कोई तिथि के समय नक्की न होय, तेवा पंचममहाव्रतधारी साधुओने फक्त **आत्मकल्याणनी भावनाथी** वहोरावबुं, तेने अतिथि संविभाग व्रत कहे छे।

दरेक श्रावके आवो लाभ लेवानी रोज भावना भाववी जोईअे।

(अतिथि संविभाग व्रत)

प्रश्न २–पाढियारी अने अपाढियारी वस्तुओ कोने कहे छे?

उत्तर– जे वस्तुओने साधु-साध्वी वहोरी लीधां पछी पाछी आपतां नथी, तेने **अपाढियारी** वस्तुओ कहे छे। जे वस्तुओने साधु-साध्वीजी वहोरी लीधां पछी पोताना उपयोगमां लईने पाछी आपी दे छे, तेने **पाढियारी** कहे छे।

प्रश्न ३—पू. साधु-साध्वीजीने केटली वस्तु वहोरावी शकाय? तेमां पाढियारी अने अपाढियारी वस्तुओ कइ कइ?

उत्तर—पू. साधु-साध्वीजीने **१४ प्रकारनी वस्तु** वहोरावी शकाय—

अपाढियारी वस्तुओ ८ छे। तेनां नाम—(१) आहार, (२) पाणी, (३) मेवा-मीठाई, (४) मुखवास, (५) वस्त्र, (६) पात्र, (७) कांबळी, (८) रजोहरण।

पाढियारी वस्तुओ ६ छे, तेनां नाम—(१) बाजोठ, पाटला आदि। (२) पाट, पाटियुं, (३) शय्या, मकान, (४) संथारियु, (५) औषध, (६) भेषज।

प्रश्न ४—औषध अने भेषजमां शो फेर छे?

उत्तर—सूंठ, हळदर आंबळा, हरडे, लविंग वगेरे अेक अेक द्रव्य '**औषध**' कहेवाय छे। हिंगाष्टक चूर्ण, त्रिफळा वगेरे अनेक द्रव्यवाली वस्तुओ '**भेषज**' कहेवाय छे।

प्रश्न ५—शुं पू. साधु-साध्वीने वहोरावा लायक वस्तुओ १४ ज छे?

उत्तर—आ १४ वस्तुओ मुख्यत्वे साधुओने काममां आवे छे, तेथी तेनो उल्लेख करवामां आव्यो छे। तेना सिवाय धर्म उपयोगी पुस्तको, सोय, कातर वगेरे समजी लेवुं।

प्रश्न ६—शुं पू. साधु-साध्वीओ ज दानने पात्र छे?

उत्तर—पू. साधु-साध्वीजीने दान देवुं अे **सुपात्रदान** छे, तेथी आ व्रतमां तेनो उल्लेख करवामां आव्यो छे। प्रतिमाधारी श्रावक, व्रतधारी श्रावक अने स्वधर्मीने पण दान करी शकाय छे। ते सिवाय बीजाने अपातुं दान ते अनुकंपाथी थतुं दान छे।

प्रश्न ७—तीर्थंकरने १४ दानमांथी केटलां अने कया दान देवाय?

उत्तर—तीर्थंकर वस्त्र, पात्र, कंबल अने रजोहरण न राखता होवाथी ते ४ दान सिवायनां १० दान तेमने आपी शकाय।

प्रश्न ८—बारमा व्रतने धारण करनारे मुख्यत्वे कई कई बाबतोनुं ध्यान राखवुं जोइअे?

उत्तर—(१) रसोई बनावनारे अने जमनारे **सचित्त** वस्तुओ दूर राखीने बेसवुं जोईअे। (२) घरमां पण सचेत अने अचेत वस्तुओने **अलग-अलग राखवानी व्यवस्था** करवी जोईअे। (३) काचा पाणीना छांटा, लीली वनस्पति, शाकभाजीनो कचरो घरनी **जमीन पर फेलायेलो न राखवो**। (४) अचेत पाणी बनाव्युं होय तो ते **सांज सुधी राखी मूकवुं**। (५) गोचरीना समये **घरना दरवाजां खुल्लां राखवा** विवेक राखवो। (६) पोते सूझता होय तो **पोताना हाथे वहोरावानी** उत्कृष्ट भावना राखवी। (७) गोचरीनी विधिनी जाणकारी पू. साधु-साध्वीजी पासेथी **जाणी लेवी तथा ते ज्ञानमां वधारो** करतां रहेवुं। (८) पोते सूझता के असूझता होय, तो जे होय ते **साचुं बोलवुं**।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) करण, कोटि वगरनुं व्रत कयुं? (२) बारमा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) बारमा व्रतमां शेनी भावना भाववामां आवे छे? (४) चोथुं शिक्षाव्रत कयुं छे?

१२ व्रत अने संथाराना करण, योग अने कोटिने समजावतुं कोष्टक

व्रत	करण	योग	कोटि	विगत
१	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
२	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
३	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
४	२	३	६	देवता सम्बन्धी दुविहं तिविहेणं
	१	१	१	अेगविहं अेगविहेणं मनुष्य, तिर्यंच सम्बन्धी
५	१	३	३	अेगविहं तिविहेणं
६	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
७	१	३	३	अेगविहं तिविहेणं
८	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
९	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
१०	२	३	६	द्रव्यादिकनी मर्यादानी बहार दुविहं तिविहेणं
	१	३	३	द्रव्यादिकनी मर्यादानी अंदर अेगविहं तिविहेणं
११	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
१२	०	०	०	करण, कोटि विनानुं व्रत
संथारो	३	३	९	तिविहं तिविहेणं

प्रश्न—महाव्रत अने अणुव्रत वच्चेनो तफावत लखो।

उत्तर—महाव्रत अने अणुव्रत वच्चेनो तफावत—

महाव्रत	अणुव्रत
१. साधु धारण करे छे।	१. श्रावक ग्रहण करे छे।
२. ३ करण अने ३ योग अेम ९ कोटिथी धारवामां आवे छे। (३ करण छे : करवुं, करावबुं, अने अनुमोदना करवी। ३ योग छे : मन, वचन अने काया)	२. श्रावकनां व्रतो २ करण अने ३ योग अथवा १ करण अने १ योगथी अथवा १ करण अने ३ योगथी अेम ६ कोटिथी अथवा १ कोटिथी अथवा ३ कोटिथी ग्रहण कराय छे।
३. जावज्जीव माटे धराय छे। तीर्थंकर, गणधर आदि महापुरुषो ग्रहण करे छे माटे महाव्रत कहेवाय छे।	३. अेक वरसथी जावज्जीव सुधी के पोतानी मरजी प्रमाणे व्रत धराय छे।
४. सर्व जीवहिंसा, सर्व जूठ, सर्व चोरी, सर्व मैथुन तथा सर्व परिग्रहनो त्याग कराय छे।	४. स्थूल (मोटी) जीवहिंसा, स्थूल जूठ, स्थूल चोरी, स्थूल मैथुन तथा स्थूल परिग्रहनो त्याग कराय छे।
५. महाव्रत पांच छे।	५. अणुव्रत पांच, गुणव्रत ३ अने शिक्षाव्रत ४ अेम कुल १२ व्रतो छे।
६. पांच महाव्रतनी भावना २५, अतिचार १२५ छे।	६. १२ व्रतना अतिचार ९९ छे।
७. महाव्रतधारी साधुना गुणस्थानक ६ थी १४ छे।	७. अणुव्रतधारी श्रावकनुं गुणस्थान पांचमुं छे।
८. अेकथी पांच नरकमांथी नीकळेल जीव पंचमहाव्रतधारी साधु बनी शके छे।	८. पहेलीथी छट्ठी नरकमांथी नीकळेल जीव अणुव्रत धारी शके छे। श्रावक बनी शके छे।
९. जघन्य अष्ट प्रवचननुं ज्ञान होय छे। (पाँच समिति, त्रण गुप्ति)	९. नव तत्त्वनुं ज्ञान अने श्रद्धा होय छे। जघन्य नवकारशी व्रत करता होय छे।
१०. साधु काळ करी मात्र वैमानिक देवमां पांच अनुत्तर विमान सुधी तथा मोक्षमां जई शके छे।	१०. श्रावक मात्र वैमानिकना १२ देवलोक, ९ लोकांतिक सुधी जाय छे।

संस्कार विभाग

(नोंध–विद्यार्थीओअे ३५ बोलनो थोकडो तथा समजण बंने कंठस्थ करवाना रहेशे। परन्तु विशेष समजण थोकडानी नीचे लीटी करीने मूकवामां आवी छे। तेना आधारे मात्र चोथी श्रेणीनी परीक्षामां प्रश्नो पूछाशे नहि, परन्तु उपरनी श्रेणीना अभ्यासने समजवा माटे उपयोगी थशे।)

पांत्रीस बोल

पहेले बोले–गति चार*–(१) नारकी, (२) तिर्यंच, (३) मनुष्य, (४) देवता (**गति** अेटले गमन करवुं)

बीजे बोले–जाति पांच–(१) अेकेन्द्रिय, (२) बेइन्द्रिय, (३) तेइन्द्रिय, (४) चौरेन्द्रिय, (५) पंचेन्द्रिय।

(जीवोना जुदा जुदा विभागने **जाति** कहे छे। जाति नामकर्मथी अेकेन्द्रिय आदिपणुं मळे छे।)

त्रीजे बोले–काय छ–(१) पृथ्वीकाय, (२) अपकाय, (३) तेउकाय, (४) वाउकाय, (५) वनस्पतिकाय, (६) त्रसकाय, (**काय** अेटले शरीर अथवा समूह)

चोथे बोले–इन्द्रिय पांच–(१) श्रोत्रेन्द्रिय, (२) चक्षुरिन्द्रिय, (३) घ्राणेन्द्रिय, (४) रसनेन्द्रिय, (५) स्पर्शनेन्द्रिय।

(रूपी पदार्थोने आंशिक रीते जाणवामां सहायभूत थाय, तेने **इन्द्रिय** कहे छे। ते इन्द्रियो शब्द-रूप-रस-गंध-स्पर्श अेके-अेक विषयने ग्रहण करे छे।)

पांचमे बोले*–**पर्याप्ति छ**–(१) आहार, (२) शरीर, (३) इन्द्रिय, (४) श्वासोच्छ्वास, (५) भाषा, (६) मन।

बोल-१– नरक-तिर्यंच गतिमां जीव अनंता दु:खोने भोगवे छे। नरकमां **१०** प्रकारनी क्षेत्र वेदना भोगवे छे। ते अनंत **भूख, तरस, ठंडी, गरमी, दाह, ज्वर, भय, चिंता, खुजली अने पराधीनता**। बाह्य सुखनी अपेक्षाअे देवगति सारी छे, परन्तु मनुष्य गतिमांथी ज मोक्ष मळे छे, माटे मनुष्य गति सर्वथी श्रेष्ठ छे।

बोल ५– जीव ओछामां ओछी **त्रण पर्याप्ति** बांधे छे। प्रथम पर्याप्तिने १ समय बाकीनी पांच पर्याप्तिने १-१ अंतर्मुहूर्तनो अलग अलग समय लागे छे छतां कुल छ पर्याप्ति बांधतां अंतर्मुहूर्तनो समय लागे छे। **अेकेन्द्रियने प्रथम चार, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय अने असंज्ञी पंचेन्द्रियने प्रथम पांच तथा संज्ञी पंचेन्द्रियने छ पर्याप्ति होय छे।**

(**पर्याप्ति** - जीवनी पौद्गलिक शक्ति जेना द्वारा जीव आहार आदिनां पुद्गलोने शरीर, इन्द्रिय आदि रूपमां बदलावानी क्रिया पूर्ण करे तेने **पर्याप्ति** कहे छे अने तेनी अपूर्णताने **अपर्याप्ति** कहे छे। जे जीवने जेटली पर्याप्ति बांधवानी होय, तेटली पूरे पूरी बांधी न ले त्यां सुधी तेने **अपर्याप्तो** कहे छे। ज्यारे जेटली मळवानी होय तेटली पर्याप्ति पूर्ण बांधी ले त्यार पछी तेने **पर्याप्तो** कहेवाय छे।)

छट्ठे बोले*—प्राण दश—(१) श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण, (२) चक्षुरिन्द्रिय बलप्राण, (३) घ्राणेन्द्रिय बलप्राण, (४) रसनेन्द्रिय बलप्राण, (५) स्पर्शनेन्द्रिय बलप्राण, (६) मन बलप्राण, (७) वचन बलप्राण, (८) काय बलप्राण, (९) श्वासोच्छ्वास बलप्राण (१०) आयुष्य बलप्राण।

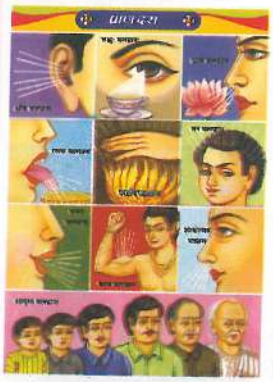

(**प्राण** अेटले जेना संयोगे संसारी जीवोने श्रोत (सांभळवुं, जोवुं) आदि क्रिया थाय छे प्राण-जीवनशक्ति—जेना वडे जीव जीवे छे - तेने प्राण कहेवाय छे। तेना बे प्रकार छे—**(१) द्रव्य प्राण**—जेना योगे आत्मानो शरीर साथे संबंध टकी रहे छे। **(२) भावप्राण**—जीवनी साथे तादात्म्यथी जे ज्ञान आदि गुणो रहेलां छे ते भावप्राण। **द्रव्यप्राण** १० प्रकारना **भावप्राण** चार प्रकारना छे—ज्ञान-दर्शन-सुख अने वीर्य।)

सातमे बोले—शरीर पाँच—(१) औदारिक, (२) वैक्रिय, (३) आहारक, (४) तेजस, (५) कार्मण - (शीर्यते इति शरीर - जे शीर्ण-विशीर्ण-नाश थवाना स्वभाववाळुं छे, तेने **शरीर** कहे छे)

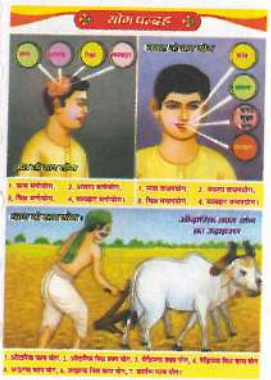

आठमे बोले : योग पंदर—(१) सत्य मनयोग, (२) असत्य मनयोग, (३) मिश्र मनयोग, (४) व्यवहार मनयोग, (५) सत्य वचनयोग, (६) असत्य वचनयोग, (७) मिश्र वचनयोग, (८) व्यवहार वचनयोग, (९) औदारिक शरीर काययोग, (१०) औदारिक शरीर मिश्र काययोग, (११) वैक्रिय शरीर काययोग, (१२) वैक्रिय शरीर मिश्र काययोग, (१३) आहारक शरीर काययोग, (१४) आहारक शरीर मिश्र काययोग, (१५) कार्मण काययोग।

(**योग** अेटले मन, वचन अने कायानी प्रवृत्ति, व्यापार। मनना ४, वचनना ४, कायाना ७ अेम कुल १५ योग छे)

बोल ६—अेकेन्द्रियने चार, बेइन्द्रियने छ, तेइन्द्रियने सात, चौरेन्द्रियने आठ, असंज्ञी पंचेन्द्रियने नव, संज्ञी पंचेन्द्रियने दश प्राण होय छे।

नवमे बोले—उपयोग १२—(१) मतिज्ञान, (२) श्रुतज्ञान, (३) अवधिज्ञान, (४) मन:पर्यवज्ञान, (५) केवळज्ञान, (६) मतिअज्ञान, (७) श्रुतअज्ञान, (८) विभंगज्ञान, (९) चक्षुदर्शन, (१०) अचक्षुदर्शन, (११) अवधिदर्शन, (१२) केवळदर्शन।

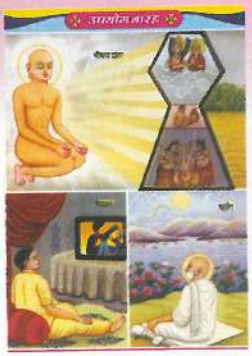

(१) **ज्ञान*** अेटले जेनाथी वस्तुने विशेष रूपे जाणवी ते।

(२) **दर्शन** अेटले जेनाथी वस्तुना सामान्य स्वरूपने जोवुं ते।

(३) ज्ञान, दर्शनमां आत्मानी प्रवृत्तिने **उपयोग** कहे छे।)

दशमे बोले—कर्म आठ*—(१) ज्ञानावरणीय, (२) दर्शनावरणीय, (३) वेदनीय, (४) मोहनीय, (५) आयुष्य, (६) नाम, (७) गोत्र, (८) अंतराय।

(मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय अने योगना कारणे जीव साथे जे बंधाय छे तेने **कर्म** कहे छे।)

अगियारमे बोले—गुणस्थानक १४—(१) मिथ्यात्व, (२) सास्वादान, (३) मिश्र, (४) अविरति सम्यक् दृष्टि, (५) देशविरति (श्रावक), (६) प्रमत्त संजति (साधु), (७) अप्रमत्त संजति, (८) निवर्त्ति बादर, (९) अनिवर्त्ति बादर, (१०) सूक्ष्म संपराय, (११) उपशांत मोहनीय, (१२) क्षीण मोहनीय, (१३) सयोगी केवली, (१४) अयोगी केवली।

(मोह अने योगना कारणे आत्मानी ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूप गुणोनी तारतम्यता (वध घट) वाळी अवस्थाने **गुणस्थान** कहे छे।)

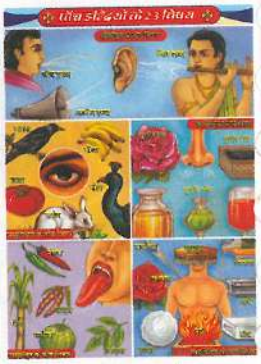

बारमे बोले—पांच इन्द्रियना विषय २३—

श्रोत्रेन्द्रियना ३ विषय—जीव शब्द, अजीव शब्द अने मिश्र शब्द।

चक्षुरिन्द्रियना ५ विषय—काळो, नीलो (लीलो), लाल, पीळो, सफेद। पांच वर्ण।

बोल-९— ज्ञानना बे प्रकार छे—ज्ञान अने अज्ञान। केवलज्ञानीनां वचनोने यथार्थ स्वरूपे जाणे ते **ज्ञान**, केवलज्ञानीनां वचनोने ओछां, अधिक के विपरीत स्वरूपे जाणे ते **अज्ञान, मिथ्यादृष्टिने अज्ञान अने सम्यक्दृष्टिने ज्ञान होय छे।**

बोल-१०— लोकमां अनंता पुद्गलो छे। तेमांथी अमुक पुद्गलो जीव ग्रहण करी शके तेवा छे। तेवा पुद्गलोना समूहने **वर्गणा** कहे छे। तेमां कर्म रूपे बनी शके तेवां कार्मण पुद्गलोना समूहने **कार्मणवर्गणा** कहे छे। ते कार्मणवर्गणानां पुद्गलो ज्यारे आत्मप्रदेशे लागे त्यारे ते **द्रव्यकर्म** कहेवाय छे, मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय, योगरूप भावोने **भावकर्म** कहे छे।

घ्राणेन्द्रियना २ विषय-सुरभिगंध, दुरभिगंध।

रसनेन्द्रियना ५ विषय-तीखो, कडवो, कसायेलो (तूरो), खाटो, मीठो।

स्पर्शनेन्द्रियना ८ विषय—सुंवाळो, खरबचडो, हलको, भारे, उष्ण, शीत, लूखो (रूक्ष), चोपडयो (स्निग्ध)।

(आत्मा इन्द्रियो द्वारा जे पदार्थोने ग्रहण करे छे, तेने ते **इन्द्रियोना विषयो** कहे छे।)

तेरमे बोले—पच्चीस प्रकारनुं मिथ्यात्व—(प्रतिक्रमणनी बुकमां छे ते प्रमाणे)

चौदमे बोले—नव तत्त्वना जाणपणाना ११५ बोल—

जीवना १४ भेद—सूक्ष्म अेकेन्द्रिय, बादर अेकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय, संज्ञी पंचेन्द्रिय। ते सातना अपर्याप्ता अने पर्याप्ता मळी १४।

अजीवना १४ भेद—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अे त्रणेना स्कंध, स्कंध देश, स्कंध प्रदेश अेम ९ तथा १०मो भेद काळ, पुद्गलना स्कंध, देश, प्रदेश ने परमाणु अे ४ मळीने कुल १४ भेद।

पुण्यना ९ भेद—(१) अन्न पुन्ने, (२) पाण पुन्ने, (३) लयण पुन्ने, (४) शयण पुन्ने, (५) वत्थ पुन्ने, (६) मन पुन्ने, (७) वचन पुन्ने, (८) काय पुन्ने, (९) नमस्कार पुन्ने।

पापनां १८ भेद—ते अढार पाप स्थानक। (प्रतिक्रमणनी बुक प्रमाणे)

आश्रवना २० भेद—(१) मिथ्यात्व, (२) अव्रत, (३) प्रमाद, (४) कषाय, (५) अशुभयोग, (६) प्राणातिपात, (७) मृषावाद, (८) अदत्तादान, (९) मैथुन, (१०) परिग्रह, (११) श्रोत्रेन्द्रिय, (१२) चक्षुरिन्द्रिय, (१३) घ्राणेन्द्रिय, (१४) रसनेन्द्रिय, (१५) स्पर्शनेन्द्रिय, (१६) मन, (१७) वचन, (१८) काया ते ८ ने (११ थी १८) मोकळा मूकवा, (१९) भंड उपकरणनी अयत्ना करे, (२०) शुचि कुसग्ग करे। अर्थात् सोयना अग्रभाग जेटली पण जीवहिंसा करे।

संवरना २० भेद—(१) समकित, (२) प्रत्याख्यान, (३) अप्रमाद, (४) अकषाय, (५) शुभयोग, (६) जीवदया, (७) सत्य वचन, (८) अदत्तादान त्याग, (९) ब्रह्मचर्य, (१०) अपरिग्रह, ११ थी १८ पांच

इन्द्रिय अने त्रण योगनुं संवरवुं, (१९) भंड उपकरणनी यत्ना करे, (२०) शुचि कुसग्ग न करे। जीवनी दया पाळे।

निर्जराना १२ भेद—(१) अणसण, (२) उणोदरी, (३) वृत्तिसंक्षेप, (४) रसपरित्याग, (५) कायकलेश, (६) प्रतिसंलीनता, (७) प्रायश्चित्त, (८) विनय, (९) वैयावच्च, (१०) सज्झाय, (११) ध्यान, (१२) काउस्सग्ग।

बंधना ४ भेद—(१) प्रकृति बंध, (२) स्थिति बंध, (३) अनुभाग बंध, (४) प्रदेश बंध।

मोक्षना ४ भेद—(१) ज्ञान, (२) दर्शन, (३) चारित्र, (४) तप।

(**तत्त्व** अेटले जेनुं सदाकाळ होवापणुं छे ते।)

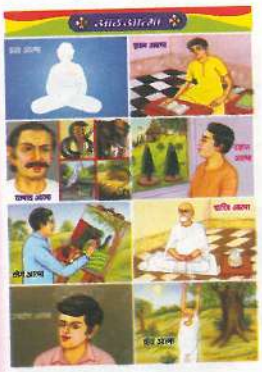

पंदरमे बोले—आत्मा ८—(१) द्रव्य आत्मा, (२) कषाय आत्मा, (३) योग आत्मा, (४) उपयोग आत्मा, (५) ज्ञान आत्मा, (६) दर्शन आत्मा, (७) चारित्र आत्मा, (८) वीर्य आत्मा।

(आत्मा जे गुणोमां प्रवर्ते ते गुणना नामथी आत्मा ओळखाय छे माटे ज्यारे कषाय भावमां होय त्यारे **कषाय आत्मा**। अेम आठे आत्मा माटे समजवुं.)

सोळमे बोले—दंडक २४—सात नरकनो १ दंडक; १० भवनपतिना १० दंडक ते (असुरकुमार, नागकुमार, सुवर्णकुमार, विद्युतकुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिशाकुमार, वायुकुमार, स्तनितकुमार) पांच स्थावरना पांच ते (पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय) ३ विकलेन्द्रियना ३ ते (बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय) १ तिर्यंच पंचेन्द्रियनो, १ मनुष्यनो, १ वाणव्यंतर देवनो, १ ज्योतिषी देवनो, १ वैमानिक देवनो दंडक।

(ज्यां जीव उत्पन्न थईने कर्मनो दंड भोगवे तेने **दंडक** कहे छे।)

सत्तरमे बोले—लेश्या छ—(१) कृष्णलेश्या, (२) नीललेश्या, (३) कापोतलेश्या, (४) तेजोलेश्या (५) पद्मलेश्या, (६) शुक्ल लेश्या।

(कषाय अने योगनी प्रवृत्तिथी उद्भवता आत्माना शुभ-अशुभ परिणामने **लेश्या** कहे छे। छ लेश्यामां प्रथम त्रण अप्रशस्त (अशुभ) अने अंतिमनी त्रण प्रशस्त (शुभ) छे।)

बोल-१७— **द्रव्यलेश्या**—परिणामना (अध्यवसायना) कारणे आत्मा ते प्रकारनां पुद्गलोने ग्रहे छे, ते **द्रव्यलेश्या** छे ते रूपी छे। **भाव लेश्या**— आत्मानां परिणामो (अध्यवसाय) ते भावलेश्या। ते अरूपी छे।

अढारमे बोले—दृष्टि त्रण—(१) समकित दृष्टि, (२) मिथ्यात्व दृष्टि, (३) मिश्र दृष्टि।

(तत्त्व विचारणानी पद्धतिने '**दृष्टि**' कहे छे।)

ओगणीसमे बोले—ध्यान चार—(१) आर्त्तध्यान, (२) रौद्रध्यान, (३) धर्मध्यान, (४) शुक्लध्यान।

(कोईपण अेक ज विषय उपर मननी अेकाग्रता करवी तेनुं नाम **ध्यान** छे।)

वीसमे बोले—छ द्रव्यना त्रीस बोल—

धर्मास्तिकायना पांच—धर्मास्तिकाय द्रव्यथी—अेक, क्षेत्रथी-लोक प्रमाणे, काळथी-अनादिअनंत, भावथी अरूपी, गुणथी चलणसहाय।

अधर्मास्तिकायना पांच—अधर्मास्तिकाय द्रव्यथी-अेक, क्षेत्रथी-लोक प्रमाणे, काळथी-अनादिअनंत, भावथी-अरूपी, गुणथी-स्थिर सहाय।

आकाशास्तिकायनां पांच—आकाशास्तिकाय द्रव्यथी-अेक, क्षेत्रथी-लोकालोक प्रमाणे, काळथी-अनादि अनंत, भावथी - अरूपी, गुणथी-अवगाहनादान (जग्या आपवी।)

कालना पांच—काल द्रव्यथी-अनंत, क्षेत्रथी अढीद्वीप प्रमाणे, काळथी-अनादिअनंत, भावथी-अरूपी, गुणथी-वर्तनानो गुण (नवाने जूनुं करे)।

पुद्गलना पांच—पुद्गल द्रव्यथी - अनंत, क्षेत्रथी - लोक प्रमाणे, काळथी-अनादि अनंत, भावथी- रूपी, गुणथी - गळे ने मळे। (सडन, पडन, विध्वंसन)

जीवना पांच—जीव द्रव्यथी - अनंत, क्षेत्रथी - आखा लोक प्रमाणे, काळथी -अनादि अनंत, भावथी - अरूपी, गुणथी - चैतन्यगुण।

---

(१) **धर्मास्तिकाय**—जीव अने पुद्गल जेना वडे गति करी शके ते धर्मास्तिकाय। दा. त. जेम माछली पोतानी मेळे चाली शके छे, पण पाणी तेनी गतिमां सहायक थाय छे।

(२) **अधर्मास्तिकाय**—जीव अने पुद्गल जेना वडे स्थिर थई शके ते अधर्मास्तिकाय। दा. त. जेम थाकेला मुसाफरने छांयो स्थिर थवामां उपकारक नीवडे छे।

(३) **आकाशास्तिकाय**—जे बधां द्रव्योने खाली जग्या, आकाश आपे ते आकाशास्तिकाय। दा. त. जेम नक्कर दीवालमां खीली नांखतां अंदर प्रवेशी जाय छे।

(४) **काळ**—जेनाथी नवा-जूनानी जाण थाय छे। सूर्य अने चंद्रनी गतिथी काळ (दिवस, रात्रि वगेरे) मापवामां आवे छे।

(५) **पुद्गलास्तिकाय**—जेनो स्वभाव सडन, पडन, विध्वंसन (नाश) छे, तेवा जड पदार्थो।

(६) **जीव**—जेनामां चेतना लक्षण छे ते जीव।

(जे सदाकाळ रहे छे, जेमां अनंत गुण अने अनंत पर्यायो रहेली होय छे, तेने **द्रव्य** कहे छे। प्रदेशोनां समूहने **अस्तिकाय** कहे छे। काळने कोई प्रदेश नथी।)

अेकवीसमे बोले—राशि बे। जीव राशि, अजीव राशि।

(ते ते प्रकारना पदार्थना समूहने **राशि** कहे छे।)

बावीसमे बोले—श्रावकनां व्रत १२। तेना भांगा ४९।

त्रेवीसमे बोले—साधुना पांच महाव्रत। तेना भांगा २५२।

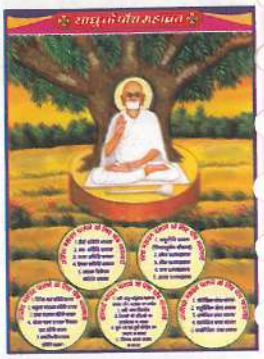

चोवीसमे बोले—प्रमाण चार। प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, उपमान। (जेनाथी अर्थ, पदार्थ जाणी शकाय तेने **प्रमाण** कहे छे।)

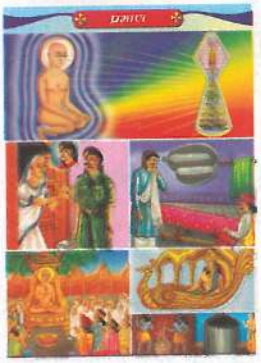

पच्चीसमे बोले—चारित्र पांच— (१) सामायिक चारित्र, (२) छेदोपस्थानीय चारित्र, (३) परिहार विशुद्ध चारित्र, (४) सूक्ष्म संपराय चारित्र, (५) यथाख्यात चारित्र।

(**चारित्र** अेटले जे आवतां कर्मोने रोके छे अथवा संयमरूप आचरण)

छव्वीसमे बोले—सात नय— (१) नैगमनय, (२) संग्रहनय, (३) व्यवहार नय, (४) ऋजुसूत्रनय, (५) शब्दनय, (६) समभिरूढनय, (७) अेवंभूतनय।

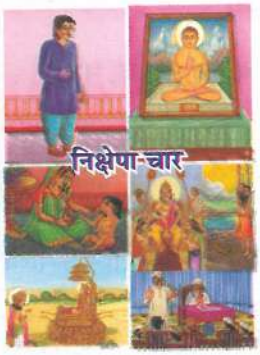

(प्रत्येक पदार्थना अनेक धर्म छे तेना अंश गुण के पर्यायना ज्ञानने **नय** कहे छे।)

सत्तावीसमे* बोले—निक्षेपा चार— (१) नाम, (२) स्थापना, (३) द्रव्य अने, (४) भाव।

(वस्तुने समजवा माटे वस्तु उपर आक्षेप (उपचार) करवो अथवा वस्तुने समजवा माटेनो दृष्टिकोण **निक्षेपा** छे।)

* **बोल-२७—नाम निक्षेप**—जीव के अजीवनुं कोई नाम राखवुं ते। **स्थापना**—जीव के अजीवनी आकृति करवी ते। **द्रव्य**—भूतकाळ के भविष्यकाळनी स्थितिने वर्तमानमां कहेवी ते। **भाव**—संपूर्ण गुणयुक्त वस्तुने वस्तु रूपे मानवी ते।

अट्ठावीसमे बोले—समकित पांच— (१) उपशम समकित, (२) क्षयोपशम समकित, (३) क्षायिक समकित, (४) सास्वादन समकित, (५) वेदक समकित।

(सुदेव, सुगुरु अने तेमना द्वारा प्ररूपित नव तत्त्व आदि सुधर्म प्रत्ये यथार्थ श्रद्धा करवी ते **समकित** छे।)

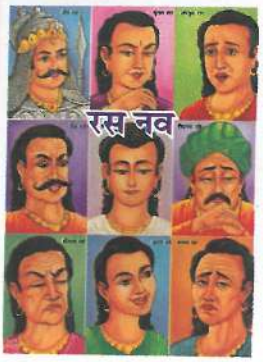

ओगणत्रीसमे बोले—रस नव— (१) शृंगाररस, (२) वीररस, (३) करुणरस, (४) हास्यरस, (५) रौद्ररस, (६) भयानक रस, (७) अद्‌भूत रस, (८) बिभत्स रस, (९) शांतरस।

(जेमां आपणे ओतप्रोत थई जईअे के अेकमेक थई जईअे तेने **रस** कहे छे।)

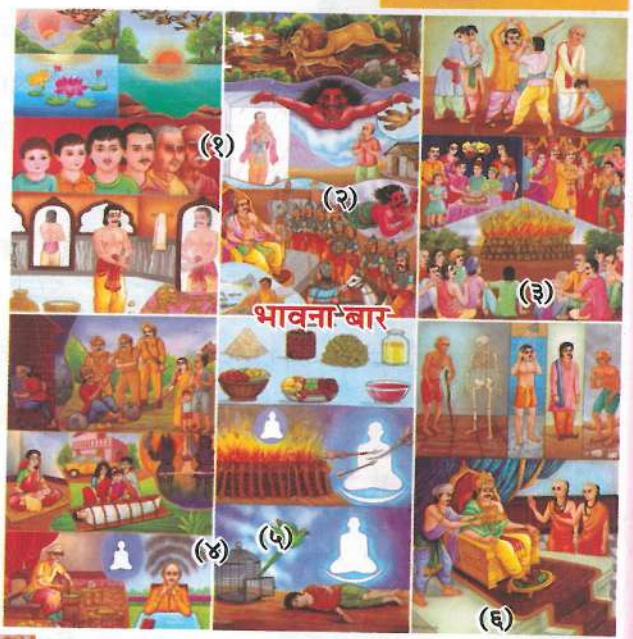

त्रीसमे बोले—भावना बार—

(१) अनित्य भावना,
(२) अशरण भावना,
(३) संसार भावना,
(४) अेकत्व भावना,
(५) अन्यत्व भावना,
(६) अशुचि भावना,

(७) आश्रव भावना,
(८) संवर भावना,
(९) निर्जरा भावना,
(१०) लोकस्वरूप भावना,
(११) बोधि भावना,
(१२) धर्म भावना।

(जेमां आत्माना प्रशस्त (सारा) भावो प्रगट थाय तेने **भावना** कहे छे।)

अेकत्रीसमे बोले*—अनुयोग चार— (१) द्रव्यानुयोग, (२) गणितानुयोग, (३) चरणकरणानुयोग, (४) धर्मकथानुयोग।

(वस्तुनां विशेष स्पष्टीकरणने **अनुयोग** कहे छे।)

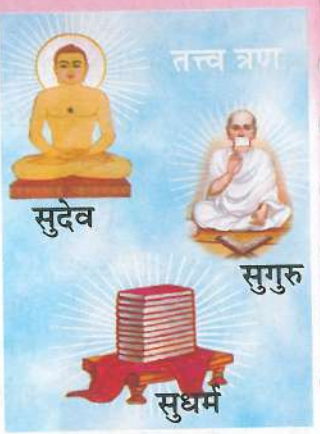

बत्रीसमे बोले—तत्त्व त्रण— (१) देव, (२) गुरु अने, (३) धर्म।

तेत्रीसमे बोले#—समवाय पांच— (१) काळ, (२) स्वभाव, (३) नियति, (४) कर्म (पूर्वकृत) (५) पुरुषार्थ (उद्यम)

(जेना समन्वयथी कार्य थाय ते **समवाय** छे।)

चोत्रीसमे बोले—पाखंडीना ३६३ भेद— (१) क्रियावादीना १८०, (२) अक्रियावादीना ८४, (३) विनयवादीना ३२, (४) अज्ञानवादीना ६७।

(जे मोक्षमार्गने वीतराग वाणीथी ओछुं, अधिक अने विपरीत माने तेने **पाखंडी** कहेवाय।)

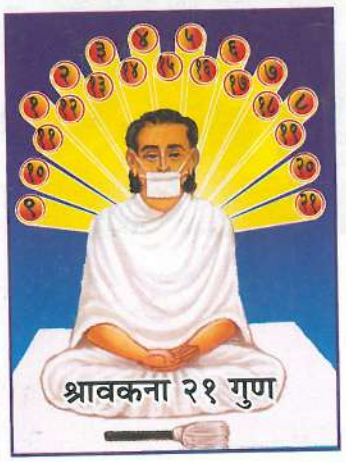

पांत्रीसमे बोले—श्रावकना २१ गुण— (१) अक्षुद्र, (२) यशवंत, (३) सौम्य प्रकृतिवाळो, (४) लोकप्रिय, (५) अक्रूर, (६) पापभीरु, (७) श्रद्धावंत, (८) चतुराई युक्त, (९) लज्जावान, (१०) दयावंत, (११) माध्यस्थ दृष्टि, (१२) गम्भीर, (१३) गुणानुरागी, (१४) धर्मोपदेश करनार, (१५) न्यायपक्षी, (१६) शुद्ध विचारक, (१७) मर्यादायुक्त व्यवहार करनार, (१८) विनयशील, (१९) कृतज्ञ, (२०) परोपकारी, (२१) सत्कार्यमां सावधान।

(श्रावक पर्यायने प्राप्त करवा जे जे विशिष्ट आचरण प्रगट करवा पडे अथवा जे सहजताथी प्रगट थाय, तेने **गुण** कहे छे।)

---

* **बोल-३१—(१) द्रव्यानुयोग**—जीव, अजीव, चैतन्य, कर्म आदि द्रव्यना स्वरूपनुं जे आगममां वर्णन होय ते। **(२) गणितानुयोग**—जेमां क्षेत्र, पहाड, नदी, देवलोक आदिना गणितना मापनुं वर्णन होय ते, **(३) चरणकरणानुयोग**—जेमां साधु, श्रावकना आचार, क्रियानुं वर्णन होय ते, **(४) धर्मकथानुयोग**—जेमां धर्म संबंधी कथा होय ते।

\# **बोल-३३—क्रियावादी**—ते क्रियाने माने, ज्ञानने माने नहि। **अक्रियावादी**—क्रियाने न माने। **विनयवादी**—बधानो विनय करवानुं माने। **अज्ञानवादी**—अज्ञानमां ज सुखने माने।

पाठ : 2 फटाकडां : समय, शक्ति अने संपत्तिनो व्यय

तहेवारो बे प्रकारना छे। लौकिक अने लोकोत्तर।

आत्माने धर्म करवामां जागृत करे तथा आत्मानुं पोषण करवामां जोडे ते **लोकोत्तर** तहेवार छे।

आत्माने पांच इन्द्रियना विषयमां अने १८ पापना कार्यमां जोडे ते **लौकिक** तहेवार छे।

दिवाळी, लग्न, क्रिकेट जेवां प्रसंगोअे फटाकडा फोडी आनंद मेळववाना प्रयत्नमां जीवो समय, शक्ति अने संपत्तिनो व्यय करे छे, **पण तेवुं करतां पहेलां तेनां नुकशानोने जाणी लो....!**

(१) **फटाकडांमां** गंधक (पृथ्वीकाय) वपराय छे। तेने कागळमां भरवामां आवे छे। आ कागळ वनस्पतिने भींजवीने बनाववामां आवे छे। फटाकडां बनावतां के फोडतां तेनी दुर्गंध, प्रकाश अने अवाजथी **अग्नि, वायु अने नाना मच्छर आदि जीवोनो नाश** थाय छे।

(२) सळगतां **फटाकडां** माटी पर पडतां **पृथ्वीकायनी,** पाणीनां टांका, पीप के गटर पर पडवाथी **अप्कायनी,** बळवाथी **अग्निकायनी,** हवाने अग्नि लागवाथी **वाउकायनी,** झाड के घास पर पडवाथी **वनस्पतिकायना जीवोनी हिंसा** थाय छे।

(३) अचानक फटाकडांनो अवाज थतां कबूतर, चकलीनां **इंडां फूटे,** पक्षीओ अंधारांमां अथडाय, तेथी तेमना इंडा फूटी जाय तेथी ते दु:खी थाय। इलेक्ट्रिक वायर पर बेसतां, शोक लागतां **पक्षी गंभीर रीते मरे।**

(४) फटाकडांना झेरी धूमाडाथी **फेफसां बगडे, प्रदूषण वधे।** कानमां **बहेराश आवे,** गभरामणथी **हार्टअेटेक** आवे, गळा वगेरेना रोगो थाय।

(५) सळगतो फटाकडो जो रू नी गांसडी, लाकडानी वखार, झूंपडा पर के पक्षीना माळामां पडे तो **आग लागे,** हजारो के लाखो **माणस कमोते मरे** अने घर वगरनां थई जाय। लाखो **रूपियानुं नुकशान** थाय। पशु, पक्षी के मनुष्य दाझी पण जाय छे।

(६) अक्षर बळवाथी **ज्ञानावरणीय** कर्म, जीवोनां अंगोपांग नाशथी **दर्शनावरणीय** कर्म, जीवोने दु:ख अने पीडा थवाथी **अशातावेदनीय** कर्म, आनंद माणवाथी **मोहनीय** कर्म, जीवोनां नाशथी नरक अने तिर्यंचनुं **आयुष्य** कर्म, शरीर नाशथी **अशुभ नाम** कर्म, संपत्तिनुं अभिमान करवाथी **नीच गोत्र** कर्म, सुखशांतिमां खलेल पहोंचाडवाथी **अंतराय कर्मनो** बंध थाय छे।

(७) **दया** अने **परोपकारना संस्कार नाश** पामे। **पुण्यनो नाश** थाय अने **पापनो बंध** थाय।

हुं जैन छुं माटे प्रतिज्ञा करुं छुं के फटाकडां फोडवानी आवी पापकारी अने हिंसक प्रवृत्ति करीश नहि, करावीश नहि अने तेनी अनुमोदना करीश नहि।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) फटाकडां फोडवाथी ८ कर्म केवी रीते बंधाय? (२) फटाकडांथी छकायनी हिंसा केवी रीते थाय? (३) फटाकडांथी कया रोगो थाय? (४) फटाकडांथी कई कई नुकशानी थाय? (५) फटाकडांथी कबूतरने शुं नुकशान थाय?

पाठ : 3 टी. वी. अेक दूषण

टी.वी. वर्तमान युगमां अनर्थोनी परंपरा ऊभी करनारां अनेक साधनोमांथी अेक साधन छे। आ रह्यां टी. वी. जोवाथी थतां नुकसानो... !

(१) **शारीरिक नुकशान**—आंखने चश्मा आववाथी आंखनुं केन्सर सुधीना अनेक रोगो थाय छे। शरीर पर तेनां किरणोनी असर थवाथी पण केन्सर थाय छे।

(२) टी.वी. जोवाथी **समयनी बरबादी** थाय छे। जैनशाळा तथा निशाळना अभ्यास पर ध्यान देवातुं नथी, तेथी ज्ञानमां बाधा पडे छे। माता-पिता, वडीलोनो विनय करवाना संस्कार आवता नथी। साचा धर्मना संस्कारना अभावे जीव दुर्गतिमां जाय छे।

(३) सिनेमाना हीरो-हीरोईननी नकल करवाथी **पैसानो तेम ज सभ्यतानो** नाश थाय छे। विचारो बगडे छे। दिवस-रात खराब विचार आवे छे, तेथी नजीवा कारणमां पण झघडा, कंकास अने दुश्मनावट ऊभी थाय छे।

(४) टी.वी., सिनेमाना कलाकारो माटे मांस, **माछली, इंडा, वगेरे अभक्ष्य वस्तुओनो उपयोग करवामां आवे छे। आपणे ते वस्तुओ खाता नथी, छतां पण तेनी हिंसानी अनुमोदनानुं भयंकर पाप** आपणने लागे छे।

(५) टी.वी.ना कार्यक्रमोनुं आयोजन करवा माटे स्टूडियो बांधवाथी **पृथ्वीकायना जीवोनी हिंसा** थाय छे। नदी, सरोवर, स्विमिंग पुल, समुद्र, पर्वत, बगीचा आदि कुदरती सौंदर्यनां दृश्यो बतावबा माटे **पाणी तथा वनस्पतिना जीवोनी हिंसा** थाय छे। टी.वी. जोवा माटे जे वीजळीनी जरूर पडे छे, ते पाणीना धोधमांथी उत्पन्न कराय छे। ते धोधमां माछलां, पोरां, मगरमच्छ वगेरे **त्रसजीवो** होवाथी तेमनी हिंसा थाय छे। आ बधी भयंकर हिंसाना पापना आपणे जाण्ये-अजाण्ये भागीदार बनीअे छीअे।

(६) टी.वी.मां आवतां मारामारी, खून, फांसी वगेरे दृश्यो जोतां वखते जोनारां सहु खुश थईने ताळी पाडे, सीटीओ वगाडे, मनमां आनंद पामे त्यारे **सामुदायिक कर्म बंधाय छे। जेनां फळ रूपे रेलवे-प्लेन-बस अकस्मात, धरतीकंप, वावाझोडुं वगेरे आपत्तिओमां ते जीवो अेकसाथे मृत्यु पामे छे।**

समजूती : हुं आत्मा छुं, मारामां अनंतु सुख रहेलुं छे। जगतनी कोईपण वस्तुमां मने सुखी बनाववानो स्वभाव नथी। पांच इन्द्रियना २३ विषयमां सुख होतुं नथी, छे नहि अने होई शके नहि।

हृदयमां आ श्रद्धा मजबूत करी चालो, आपणे आजथी टी.वी. जोवानो संपूर्ण त्यागनो नियम करी, आपणो आत्मा, घर अने समाजने दूषणथी बचावीअे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) टी.वी.नां शारीरिक नुकशान कया? (२) टी.वी.थी हिंसानी अनुमोदनानुं पाप केवी रीते लागे? (३) टी.वी. थी छकायनी हिंसा कई रीते थाय? समजावो। (४) सामुदायिक कर्मनुं फळ शुं? (५) टी.वी.नी नुकशानीओ टूंकमां लखो। कोईपण त्रण।

पाठ : 3 जैनधर्म अे ज श्रेष्ठ धर्म

(१) वस्तुना स्वभावने **धर्म** कहे छे। जगतमां रहेला अनेकविध धर्ममां जैन धर्मनुं अनेरुं स्थान छे।

(२) जैनधर्म **केवळज्ञानीओअे** बतावेल छे। तेओ राग, द्वेष रहित अने त्रणे काळनां सर्व भावोनां जाणनार होय छे।

(३) **पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायुमां जीव छे,** तेवुं अेक मात्र जैनधर्म माने छे, अन्य नहि।

(४) नव तत्त्व, सुदेव, सुगुरु, सुधर्मनुं सत्य स्वरूप जैन धर्ममां बताव्युं छे।

(५) अन्य धर्म कहे छे **'जीवो अने जीववा दो।' ज्यारे जैन धर्म कहे छे—'जीवो अने जीववा दो तमे कष्ट सहीने पण बीजाने जीववा दो।'** Live and let live, Co-operate to live others.

(६) अन्य धर्मो फक्त नरक अने स्वर्गने माने छे तथा स्वर्ग अने मोक्षने अेक ज माने छे। ज्यारे जैनधर्म **स्वर्ग अने मोक्षने अलग माने छे** तथा **दरेक जीव परमात्मा थई शके छे** तेवुं समजावी मोक्षमां जवानो मार्ग बतावे छे।

(७) जे धर्म आत्माने कर्म रहित बनावी मोक्ष अपावे ते ज श्रेष्ठ धर्म छे।

तेथी जैनधर्म अे ज श्रेष्ठ धर्म छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) जैनधर्म कोणे बतावेल छे? (२) धर्म अेटले शुं? (३) जैनधर्ममां शेमां शेमां जीव छे तेम बताव्युं छे? (४) श्रेष्ठ धर्म कयो? (५) मोक्षे जवानो मार्ग कयो धर्म बतावे छे?

पाठ : 5 द्वेषनुं स्वरूप–मान अने क्रोध

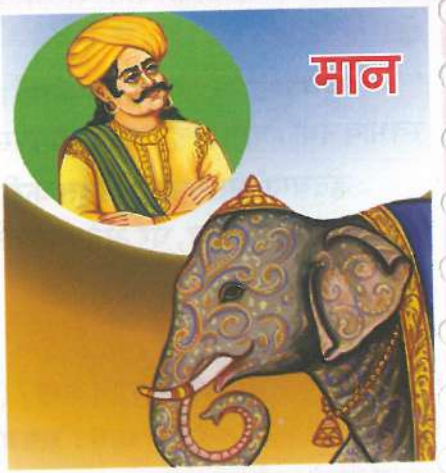

मान अेटले अभिमान :

अभिमान कोईनुं क्यारेय कायम टकतुं नथी।

अभिमानी पोतानी प्रशंसाथी फुलणशी बनी जाय छे।

अभिमान करनार पोताना मित्रोनो प्रेम गुमावे छे।

- मनगमती चीज–वस्तुओ मळी जाय त्यारे, आवी वस्तुओ मारी पासे ज छे, बीजानी पासे नथी, तेवो अहंकार–अभिमान क्यारेक जागे छे।
- मारा मित्रो करतां तमारी पासे कांईक विशेष छे, तेवुं बतावता तमे अभिमानी बनी जाव छो।
- कोईने सुंदरतानुं अभिमान आवी जाय छे।
- कोईने परीक्षामां वधारे मार्कस मळी जाय त्यारे अभिमान आवी जाय छे।
- कोईने पैसा या मनगमती चीज–वस्तु मळी जाय त्यारे अभिमान आवी जाय छे।
- आवा अभिमानने कारणे तमारा साचा मित्रो तमाराथी दूर भागता रहे छे।
- केटलाक कहेवाता मित्रो तमने मस्को मारीने, खुशामत करीने तमारा अभिमानने वधारे फुलावे छे।
- आवा लोको ज तमारी पाछळ तमारी निंदा करतां होय छे, तेथी अभिमानीने नुकशान पहोंचे छे।
- खुशामत हंमेशां स्वार्थ भरेली होय छे अने अप्रामाणिक होय छे। प्रशंसा हंमेशां प्रामाणिक होय छे।
- नम्रता राखवाथी अभिमान दूर थाय छे ते माटे–

  १) तमाराथी कोई सुंदर होय तो तेनी सुंदरतानी प्रशंसा करो।

  २) तमाराथी कोई वधारे होशियार होय तो तेनी आवडतनी प्रशंसा करो।

  ३) प्रशंसा करवाथी तमने साचा मित्रो मळे छे।

  सामी व्यक्तिमांथी साचा गुणो शोधी काढीने तेना वखाण करवा, तेने **प्रशंसा** कहे छे। साचा गुणोनी प्रशंसा करवाथी आपणामां ते गुणो आवे छे।

- प्रशंसाने धर्मनी भाषामां **'गुणानुराग'** कहे छे।
- बाळको नीचेनुं सूत्र याद राखीने हंमेशां तेनुं रटण करजो।
- **'नम्रता'** राखीने हुं **'मान'** नो नाश करीश।

क्रोध अेटले गुस्सो :

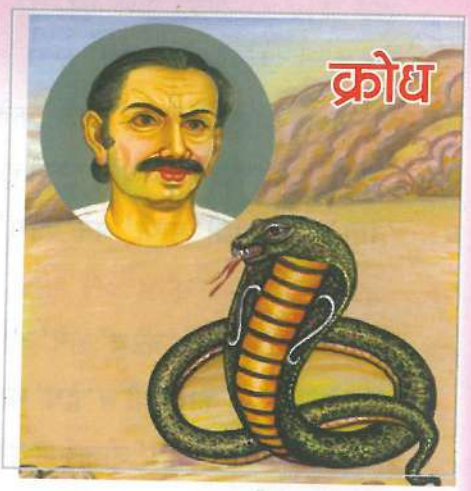

क्रोधी—गुस्साने कारणे पोतानी तंदुरस्ती गुमावे छे।

क्रोधी—गुस्साने कारणे वेर-झेर ऊभा करे छे।

क्रोधी—गुस्साना आवेशमां क्यारेक हत्या पण करी बेसे छे।

- छेतरपिंडी करतां पकडाई जईअे त्यारे आबरू जाय छे अने आपणने गुस्सो आवे छे। आपणी साथे कोई छेतरपिंडी करे त्यारे पण गुस्सो आवे छे।
- आपणुं धार्युं न थाय, आपणुं जोईतुं न मळे त्यारे गुस्सो आवे छे।
- अभिमान करीने कोईनी ऊपर 'रोफ' पाडवा जईअे अने कोई आपणने गणकारे नहि त्यारे गुस्सो आवे छे। कोई अभिमानथी आपणी ऊपर 'रोफ' करे त्यारे गुस्सो आवे छे।
- 'ईर्षा-अदेखाई' थी पण क्यारेक गुस्सो आवे छे। कोईने आपणा करतां परीक्षामां वधारे मार्कस मळे, रमतगमतमां आपणाथी शक्तिशाळी होय तेनाथी हारी जईअे, कोई आपणा करतां वधारे होशियार होय अने तेने केप्टन के मोनिटर बनावाय, आवां कारणोथी आपणने ईर्षा-अदेखाई आवे त्यारे गुस्सो आवी जाय छे।
- **'गुणानुरागी'** थवाथी **'ईर्षा-अदेखाई'** ने जीती शकाय छे।
- गुस्साना आवेशमां लोको गाळो बोले छे, मारामारी करे छे अने क्यारेक हिंसा करी बेसे छे।
- जे सामा माणसनी लागणी दुभवे, दु:खी करे, तेने पण भगवाने हिंसा कही छे।
- गुस्सो करनार लोको साथे संबंध बगाडे छे, अने वेर-झेर ऊभा करी लोकोने दुश्मन बनावे छे।
- गुस्सानो आवेश ऊतरी जाय त्यारे पस्तावो थाय छे, पण त्यारे तो गुस्सानुं पाप थई गयुं होय छे।
- पापनो समय चालतो होय त्यारे कोई निमित्त बनी आपणने छेतरी जाय। कोई निमित्त बनी आपणुं अपमान करे, कोई निमित्त बनी आपणने पीडा आपी दु:खी करे।
- आवा प्रसंगोअे आपणे निमित्तोने दोषीत मानी तेमनी उपर गुस्सो करीअे छीअे।
- सत्य हकीकत अे छे के आपणे ज करेलां पाप आपणे भोगववां पडे छे। आपणने दु:खी करनार निमित्तो तो मात्र कारणरूप छे।
- निमित्तोने क्षमा आपवी जोईअे।
- गुस्साना आवेशथी गुस्सो करनारने ज नुकसान थाय छे। (१) गुस्साथी आंखो अने मोढुं लाल थई जाय छे। (२) शरीर धूजवा मांडे छे। (३) क्यारेक ब्लडप्रेशर वधी जाय छे अथवा 'हार्ट-अेटेक' आवी

शके छे। (४) लोको साथे 'वेर-झेर' ऊभा थाय छे। (५) मित्रो दूर भागे छे। (६) गुस्सो करनारने कोई प्रेम करतुं नथी।

- 'गुस्सा' ने धर्मनी भाषामां '**क्रोध**' कहे छे।
- 'राग' ने जीतवो सौथी वधारे जरूरी छे।
- 'राग'ना कारणथी 'माया' अने 'लोभ' थाय छे।
- 'द्वेष'ना कारणथी 'क्रोध' अने 'मान' आवे छे।
- 'लोभ' अने मायाथी 'क्रोध' अने 'अभिमान' आवे छे।
- अेटले 'राग' ना कारणथी ज 'द्वेष' थाय छे।
- 'राग'ने जीतवाथी 'द्वेष' जीताई जाय छे।
- बालको नीचेनुं सूत्र याद राखीने हंमेशां तेनुं रटण करजो।
- '**क्षमा**' राखीने हुं '**क्रोध**' नो नाश करीश।

आ चार कषायोने जीते तेने परमात्मा कहे छे।

- अरिहंत अने सिद्ध आपणां परमात्मा हंमेशां 'समता-भाव' मां रहे छे। तेओअे रागद्वेष अने कषायोने संपूर्ण रीते जीती लीधा छे, तेथी तेमना मुख पर शांति, आनंद अने प्रसन्नता जोवा मळे छे।
- तेओ अहिंसक होवाथी तेमनी आंखोमां जगतना सर्व जीवो माटे दया-अनुकंपा अने करूणा जोवां मळे छे।
- रागद्वेषने संपूर्णपणे तेओअे जीती लीधा होवाथी आखा जगतनुं तेमने ज्ञान छे, तेने '**केवळज्ञान**' कहे छे।
- '**केवळदर्शन**'**थी** तेओ आखा जगतने जोई शके छे। जोवा माटे आंखनी जरूर पडती नथी।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) द्वेषना केटला भेद? कया? (२) अभिमान क्यारे क्यारे आवे छे? (३) अभिमानथी शुं नुकशान थाय? (४) अभिमान दूर करवा शुं शुं करवुं? (५) प्रशंसानुं बीजुं नाम शुं? (६) क्रोध क्यारे क्यारे आवे छे? (७) क्रोधथी शुं नुकशान थाय? (८) क्रोध दूर करवा शुं करवुं? (९) केवळज्ञान अेटले शुं? (१०) केवळदर्शन अेटले शुं? (११) अरिहंते शुं जीत्युं छे?

महाराजा मेघरथ

जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेहक्षेत्रमां **पुष्पकलावती** नामनी विजयमां **सीता** नदीना किनारे **पुंडरिकिणी** नामनी नगरी हती। **धनरथ** नामे महाबली राजा त्यां राज्य करतो हतो। तेनी **प्रियमती** अने **मनोरमा** आ बे महाराणीओ हती। ते राणीओना अेक अेक दीकरा हता। तेमनुं नाम '**मेघरथ**' अने '**दृढरथ**' हता। बंने भाईओने अेकबीजा पर बहु प्रेम हतो।

मेघरथ युवान थतां तेमना लग्न **सुमंदिरपुरना** राजा **निहतशत्रुनी** दीकरीओ '**प्रियमित्रा**' अने '**मनोरमा**' साथे थया। समय जतां राजा धनरथे युवराज मेघरथने राजा बनावी तथा दृढरथने युवराजनी पदवी आपीने पोते जैन दीक्षा लीधी। महाराजा मेघरथ नीति अने न्यायपूर्वक राज्यसंचालन करता हता। अनेक राजाओ तेमनी आज्ञामां रहेता हता।

अेक दिवस महापराक्रमी अने दयासागर महाराजा मेघरथ पौषधशाळामां पौषध अंगीकार करीने बेठा हता अने जिनप्ररूपित धर्मनुं व्याख्यान आपी रह्या हता। ते समये अेक भयभीत कबूतर आवीने तेमना खोळामां बेसी गयुं। ते खूब ज गभरायेलुं हतुं अने धूजी रह्युं हतुं। तेनुं हृदय जोरजोरथी धबकी रह्युं हतुं। ते मनुष्यनी बोलीमां बोल्युं, "मने अभयदान आपो, मने बचावो।" आ सांभळीने राजाअे कह्युं, "तुं निर्भय थई जा, अहीं तने कोई प्रकारनो भय नहि रहे।" तेथी कबूतरने मनमां खूब ज शांति थई।

थोडी क्षण पछी अेक बाज पक्षी आव्युं अने कबूतरने राजाना खोळामां बेठेलुं जोईने मानव भाषामां बोल्युं, "महाराज! आ कबूतरने छोडी दो। आ मारो खोराक छे। हुं अेने ज शोधतो शोधतो अहीं आव्यो छुं।" महाराजा मेघरथे बाजने समजावतां कह्युं। "अरे बाज ! हवे आ कबूतर तने मळी शकशे नहि, अे मारा शरणमां छे। क्षत्रिय पुत्र शरणे आवेलानी रक्षा करे छे। तारे पण आवुं हिंसानुं काम न कराय। तुं मांसभक्षण करे छे, परंतु अे तने लाखो वर्षोनुं नरकनुं दु:ख आपशे। जो तारे भूख मटाडवी होय तो तने बीजुं सारुं सारुं भोजन मळी शकशे।"

"महाराजा! आप विचारो। जे रीते आ कबूतर मृत्युना भयथी बचवा आपनी पासे आव्युं छे, तेम हुं पण भूखथी पीडाईने आवुं छुं। मारुं जीवन केवी रीते बचावुं? आप कबूतरनी रक्षा करो छो तो मारी पण रक्षा करो। मने भूखथी तरफडीने मरतो बचावो। आ कबूतर मारुं भक्ष्य छे। हुं ताजुं मांस ज खाऊँ छुं। अेनाथी ज मने संतोष थाय छे। माटे आप कबूतर मने सोंपी दो।" बाजे पोतानी रजूआत करी।

"शुं तुं मांस ज खाय छे? बीजुं कांई खाई शकतो नथी? जो आम ज होय ते ले हुं तारी इच्छा पूरी करवा तैयार छुं। आ कबूतरना मांस जेटलुं मारा शरीरनुं ताजुं मांस हुं तने आपुं छुं, ते खाई तारी इच्छा पूरी कर।" महाराजा मेघरथजीअे धीरज अने शांतिपूर्वक कह्युं।

बाजे राजानी वात स्वीकारी लीधी। राजाअे छरी अने त्राजवुं मंगाव्युं। त्राजवाना अेक पल्लामां कबूतरने बेसाडयुं अने महाराज पोताना शरीरनुं मांस कापीने बीजा पल्लामां मूकवा लाग्या। आ जोईने राज्यमां अने परिवारमां हाहाकार फेलाई गयो।

राणीओ अने राजकुमारो वगेरे आक्रंद करवा लाग्यां। मंत्रीओ, सामंतो अने मित्रो राजाने आवुं न करवा विनववा लाग्या। महाराजा मेघरथ पोताना हाथेथी पोताना शरीरनुं मांस कापीने त्राजवामां मूकवा लाग्या। परन्तु कबूतरनुं पल्लुं ऊंचुं थयुं ज नहि। तेओ छराथी पोतानुं मांस कापीने मूकतां जतां अने लोको रडतां जतां हतां। परन्तु कबूतरनुं पल्लुं भारे ज रह्युं। शरीरना केटलाय भागोनुं मांस कापी कापीने मूकी दीधुं

आ दृश्य जोईने अेक मंत्री बोल्या "महाराजा! आ दगो छे। कोई मायावी शत्रुदेव षडयंत्र रचीने आपनुं जीवन खतम करवा इच्छे छे। जो आम न होत तो आटलुं बधुं मांस मूकी दीधा पछी पण कबूतरनुं पल्लुं भारे केवी रीते रहे?"

मंत्रीअे आ प्रमाणे कह्युं त्यां ज अेक दिव्य मुगट-कुंडल वगेरे आभूषणधारी देव प्रगट थयो अने महाराजानो जयजयकार करतो बोल्यो, "जय थाओ, विजय थाओ। शरणागत रक्षक महामानव राजा मेघरथनो जय थाओ। आपनी गुणगाथा तो बीजा देवलोकमां ईशानेन्द्र द्वारा थई रही हती। हुं पण ते देवसभामां हतो। मने आपनी प्रशंसा सांभळीने विश्वास न आव्यो, माटे परीक्षा करवा अहीं आव्यो।

मार्गमां आ बे पक्षीओने लडतां जोईने हुं तेओमां प्रवेश करीने आपनी पासे आव्यो अने आपनी महान अनुकंपा, शरणागतनी सुरक्षा तथा दृढ आत्मबळनी परीक्षा करी। मारा आ कार्यथी आपने कष्ट थयुं, तेथी हुं आपनी क्षमा मागुं छुं। मने आप क्षमा आपो।" आम माफी मांगी मेघरथराजाने पहेलाना जेवा ज स्वस्थ बनावी ते देव पाछो फरी गयो।

समय जतां ग्रामानुग्राम विचरण करतां मेघरथना पिता तीर्थंकर धनरथजी राजा मेघरथना गाममां पधार्या। तेमनी वाणी सांभळीने वैराग्य थतां राजा मेघरथे पण दीक्षा लीधी। विशुद्ध संयम अने उग्र तप करतां करतां तेमणे अेक लाख पूर्व वर्ष सुधी दीक्षा पाळी अने तीर्थंकर नाम गोत्रकर्म उपार्जी सर्वार्थसिद्ध विमानमां देव तरीके उत्पन्न थया।

३३ सागरनुं आयुष्य भोगवी सर्वार्थसिद्ध विमानमांथी च्यवीने (नीकळीने) महाराजा विश्वसेननी प्रिय राणी अचिरादेवीनी कुक्षिमां उत्पन्न थया। तेओ गर्भमां आवतां ज राज्यमां मरकीनो रोग थयो हतो, ते शांत थई गयो। तेथी तेमनो जन्म थतां तेमनुं नाम 'शांतिनाथ' राखवामां आव्युं। मोटा थई तेओ जैनोना सोळमां तीर्थंकर श्री शांतिनाथ स्वामी बन्या।

धन्य हो राजा मेघरथनी अहिंसा भावनाने!

अपेक्षित प्रश्नो

(१) मेघरथनां लग्न कोनी साथे थयां? (२) महाराजा मेघरथना खोळामां कबूतर आव्युं पछी शुं बन्युं? (३) कबूतरने बचाववा राजाओ शुं कर्युं? (४) महाराजानी प्रशंसा कयां थई हती? (५) राजानी अहिंसाभावना टूंकमां वर्णवो। (६) मेघरथ मरीने क्यां गया? भविष्यमां ते आपणा शुं बन्या?

कथा : 2 रोहिणेय चोर

राजगृही नामनी अेक सुंदर अने वैभवशाळी नगरी हती। ते नगरीनी पासे **वैभारगिरि** पर्वत हतो। आ पर्वतनी गुफामां **रोहिणेय** चोर पोतानी चोरटोळी साथे रहेतो हतो। रोहिणेय चोरीनो धंधो पोताना पिता पासेथी शीख्यो हतो। साथे साथे बीजी अनेक विद्याओ शीखवाथी ते बुद्धिमान पण हतो।

रोहिणेय चोरे पोताना चोर पिताने तेमना मृत्यु वखते अेक वचन आप्युं हतुं के 'रोहिणेय पोते महावीर प्रभुनी वाणी कदी पण नहि सांभळे।'

पिताना मृत्यु बाद ते राजगृही नगरीमां जईने मोटी मोटी चोरी करतो अने लोकोने खूब रंजाडतो। दिवसे दिवसे तेनो त्रास वधवा लाग्यो। ते अेटलो बधो चालाक अने चपळ हतो के ते राजाना सिपाहीओने हाथे पकडातो न हतो।

प्रजाजनोअे श्रेणिक महाराजाने चोरीनी फरियाद करी अने चोरना त्रासमांथी सहुने शीघ्र छोडाववा विनंती करी। चोरने बुद्धिशाळी अने चबराक जाणीने राजाअे तेने पकडवानुं काम पोताना पुत्र अने राज्यना मंत्री **अभयकुमारने** आप्युं। मंत्रीअे नगरना दरवाजा पर सख्त पहेरो गोठवी दीधो अने कोई नवो माणस दाखल थाय के बहार नीकळे तो तेनुं खास ध्यान राखवा कही दीधुं। सिपाहीओ अने नगरनो कोटवाल छूपी रीते दरवाजा पर ध्यान राखता थई गया।

रोहिणेय चोरने पण अभयकुमारे गोठवेली व्यवस्थानी जाणकारी तेना माणसो पासेथी थई गई। तेणे अभयकुमारने पण छेतरवानो निश्चय कर्यो। ते माटे ते योग्य समयनी राह जोतो रह्यो।

अेक वखत, श्री महावीर प्रभु विहार करतां करतां राजगृही नगरीमां पधार्या अने नगरीनी बहारना उद्यानमां बिराज्या। प्रभु नगरीनी बहार पधार्या छे तेवुं जाणीने नगरजनो तेमनां दर्शन करवां अने उपदेश सांभळवां उद्यानमां भेगा थयां। महावीर प्रभुने वंदन करीने सौ नगरजनो तेमनी पवित्र, मीठी, आनंदकारी वाणी सांभळवा बेठा। देवताओअे रचेला समवसरणमां प्रभु देशना आपवा लाग्या।

ते ज दिवसे रोहिणेय चोर पण पर्वतनी गुफामांथी नीकळीने राजगृही तरफ जतो हतो। ते नगर बहारना उद्यान पासेथी नीकळ्यो। नगरमां प्रवेश करवानो ते टूंको मार्ग हतो। बीजा रस्ते थईने जाय तो समय वधारे लागी जाय तेम हतुं। तेथी ते आ ज मार्ग पर चालवा लाग्यो।

महावीर प्रभुनी दिव्य अने तेजस्वी वाणी चालु हती। पोताना पिताने आपेलुं वचन भंग न थाय ते माटेनो मार्ग रोहिणेये विचार्यो। ते पोताना पगरखां बगलमां दबावी, बंने कानमां आंगळीओ खोसीने उद्याननी पासे जईने झडपथी दोड्यो। पण, जेवो ते समवसरणनी पासेथी नीकळ्यो त्यारे ज तेना पगमां कांटो वाग्यो।

तेणे विचार्युं के 'जो हमणां कांटो काढवा प्रयत्न करीश तो कानमां खोसेली आंगळीओ काढवी पडशे अने प्रभुनां वचनो कानमां जशे, तो पिताने आपेलुं वचन तूटी जशे। अेटले कांटावाळा पगे ज तेणे दोडवानुं चालुं राख्युं। परंतु कांटो पगमां जोरथी वाग्यो हतो अने पगमां खूब पीडा थती हती, तेथी हवे तेनाथी सहेज पण दोडाय तेम न हतुं। पगमांथी कांटो काढवा नाछूटके तेने कानमांथी आंगली काढीवा नीचे नमवुं पड्युं।

ते वखते प्रभु देवताओना स्वरूपनुं वर्णन करता हता। तेमना मुखमांथी नीकळती अमृत समान वाणीनां वचनो तेना कान पर पड्यां। "(१) देवोनो श्वासोच्छ्वास सुगंधवाळो होय छे। (२) तेमना डोकनी माळाओ करमाती नथी। (३) तेमनी आंखो अपलक ज रहे छे। (४) तेओ जमीनथी चार आंगळ अध्धर ज रहे छे, अेटले के तेमना पग जमीनने स्पर्शता नथी।" आटला वाक्यो तेना कानमां पड्यां बाद रोहिणेय पगनो कांटो काढी नांखीने, कानमां आंगळां खोसीने झडपथी आगळ दोडी गयो। महावीर प्रभुनां वचनो जे तेना काने पडेला तेने भूली जवा तेणे घणो प्रयत्न कर्यो, पण ते भूली शक्यो नहि।

तेना खराब नसीबे ते दिवसे तेने नगरमां प्रवेश करती वखते कोटवाले पकडी लीधो अने बांधीने श्रेणिक राजा पासे लई आव्यो। अभयकुमारने पण बोलाववामां आव्या। अभयकुमारे कोटवालने पूछ्युं, "चोर पासेथी चोरेली वस्तु हाथ आवी छे? नक्कर साबिती विना तेने शिक्षा थई शके नहि।" कोटवाले कह्युं, "अमे तो तेने नगरमां दाखल थतां ज शकना आधारे पकडी लीधो छे, तेथी तेनी पासेथी कांई मळ्युं नथी।" राजा श्रेणिके चोरने पूछ्युं, "तारुं नाम शुं छे? तुं क्या गाममां रहे छे?" चोरे जवाब आप्यो, "मारुं नाम दूर्गचंड

छे, हुं शालिग्राममां रहुं छुं।" राजाअे आगळ पूछ्युं, "तुं शो धंधो करे छे?" चोरे कह्युं, "हुं जाते कणबी छुं। खास काम माटे अहीं आव्यो छुं। मने आवतां मोडुं थयुं अेटले कोटवाले मने पकड्यो।" राजाअे शालिग्राममां तपास करावी पण त्यां चोरना ज माणसो होवाथी जेवुं चोरे कहेलुं तेवुं ज वर्णन गामलोकोअे पण कह्युं।

अभयकुमार मंत्रीअे विचार्युं के 'आ चोर घणो ज होंशियार छे, अेटले बुद्धिथी काम लेवुं जोईअे। आथी तेमणे चोरने कह्युं, "भाई, तुं गभराईश नहि। थोडा दिवस तुं मारी साथे ज मारो महेमान बनीने रहेजे।" अेम कहीने चोरने तेणे पोतानी साथे राख्यो।

अभयकुमार मंत्री होवा छतां श्रावकनां व्रतोनुं चुस्तपणे पालन करता हता। तेओ रोज सामायिक पण करतां। पर्व तिथिअे, पौषध आदि विशेष धर्म आराधना करता। रोहिणेय पण तेमनी साथे रहीने तेमनुं अनुकरण करतो, तेथी ते चोर छे तेवो अणसार न मळ्यो।

छेवटे अभयकुमारे अेक युक्ति करी। महेलना अेक विशाल खंडमां तेमणे अनेक प्रकारना झुम्मर, चंदरवा अने धजाओ बंधावी। दरवाजे शोभायमान तोरणो लटकाव्यां। ओरडामां अगर, चंदन आदि सुगंधित द्रव्यो मुकाव्यां। शयनखंडमां सुदर रीते शणगारेली शय्या पथरावी। अत्यंत स्वरूपवान दासीओने सुंदर शणगार सजावी, तेमने हाथमां मृदंग अने वाजिंत्रो आपी ते ओरडामां ऊभी रखावी। आ बधुं जाणे साक्षात् देवलोकने धरती पर उतार्युं होय तेवुं लागतुं हतुं।

अभयकुमारे रोहिणेयने ते दिवसे विविध प्रकारनी स्वादिष्ट, रुचिकर अने सुगंधी वानगीओ जमाडी। पछी भोजनमां नशो करे तेवी मदिरा (दारू) पिवडावी दीधी। मदिरापानथी रोहिणेयने खूब नसो चड्यो अने ते घसघसाट निद्रामां पडी गयो। ते वखते तेने महेलना पेला शणगारेलां ओरडामां शय्या पर सुवडावी दीधो।

थोडा वखत पछी चोरने भान आव्युं अने आश्चर्यथी ते चारे बाजु जोवा लाग्यो। जीवनमां क्यारेय न जोयुं होय तेवुं दृश्य तेनी नजर सामे खडुं हतुं। ते वखते देवी जेवी लागती दासीओने सुंदर हावभाव करीने अने मधुर स्वरोमां तेने पूछ्युं, "हे स्वामीनाथ! तमे खूब भाग्यशाळी छो, तमारो जन्म देवलोकमां थयो छे। तमे अेवां ते कयां पुण्यनां काम कर्यां छे। के जेथी अमारा स्वामी थया अने देवलोकमां उत्पन्न थया छो?" आवुं सांभळीने चोर विचारमां पडी गयो के 'में अेवां कोई पुण्य कर्यां नथी के हुं देवलोकमां उत्पन्न थाउं!' ते ज समये तेने महावीर प्रभुअे देवताओ विशे करेलुं वर्णन याद आवी गयुं। देवोनो श्वासोच्छ्वास सुगंधवाळो होय छे। तेमना गळानी माळाओ करमाती नथी। तेमनी आंखो अपलक ज रहे छे। तेओ जमीनथी चार आंगुल अध्धर ज रहे छे अेटले के तेमना पग जमीनने स्पर्शता नथी।

तेणे देवी जेवी लागती सुंदरीओनुं बारीकाईथी निरीक्षण कर्युं तो ख्याल आव्यो के 'आ स्त्रीओ तो जमीन पर पग मूकीने चाले छे, तेमनी आंखो पटपटे

छे, तेमना गळानी माळाओनां अमुक फूलो मूरझायेलां छे।' आ जोतां तेने समजाई गयुं के 'आ चालाक अभयकुमारनी तेने फसाववा माटेनी चाल छे, तेथी ज तेमणे आ खोटुं नाटक ऊभुं कर्युं छे। हवे मारे पण नाटक सामे नाटक करवुं पडशे।'

ते देवीओने कहेवा लाग्यो, "देवीओ! में मनुष्यना भवमां दान, धर्म, पुण्य, नियम, व्रतोनुं पालन करीने अने सात मोटां व्यसनो रहित जीवन जीवीने पुष्कळ पुण्य कमाणी करी छे, तेथी ज तमारा स्वामी तरीके हुं उत्पन्न थयो छुं।" देवीओओ सामे प्रश्न कर्यो, "हे नाथ! तमारी पुण्यकरणी तो अमे सांभळी, पण तमे कांई पाप पण कर्यां हशे, ते पण अमने तमे संभळावो...." चोरे कह्युं, "में मनुष्य भवमां केवळ धर्म ज कर्यो छे, परन्तु पाप तो अेकपण कर्युं नथी।"

रोहिणेय चोर अने दासीओ वच्चेनी आ वातो अभयकुमार गुप्त रीते सांभळता हता। तेमणे जाण्युं के आ चोर खूब बुद्धिमान छे, तेना जेवा बुद्धिमान तो को'क ज होय। श्रेणिक राजाने बधी घटनानी जाण करी अभयकुमारे चोरने छोडी मूक्यो।

छूटीने घरे पाछा फरती वखते रोहिणेय चिंतने चड्यो—'आजे तो जीवन अने मोतनी वात बनी गई। महावीर प्रभुनी थोडीक ज वाणी मारा काने पडी तो आजे तेना सहारे अभयकुमार जेवां बुद्धिनिधान महामंत्रीना हाथमांथी आबाद बची गयो। अेटले ते वाणी मारा माटे महान उपकारक बनी गई। जो महावीर प्रभुनां आटलां वचनोथी हुं अेक भवमां बची जाऊं तो तेमनी अमृततुल्य वाणीने वधारे सांभळुं तो केटलो फायदो थाय? हुं हवे पापनो धंधो छोडीने तेमने शरणे जाउं अने दु:खोमांथी बचवानो मार्ग जाणी लउं।'

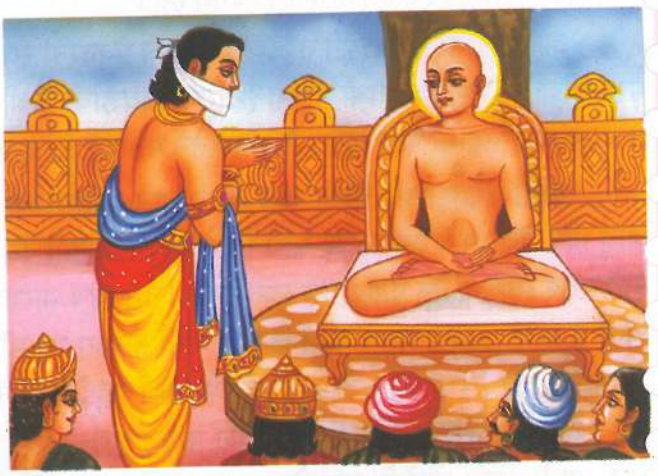

आवुं चिंतन करतो करतो ते चोर महावीर प्रभु पासे पहोंच्यो। प्रभुनां चरणोमां भावपूर्वक वंदन करीने ते बोल्यो, "हे प्रभु! आपनी अमृतवाणीनां थोडांक शब्दोअे मारी आ जिंदगी बचावी छे, तेथी हवे ते जिंदगी आपने समर्पित करवानी भावना राखुं छुं। कृपा करीने मने सुखी थवानो मार्ग बतावो।"

महावीर प्रभुअे तेने धर्मनो मार्ग बताव्यो। श्रावकधर्म अने साधुधर्मनुं पालन करवानुं समजाव्युं अ तेमां य श्रेष्ठ अेवा साधुधर्मना पालनथी आ भव अने भवोभवनां सर्व दु:ख दूर थई जाय छे ते बताव्युं। रोहिणेय चोरे भगवान पासे दीक्षा लेवानी भावना प्रगट करी अने कह्युं, "हे प्रभु! हुं श्रेणिक राजाने मळीने पाछो आवीने आपनी पासे दीक्षा लईश।"

रोहिणेय चोर राजा श्रेणिक पासे आव्यो अने पोताना जीवनमां आवेला परिवर्तननी राजाने जाण करी पोते नगरमांथी चोरेलुं धन ज्यां ज्यां राख्युं हतुं त्यांथी आपी दीधुं। राजा, अभयकुमार अने प्रजाजनो तेन

परिवर्तनथी खूब ज आनंदित थया। रोहिणेये पोताना कुटुंबीजनोने तथा पोताना साथीओने पण सद्‌बोध आप्यो। ते सहुनी रजा लई महावीर प्रभु पासे आवीने तेणे दीक्षा ग्रहण करी।

साधु जीवनमां ऊंचुं चारित्र पाळीने, जीवनना अंतिम समये संथारो करीने मृत्यु पामीने रोहिणेय देवलोकमां उत्पन्न थया।

महावीर प्रभुने मार्गे चालनार अने जीवनने अजवाळनार अे रोहिणेयने धन्य हो!

अपेक्षित प्रश्नो

(१) रोहिणेय चोरे महावीर प्रभुनी शुं देशना सांभळी? (२) रोहिणेयने फसावववा अभयकुमारे महेलना ओरडामां शुं कराव्युं? (३) रोहिणेय चोरे अभयकुमारना नाटकनी सामे केवुं नाटक कर्युं? (४) निर्दोष छूटी जवा पर रोहिणेये शुं विचारो कर्या? (५) दीक्षानो निर्णय लीधा बाद रोहिणेये शुं कर्युं? (६) अभयकुमारनी चालाकीनी जाण रोहिणेयने कई रीते थई? (७) पिताने आपेला वचनने पाळवा माटे रोहिणेये शुं कर्युं? (८) रोहिणेयने राजाअे तेनुं नाम अने गाम पूछ्युं तो तेणे शुं जवाब आप्यो? (९) आ वार्ता परथी तमने शुं बोधपाठ मळ्यो?

कथा : 3

शालिभद्र

राजगृह नगरनी पासे **शालिग्राममां 'धन्या'** नामनी स्त्री रहेती हती। तेनो **'संगम'** नामे अेक पुत्र हतो। ते बंने सिवाय तेमना परिवारमां कोई न हतुं। धन्या लोकोनां काम करती अने संगम गायोने चरावववानुं काम करतो हतो।

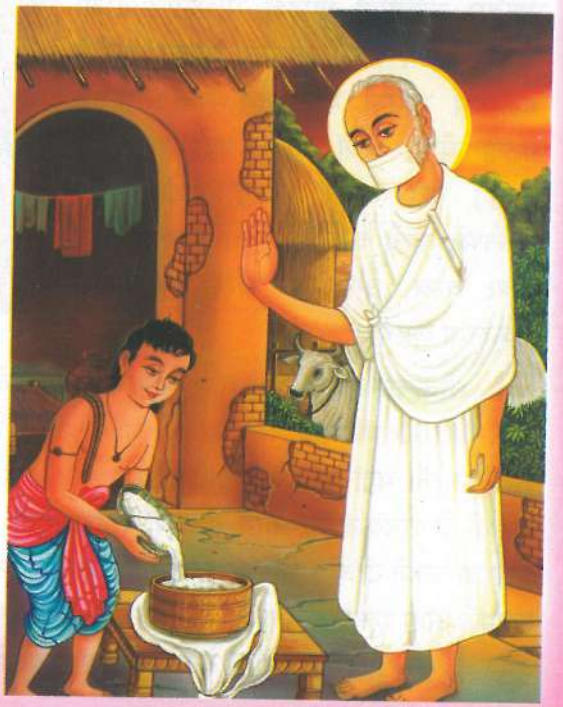

गाममां अेकवार मोटो पर्वनो दिवस होवाथी घणां लोकोना घरे खीर बनाववामां आवी हती। लोकोने खीर खातां जोईने संगमने पण खीर खावानुं मन थयुं। संगमे घरे आवीने माताने खीर बनाववा कह्युं। परंतु तेनी माता खूब गरीब होवाथी खीर बनावी शके तेम नहोती। संगमे खीर खावा माटे जीद करी, तेथी तेनी माता पोतानी गरीबीनो विचार करतां करतां जोरथी रडवा मांडी।

आजुबाजुना लोकोअे तेने रडवानुं कारण पूछतां माताअे कह्युं, "मारो दीकरो खीर खावा मांगे छे, पण हुं बहु दुर्भागी छुं, ज्यां सूको रोटलो खावा नथी मळतो त्यां खीर तो हुं क्यांथी बनावी शकुं?" पडोशमां रहेवावाळी स्त्रीओने तेना प्रत्ये करूणा उत्पन्न थई, तेथी तेमणे भेगा थईने धन्या माताने खीर बनाववानो सामान आप्यो। धन्याअे राजी थईने संगम माटे खीर बनावी अने अेक थाळीमां गरम खीर खावा आपी पोताना कामे लागी गई।

ते ज समये अेक महान तपस्वी जैन साधु मासक्षमणना (३० उपवास) पारणे धन्यानी झूंपडी जोई अने त्यां गोचरी लेवा पधार्या। संगम थाळीनी खीर ठंडी थवानी राह जोतो बेठो हतो। संगमे तपस्वी संतने जोया अने तेना हृदयमां शुभ भावो उत्पन्न थया, ते खूब आनंदित, हर्षित थयो। तेणे विचार्युं 'धन्य भाग्य मारा! मारा घरे तपस्वी जैन संत पधार्या। संत तो कल्पवृक्ष समान छे। मारा घरे आजे सोनानो सूरज ऊग्यो। सारुं थयुं के आ संत अत्यारे ज मारा घरे पधार्या। कारण के अत्यारे मारी पासे वहोरावरा माटे खीर पण छे।' आ प्रकारे विचार करीने संगमे शुद्ध हृदयना भावथी खीर संतने वहोरावी दीधी अने पोताने भाग्यशाळी मानवा लाग्यो।

तपस्वी संत पाछा गया पछी थोडीवारे तेनी माता पोतानुं काम पतावीने बहारथी आवी। तेणे जोयुं के संगम बधी खीर खाई गयो छे। माटे तपेलीमांथी बचेली बीजी थोडी खीर तेने खावा आपी। संगमे खूब ज आनंद साथे खीर खाधी, परंतु तेने खीरनुं अजीर्ण (पाचन न थवुं) थतां तेना शरीरमां उग्र रोग उत्पन्न थयो। संगमनां मनमां तो तपस्वी संतने खीर वहोरावरानो आनंद आनंद हतो। ते ज विचारोमां तेनुं आयु पूर्ण थई गयुं।

ते संगमनो जीव **राजगृह** नगरमां **गोभद्र सेठनी भद्रा** नामनी पत्नीनां गर्भमां उत्पन्न थयो। गर्भना प्रभावथी माताअे स्वप्नमां **पाकेली शालिनुं क्षेत्र** जोयुं, तेम ज माताने दान करवानी इच्छा पण उत्पन्न थई। माताअे शालिनुं स्वप्न जोयेलुं, तेथी पोताने उत्पन्न थयेल बाळकनुं नाम '**शालिभद्र**' राख्युं।

शालिभद्रने विद्या-अभ्यास करावीने युवान थतां योग्य समये बत्रीस सुंदर, सुशील कन्याओ साथे तेना लग्न कर्यां। सुंदर पत्नीओ प्राप्त थतां शालिभद्र रंगरागमां अने संसारना रंगमां रंगाई गया।

तेमना पिताश्री गोभद्र शेठे भगवान महावीर स्वामीनो उपदेश सांभळीने दीक्षा लीधी। तेओ तप, संयमनुं पालन करीने काळधर्म पामीने मोटा देव थया। गोभद्र शेठनो वेपार-धंधो माता भद्रा संभाळवा लागी। देव बनेल गोभद्र पोताना पुत्र शालिभद्र प्रत्ये वात्सल्यभावी होवाथी रोज दिव्य वस्त्र, अलंकार वगेरे देवलोकथी मोकलवा लाग्या।

अेकवार राजगृह नगरमां दूर देशमांथी अेक वेपारी राजा श्रेणिकने रत्नकंबल वेचवा आव्यो। रत्नकंबलो खूब मोंघा होवाथी राजाअे ते खरीदी नहि। आथी वेपारी निराश थईने नगरना अन्य श्रीमंत शेठ-श्रेष्ठिने त्या फरतो फरतो भद्रा माता पासे पहोंच्यो। भद्रा माताअे मोंमांग्यु धन आपीं ते १६ रत्नकंबलो खरीदी लीधी। भद्र माताअे ते रत्नकंबलो ओछी होवाथी शालिभद्रनी ३२ पत्नीओने अडधां टुकडा करीने पगलूछणिया तरीके वापरवा आपी दीधी। श्रेणिक राजाने आ वातनी तेना सेवको द्वारा खबर पडी। तेमने विचार थयो के 'अहो! हु राजा जे अेक रत्नकंबल न खरीदी शक्यो ते अेक वेपारीनी पत्नीअे बधी कंबलो खरीदी लीधी, तो तेओ केटल धनवान अने पुण्यवान हशे!' तेमणे पोताना अेक सेवकने शालिभद्रने राजदरबारमां बोलावरा मोकल्या त्यारे

भद्रा माता पोते राजदरबारमां आव्यां अने राजाने कह्युं के "शालिभद्र तो घरनी बहार क्यारेय नीकळता ज नथी, तो आप ज अमारे घेर पधारी दर्शन देवानी कृपा करो।"

राजा श्रेणिके माता भद्रानुं आमंत्रण स्वीकारी लीधुं अने स्वयं शालिभद्रने घेर मळवा गया। भद्रा माता शालिभद्रने बोलावववा तेमना खंडमां गया अने कह्युं, "बेटा! श्रेणिक महाराजा पधार्या छे, तमे नीचे आवो।" त्यारे शालिभद्रअे माताने कह्युं, "वेपार तो आप जुओ छो माटे जे वस्तु होय ते मूल्य चूकवीने भंडारमां मूकावी दो।" भद्रा माताअे हसतां हसतां कह्युं, "बेटा! श्रेणिक तो आपणा स्वामी छे, नाथ छे, खरीद-वेचाण करवानी वस्तु नथी, आपणे तेनी प्रजा छीअे, ते आपणी रक्षा करे छे, तेमने आदर देवो ते आपणुं कर्त्तव्य छे।" मातानी आ वात जाणीने शालिभद्र विचारमां पडी गया के 'मारा माथे पण स्वामी छे? मारा माथे नाथ छे? हुं संपूर्ण स्वतंत्र अने सुरक्षित नथी?' आम विचारतां ते राजा पासे आव्यो। तेमने प्रणाम कर्या। परन्तु हवे तेमनुं मन संसारथी विरक्त, उदास थई गयुं हतुं। हवे तेओ पण पिताना रस्ते चालीने स्वतंत्रता प्राप्त करवा ईच्छता हता।

सद्भाग्ये अेक दिवस तेमना नगरमां चार ज्ञानना धारक आचार्य **धर्मघोष मुनि** पधार्या। तेमनी वैराग्य वाणी सांभळीने शालिभद्र आनंदित थई गया। तेमनो वैराग्य कूदका मारवा लाग्यो।

घरे आवीने तेमणे माताने कह्युं, "माता! आजे में निर्ग्रंथ गुरु पासे धर्म उपदेश सुण्यो छे, धर्म संसारनां सर्व दु:खोथी मुक्त करावनार छे, मने ते धर्म प्रत्ये रुचि अने श्रद्धा थई छे, तेथी हुं पण मारा पिताना पंथे चालीने दीक्षा लेवा मांगुं छुं।"

माता भद्राअे तेने संयमनां कष्टोनुं वर्णन करतां कह्युं, "बेटा! तारो विचार तो उत्तम छे पण तारो उछेर तो खूब भोग-विलास अने पुण्यमां थयो छे, तो तुं संयमनां कष्टोने सहन नहि करी शके! लोखंडना चणा चाववा, तलवारनी धार पर चालवुं, महासागरने हाथेथी तरीने पार करवो जेम कठण छे, तेम संयम पाळवो पण कठण छे। ताराथी संयमनी विशुद्ध साधना केवी रीते थशे?" शालिभद्रे शांत चित्ते कह्युं, "माता! जेणे साधना अने संयमनो दृढ निर्णय करी लीधो छे, तेणे दु:खो अने परिषहोने आमंत्रण आपी दीधुं छे। कायर होय छे ते ज दु:खथी डरे छे। हुं सर्व कष्टो अने परिषहोने सहन करीश माटे आप आज्ञा आपो।" माताअे कह्युं, "बेटा! तुं दीक्षा लेवा ईच्छे छे तो पहेलां थोडोक त्यागी बन। पछी सर्वत्यागी बनजे!" मातानी वात स्वीकारी शालिभद्र रोज अेक अेक पत्नीनो त्याग करवा लाग्या।

आ समाचार शालिभद्रनी बहेन सुभद्राने मळतां ते अत्यंत दु:खी थई गई अने पोताना पति धन्नाने स्नान करावतां आंखमांथी आंसुनी धार वहेवा लागी। कारण जाणतां धन्नाअे कह्युं, "त्याग करवो होय तो सिंहनी जेम अेकसाथे छोडवुं जोईअे। आ तो कायरता कहेवाय।"

पतिनो व्यंग सांभळी अने पत्नी बोली, "जो त्यागी बनवुं सरळ छे तो तमे ज केम सर्वस्व त्यागी दीक्षा नथी लेता?" बस, धन्नाजी तरत ज ऊठ्या अने कह्युं, "में अत्यारे ज तमने बधांने त्यागी

दीधां। हुं दीक्षा लेवा जाउं छुं।" पतिने जतां जोई पत्नीओ पण दीक्षा लेवा तैयार थई गई अने बधांअे अेकसाथे भगवान पासे आवी दीक्षा लीधी। ज्यारे शालिभद्रने आ समाचार मळ्या तो तेओ पण तुरंत दीक्षा लेवा तैयार थई गया।

अंते सुंदर संयम पालन करी आयुष्य पूर्ण करी तेओ बन्ने सर्वार्थसिद्ध महाविमानमां देव तरीके उत्पन्न थया। त्यांथी पाछो मनुष्य भव प्राप्त करी, दीक्षा लई, साधना करी मोक्ष जशे।

धन्य हो धन्ना अने शालिभद्रना त्यागी तपोमय जीवनने!

अपेक्षित प्रश्नो

(१) संगम कोण हतो? (२) संतने जोई संगमे शुं विचार्युं? (३) संगम मरीने शुं बन्यो? (४) 'शालिभद्र' नाम शाथी पड्युं? (५) रत्नकंबल कोणे, केटला खरीद्या?कोणे न खरीद्या? (६) श्रेणिकनुं नाम सांभळी शालिभद्रअे शुं विचार्युं? (७) धन्नाजी केम दीक्षा लेवा नीकळ्या? (८) तेओ बंने मृत्यु पामीने क्यां गया?

कथा : 4 धर्मरुचि अणगार

चंपा नामनी सुंदर नगरी हती। ते नगरमां **त्रण ब्राह्मण** भाईओ रहेता हता। तेमना नाम हता **सोम, सोमदत्त अने सोमभूति**। तेओ खूब पैसादार, चार वेदना जाणनारा तथा अन्य कर्मोमां पण कुशल हता, ते त्रण भाईओनी पत्नीओनां नाम अनुक्रमथी **नागश्री, भूतश्री अने यशश्री** हतां। ते त्रणे खूब आनंद अने संपथी रहेती हती।

अेक दिवस त्रणे भाईओअे नक्की कर्युं के 'त्रणे भाईओना घरे वाराफरती भोजन बनावीने बधांअे साथे बेसीने जमवुं।' अेकवार नागश्रीनो जमाडवानो वारो हतो तेणे घणां बधां प्रकारनां पकवानो बनाव्यां। 'बधां भाईओनी पत्नीओ करतां पोतानी रसोई सारी छे' तेवुं बतावानी तेने घणी होंश हती।

तेणे रसोईमां ऋतुने अनुरूप अेवुं तुंबडीनुं शाक बनाव्युं हतुं। रसोई बनाववानी उतावळमां ते तुंबडुं चाखवानुं भूली गई हती। शाक तैयार थई गया पछी तेणे ते शाकनुं अेक टीपुं हाथमां लईने चाख्युं तो कडवुं, न खावा जेवुं अने झेर जेवुं लाग्युं।

'हवे शुं करवुं?हमणां ज बधां आवशे अने शाक जोशे तो मारी मश्करी करशे। मारे आ शाकनो निकाल करी अने बीजुं शाक बनावी लेवुं जोईअे।' आवो विचार करीने ते पोताना काममां व्यस्त थई गई।

धर्मघोष नामे आचार्य ते चंपा नगरीमां तेमनां शिष्य समुदाय साथे पधार्या हता। तेमना **धर्मरुचि** नामना अेक उग्र तपस्वी शिष्य हता। तेओ **मासक्षमणना पारणे मासक्षमणनी** अति कठोर तपश्चर्या करता हता।

आजे धर्मरूचिना मासक्षमण तपमां पारणानो दिवस हतो। तेथी तेओ पोताना गुरुनी आज्ञा लईने चंपा नगरीमां गौचरी लेवा माटे अेक घरेथी बीजा घरे फरता फरता नागश्री ब्राह्मणीने घरे पहोंची गया। धर्मरुचि अणगारने पोताना आंगणे आवेला जोईने नागश्रीने छूपा आनंदनी लागणी थई। पोतानी भूल छूपाववा तेणे 'आ मुनिनुं शुं थशे?' तेवुं विचार्या विना, तुंबडीनुं बधुं शाक ते मुनिना पात्रामां वहोरावी दीधुं। 'आटलो आहार मने पूरतो छे' तेवुं विचारीने धर्मरुचि अणगार पोताना स्थाने पाछा आवी गया।

धर्मरुचिअे वहोरीने लावेल शाक गुरुदेव धर्मघोष मुनिने बताव्युं। गुरुअे शाकनी गंध पारखी अने अेक टीपुं चाखीने ते शाक कडवुं, झेरी अने न खावा जेवुं जाणी धर्मरुचि अणगारने आज्ञा करतां कह्युं, "जो तमे आ शाक खाशो तो जरूरथी मृत्यु पामशो। माटे हे मुनिराज! तमे आ शाकने अचेत भूमि पर जतनापूर्वक (जोईने) परठी दो अने बीजो निर्दोष आहार लावीने वापरो।"

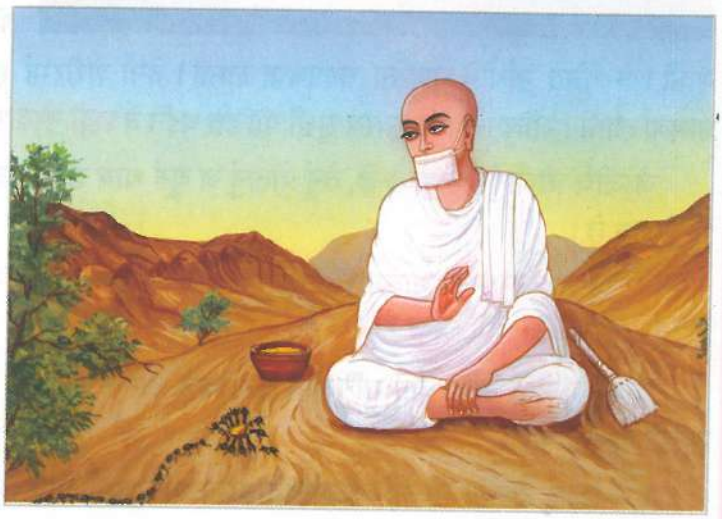

गुरु आज्ञा थतां ज धर्मरुचि अणगारे दूर जईने निर्दोष भूमि जोईने अेक टीपुं शाक जमीन पर मूक्युं। शाक भारे गंधातुं होवाथी तरत ज त्यां हजारो कीडीओ उभरावा लागी। ते कीडीओअे जेवुं ते शाक खाधुं के तरत ज घणी बधी कीडी मरणने शरण थई। धर्मरुचि अणगार आ दृश्य जोईने कंपी ऊठ्या। तेमणे विचार्युं, 'जो शाकना अेक टीपामां हजारो कीडी मरी गई, तो हुं बधुं शाक परठी दउं तो घणी ज हिंसा थशे। घोर हिंसानुं केटलुं मोटुं पाप मारा शिरे आवे!' जैन मुनिओ तो दयाळु होय छे, बीजाना दोष तरफ दृष्टि पण नांखता नथी अने अहिंसाना पालन माटे प्राण देतां पण अचकातां नथी। तेवी ज रीते धर्मरुचि अणगारे पण नागश्रीनो मनथी पण वांक काढ्यो नहि अने विचार कर्यो के 'ज्यां अेक पण कीडीनुं मृत्यु न थाय तेवुं निरवद्य स्थान तो मारुं पेट ज छे। माटे आ बधुं शाक हुं खाई जाउं के जेथी आवा अनेक जीवो बची जाय।' आवुं विचारीने तेओ बधुं शाक खाई गया।

कडवा अने झेरी शाकना प्रभावे तेमना शरीरमां वेदना उत्पन्न थई। ते वेदना कर्कश अने न सहेवाय तेवी हती, छतां तेओ समभावे सहन करता रह्या। तेओअे जीवन पर्यंतनां पापोनी आलोचना, प्रतिक्रमण करी अने समाधिपूर्वक काळधर्म (मृत्यु) पाम्या। धर्मरुचिनो आत्मा सर्वार्थसिद्ध विमानमां देव रूपे उत्पन्न थयो।

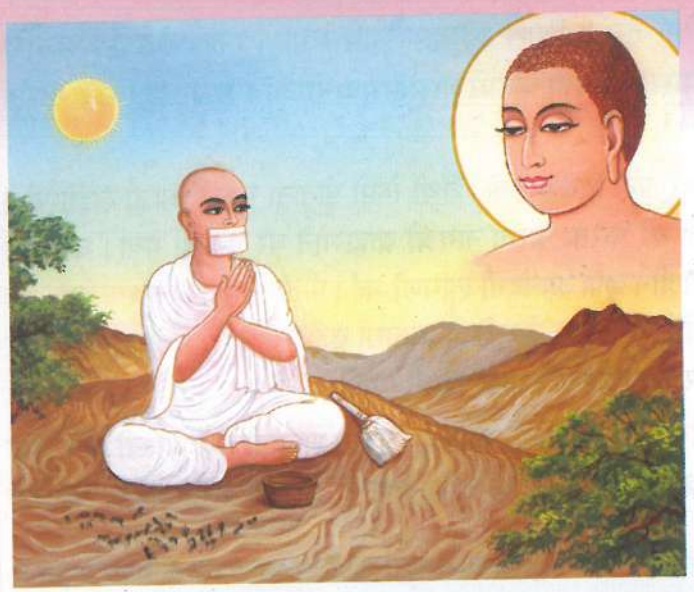

धर्मरुचिने आवतां मोडुं थतां तेमना गुरुओ पोताना शिष्योने तेमनी शोध करवा मोकल्यां। तपास करता करता शिष्योने धर्मरुचि काळधर्म प्राप्त थयानी जाण थई। तेओओ आ समाचार पोताना गुरुने आप्या। गुरुओ पोताना ज्ञान द्वारा आ कृत्य नागश्रीनुं छे तेवुं जाण्युं।

लोकोने आ वातनी धीमे धीमे खबर पडी गई अने लोको नागश्रीने धिक्कारवा लाग्या। पोतानी भूल छूपाववा जतां तेनी आबरुना कांकरा थया। त्रणे भाईओओ भेगा थईने तेने घरमांथी बहार काढी मूकी। ते भीख मांगीने गुजरान चलाववा लागी। तेना शरीरमां १६ रोगो उत्पन्न थया, तेथी ते खूब पीडा पामवा लागी। जीवनना अंत समय सुधी पीडित थईने ते छट्ठी नरकमां उत्पन्न थई।

जे जीव बीजानुं बूरुं इच्छे छे, तेनुं पोतानुं ज बूरुं थाय छे। जे जीव बीजानुं भलुं ईच्छे छे, तेनुं पोतानुं पण भलुं थाय छे।

धर्मरुचि अणगारनो आत्मा सर्वार्थसिद्ध देवलोकथी च्यवीने महाविदेह क्षेत्रमां जईने सर्व कर्म खपावी सिद्ध (मोक्ष) थई गयो।

धन्य छे अेवा उत्तम जैन मुनिओने के जेमणे अनेक जीवोनी रक्षा माटे पोताना प्राण अर्पण करी मोक्ष सुखने पामी गया!

(धर्मरुचि अणगारनो अधिकार ज्ञाताधर्मकथा सूत्रमां आवे छे।)

अपेक्षित प्रश्नो

(१) नागश्रीअे कयुं खराब काम कर्युं? (२) धर्मरुचि अणगार कया कारणोसर जैन धर्मना इतिहासमां अमर थई गया? (३) धर्मरुचि अणगारनो अधिकार कया सूत्रमां आवे छे? (४) धर्मरुचि अणगारना गुरुनुं नाम शुं हतुं? (५) नागश्री मरीने क्यां गई? (६) धर्मरुचि अणगारे शुं विचार कर्यो? (७) नागश्रीअे शा माटे धर्मरुचिने बधुं शाक वहोरावी दीधुं? (८) शाक परठी आववानुं कोणे कोने कह्युं? (९) चंपा नगरीमां केटला ब्राह्मण भाईओ रहेता हता? तेमनां तथा तेमनी पत्नीनां शुं नाम हतां? (१०) धर्मरुचिनो आत्मा अत्यारे क्यां छे?

काव्य विभाग

१. रत्नाकर पच्चीसी (१३ थी २५ कडी)

आवेल दृष्टि मार्गमां मूकी महावीर! आपने,
में मूढधीअे हृदयमां ध्याया मदनना चापने।
नेत्र बाणो ने पयोधर नाभि ने सुंदर कटि,
शणगार सुंदरीओ तणां छटकेल थई जोया अति...१३

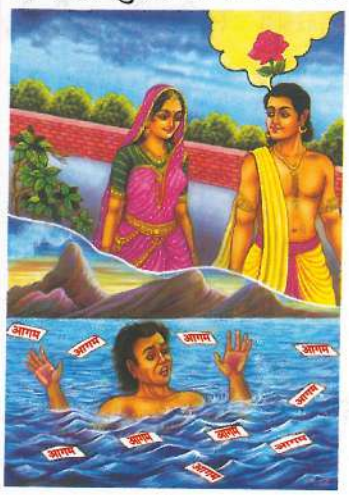

मृगनयणी सम नारी तणा मुखचंद्र निरखवावती,
मुज मन विशे जे रंग लाग्यो अल्प पण गूढो अति।
ते श्रुतरूप समुद्रमां धोयां छतां जातो नथी,
तेनुं कहो कारण तमे बचुं केम हुं आ पापथी...१४

सुंदर नथी आ शरीर के समुदाय गुण तणो नथी,
उत्तम विलास कळा तणो देदीप्यमान प्रभा नथी।
प्रभुता नथी तो पण प्रभु अभिमानथी अक्कड फरुं,
चोपाट चार गति तणा संसारमां खेल्या करुं...१५

आयुष्य घटतुं जाय तो पण पाप बुद्धि नव घटे,
आशा जीवननी जाय पण विषयाभिलाषा नव मटे।
औषध विशे करुं यत्न तो पण धर्मने हुं नव गणुं,
बनी मोहमां मस्तान हुं पाया विनाना घर चणुं...१६

आत्मा नथी परभव नथी वळी पुण्य पाप कशुं नथी,
मिथ्यात्वनी कटु वाणी में धरी कान पीधी स्वादथी।
रवि सम हता ज्ञाने करी प्रभु आपश्री तो पण अरे!
दीवो लई कूवे पड्यो धिक्कार छे मुजने खरे!...१७

में चित्तथी नहि देवनी के पात्रनी पूजा चही,
ने श्रावको के साधुओनो धर्म पण पाळ्यो नहि।
पाम्यो प्रभु नरभव छतां रणमां रड्या जेवुं थयुं,
धोबी तणां कुत्ता समुं मम जीवन सहु अेळे गयुं...१८

हुं कामधेनु कल्पतरु चिंतामणिना प्यारमां,
खोटां छतां झंख्यो घणुं बनी लुब्ध आ संसारमां।
जे प्रगट सुख देनार तारो धर्म पण सेव्यो नहि,
मुज मूर्ख भावोने निहाळी नाथ कर करुणा कंई...१९

में भोग सारा चिंतव्या पण रोग सम चिंतव्या नहि,
आगमन ईच्छ्युं धन तणुं पण मृत्यु ने प्रीछ्युं नहि।
नहि चिंतव्युं में नर्क काराग्रह समी छे नारीओ,
मधुबिंदुनी आशा महीं भय मात्र हुं भूली गयो...२०

हुं शुद्ध आचारो वडे साधु हृदयमां नव रह्यो,
करी काम पर उपकारना यश पण उपार्जन नव कर्या।
वळी तीर्थना उद्धार आदि कोई कार्यो नव कर्यां,
फोगट अरे! आ लक्ष चोराशी तणां फेरा फर्या...२१

गुरु वाणीमां वैराग्य केरो रंग लाग्यो नहि अने,
दुर्जन तणां वाक्यो महीं शांति मळे कयांथी मने?
तरुं केम हुं संसार आ अध्यात्म तो छे नहि जरी,
तूटेल तळियानो घडो जळथी भराये केम करी?...२२

में परभवे नथी पुण्य कीधुं ने नथी करतो हजी,
तो आवता भवमां कहो क्यांथी थशे हे नाथजी?
भूत भावि ने सांप्रत त्रणे भव नाथ हुं हारी गयो,
स्वामी त्रिशंकु जेम हुं आकाशमां लटकी रह्यो...२३

अथवा नकामुं आप पासे नाथ शुं बकवुं घणुं?
हे देवताना पूज्य! आ चारित्र मुज पोतातणुं।
जाणो स्वरूप त्रण लोकनुं त्यां मारुं तो शुं मात्र आ?
ज्यां क्रोडनो हिसाब नहि त्यां पाईनी तो वात क्यां?...२४

(शार्दूलविक्रीडित छंद)

ताराथी न समर्थ अन्य दिननो उद्धारनारो प्रभु,
माराथी नहि अन्य पात्र जगमां जोतां जडे हे विभु!
मुक्ति मंगल स्थान तो य मुजने ईच्छा न लक्ष्मी तणी,
आपो सम्यग्रत्न श्याम जीवने तो तृप्ति थाये घणी...२५

साधु वंदना (कडी १ थी १५)

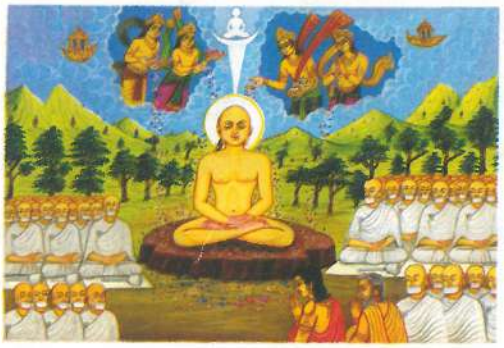

नमुं अनंत चोवीसी, ऋषभादिक महावीर,
जेणे आर्यक्षेत्रमां घाली धर्मनी शीर...१

महा अतुल्य बळी नर, शूर वीर ने धीर,
तीर्थ प्रवर्तावी, पहोंच्या भव जळ तीर...२

सीमंधर प्रमुख, जघन्य तीर्थंकर वीस,
छे अढी द्वीपमां, जयवंता जगदीश...३

अेकसोने सित्तेर, उत्कृष्ट पदे जगीश,
धन्य मोटा प्रभुजी, तेमने नमावुं शीश...४

केवळी दोय क्रोडी, उत्कृष्टा नव क्रोड,
मुनि दोय सहस्र क्रोडी, उत्कृष्ट नव सहस्त्र क्रोड...५

विचरे विदेहे, मोटा तपस्वी घोर,
भावे करी वंदुं, टाळे भवनी खोड...६

चोवीसे जिनना, सघळा अे गणधर,
चौदसो ने बावन, ते प्रणमुं सुखकार...७

जिन शासन नायक, धन्य श्री वीर जिणंद,
गौतमादिक गणधरे, वर्ताव्यो आनंद...८

श्री ऋषभ देवना, भरतादिक सो पुत्र,
वैराग्य मन आणी, संयम लियो अद्‌भुत...९

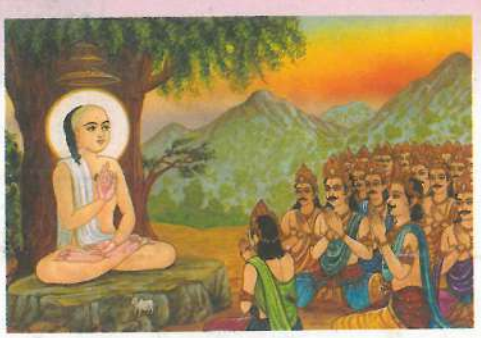

केवल उपार्ज्युं, करी करणी करतूत,
जिनमत दीपावी, सघळा मोक्ष पहुंत...१०

श्री भरतेश्वरना, हुआ पटोधर आठ,
आदित्य जशादिक, पहोंच्या शिवपुर वाट...११

श्री जिन अंतरना, हुआ पाट असंख्य,
मुनि मुक्ते पहोंच्या, टाळी कर्मनो वंक...१२

धन्य 'कपिल' मुनिवर, नमुं 'नमि' अणगार,
जेणे तत्क्षण त्याग्यो, सहस्त्र रमणी परिवार...१३

मुनिवर हरिकेशी, 'चित्त' मुनीश्वर सार,
शुद्ध संयम पाळी, पाम्या भवनो पार...१४

वळी 'इषुकार' राजा, घेर 'कमळावती' नार,
'भृगु' ने 'यशा', तेमना दोय कुमार...१५

(साधु वंदना अपूर्ण...)

।।श्रेणी ४ अभ्यासक्रम समाप्त।।

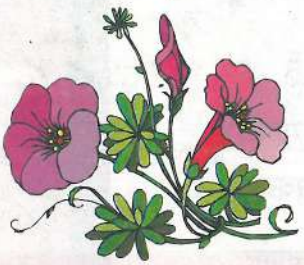

नव तत्त्व बोध : सागर अने होडीनुं दृष्टांत

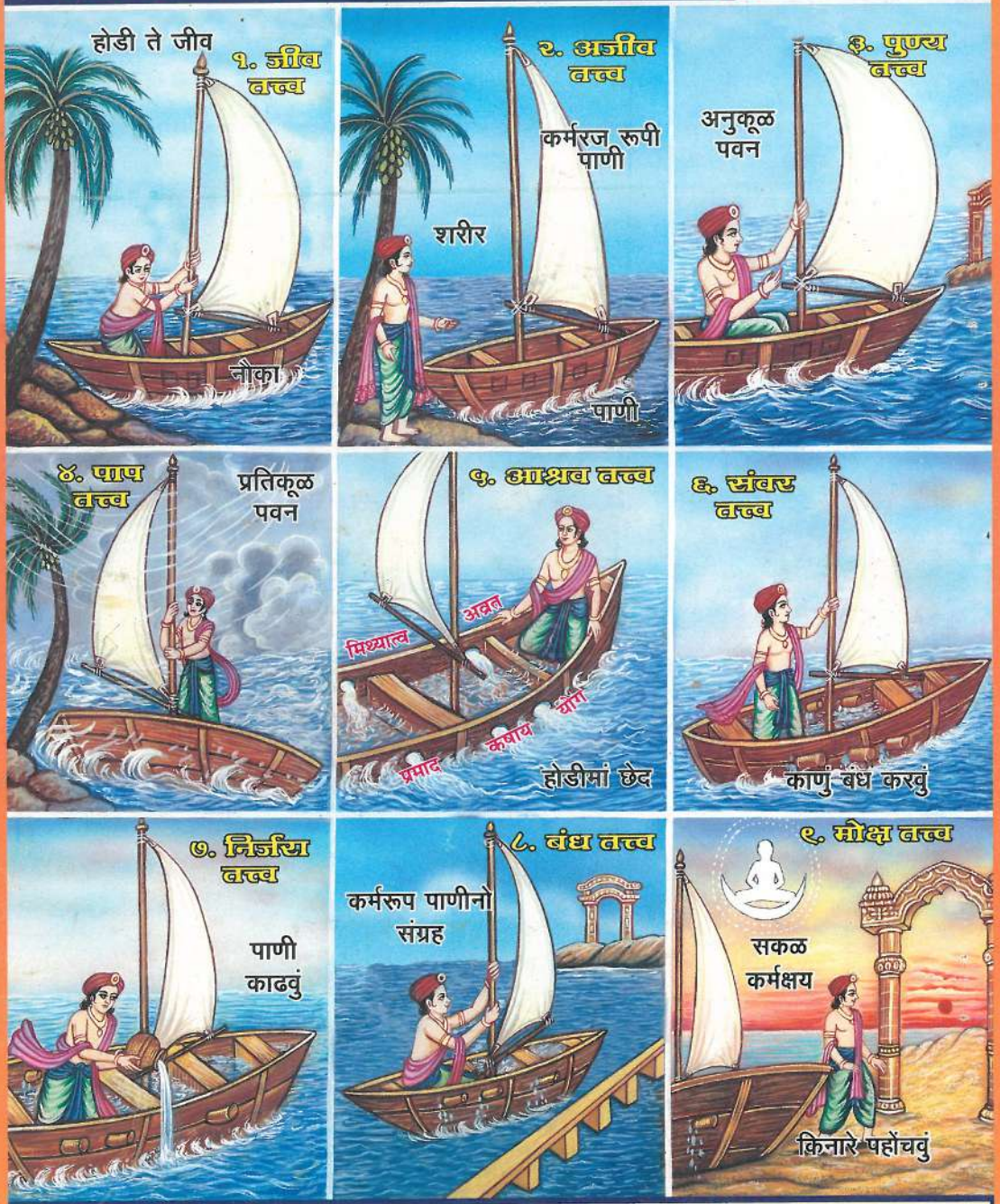

तत्त्व अेटले वस्तुनुं साचुं स्वरूप, जेनुं सदाकाळ होवापणुं छे ते तत्त्व

१. जीव—ज्ञान-दर्शन युक्त आत्मा तेना भेद—५६३, २. अजीव—जड लक्षण, चैतन्य रहित, ३. पुण्य—शुभ करणीथी, शुभ कर्मनां उदयथी सुखनो अनुभव थाय ते, ४. पाप—अशुभ करणीथी, अशुभ कर्मनां उदयथी दुःखनो अनुभव थाय ते, ५. आश्रव—हिंसा आदिथी नवां कर्मनी आवक थाय ते, ६. संवर—व्रत पच्चक्खाण द्वारा कर्मने आवतां रोकवा ते, ७. निर्जरा—बार प्रकारनां तपथी पूर्वे करेलां कर्मोनो क्षय करवो, ८. बंध—आत्म प्रदेशो साथे कर्मनुं बंधावुं, ९. मोक्ष—आत्म प्रदेशथी सर्वथा कर्मोनो क्षय थवो।

पू. साधु-साध्वीजी पासे जईश त्यारे पांच अभिगम साचवीश।

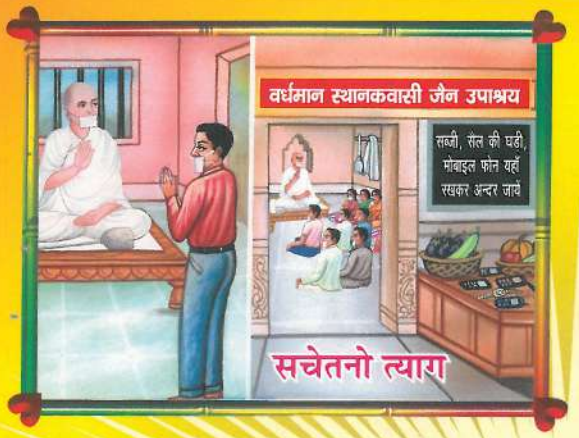

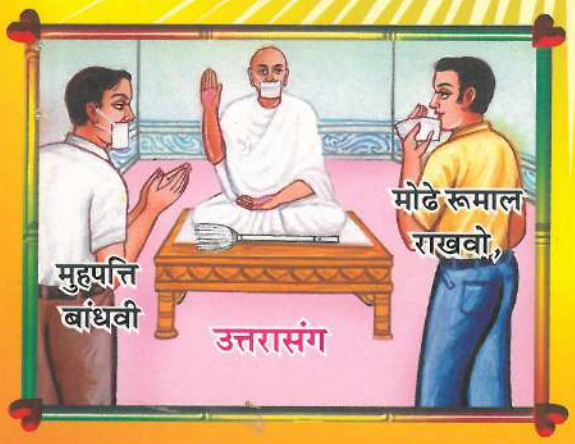

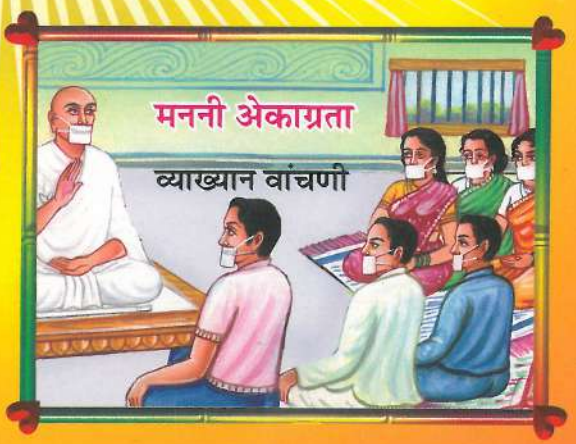

Design & Printed by : Shree Diwakar Prakashan, Agra. Ph. 0562-2851165, 9319203291